INTERNATIONAL MAGAZINE
64884/96

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीअै एकु एकु वखाणीअै ।।
आतम पसारा करण हारा प्रभ बिनां नहीं जाणीअै ।।

आत्म मार्ग

November 2018

सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंधु जग चानणु होआ ।।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ ।।
सिंघ बुके मिरगावली भंनी जाइ न धीरि धरोआ ।।
जिथै बाबा पैर धरि पूजा आसणु थापणि सोआ ।।
सिध आसणि सभि जगत दे नानक आदि मते जे कोआ ।।
घरि घरि अंदरि धरमसाल होवै कीरतनु सदा विसोआ ।।
बाबे तारे चारि चकि नउ खंडि प्रिथमी सचा ढोआ ।।
गुरमखि कलि विच परगटु होआ ।।

कार्यक्रम

30-31 अक्टूबर तथा 1 नवम्बर

नाम सिमरन	ब्रह्ममुहुर्त 3.00 बजे से 3.45 बजे तक
नित्तनेम	3.45 से 4.30 प्रात:
आसा दी वार	4.30 से 6.00 प्रात:
गुरु शब्द विचार (बाबा लखबीर सिंह जी)	6.00 से 7.00 प्रात:
कथा कीर्तन तथा गुरमति विचारें	प्रात: 9.00 बजे से सायं 3.30 बजे तक
रात्रि का समागम	5.30 सायं से 10.00 बजे तक
रहिरास अरदास तथा हुक्मनामा	5.30 से 6.15 सायं
कथा कीर्तन तथा गुरमति विचारें	6.15 से 10.00 बजे रात्रि तक

30 अक्टूबर (मंगलवार)

विषय: ★ समस्त शहीदों की शहादत को प्रमाण।
★ सिक्ख धर्म में शहादत का संकल्प।

1 नवम्बर (वृहस्पतिवार)

★ रतवाड़ा साहिब वाले महापुरुषों की जीवन संगिनी सम्माननीया माता रणजीत कौर जी के जीवन से सम्बन्धित विचार।

★ सिक्ख इतिहास में महिलाओं द्वारा सेवा, सिमरन, परोपकार तथा कुर्बानियाँ।

★ गुरमति के प्रकाश में 'भ्रूण हत्या एक घिनौना पाप' विषय पर विचार।

★ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।' के सिद्धान्त की विचार।

लाईव टैलीकास्ट
Apps: Ratwara Sahib Ji, Ratwara Sahib TV
Websites : www.ratwarasahib.in, www. ratwarasahib.org
You Tube : www.youtube.com/babalakhbirsingh
Facebook : www.facebook.com/ratwarasahib1

31 अक्टूबर (बुद्धवार)

★ श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी रतवाड़ा साहिब वालों की पावन स्मृति, उनके द्वारा सामाजिक, साहित्यिक व शैक्षणिक क्षेत्र में किए गए योगदान। महापुरुषों द्वारा किए गए परोपकार।

★ पाँचों प्यारों के मुखी भाई साहिब भाई दया सिंह जी से लेकर सम्प्रदाय के समस्त महापुरुषों की याद।

★ सम्प्रदाय द्वारा देश, कौम तथा धर्म के लिए की गई कुर्बानियाँ।

आँखों के नि:शुल्क आप्रेशन 27 से 31 अक्टूबर

नि:शुल्क कैंसर चैकअप शिविर 30 व 31 अक्टूबर

2 नवम्बर (शुक्रवार)

श्री गुरू नानक देव जी के 550 वर्षीय प्रकाश पर्व को समर्पित तथा साहिब श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के गुरुगद्दी दिवस

नाम सिमरन (ब्रह्ममुहुर्त)	3.00 से 3.45
नित्तनेम	3.45 से 4.30
आसा दी वार	4.30 से 6.00
गुरु शब्द विचार (बाबा लखबीर सिंह जी)	6.00 से 7.00 प्रात:
कथा कीर्तन तथा गुरमति विचारें	7.00 बजे प्रात: से 3.30 सायं

* श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में विश्व बन्धुत्व की भावना
* श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में नाम तथा सेवा का संकल्प
* गुरू मानिओ ग्रन्थ
* 'नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला' सिद्धान्त की विचार
* विश्व शान्ति के केन्द्र - श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी महाराज

सारे कार्यक्रम की सम्पूर्णता की अरदास तथा हुक्मनामा

अमृत संचार 1-2 नवम्बर प्रात: 10.00 बजे

गुरू के लंगर निरन्तर जारी रहेंगे।

आत्म मार्ग

वर्ष तेइसवां - अंक दसवां, नवम्बर 2018

गुरद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब

संचालक

श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी महाराज (ब्रह्मलीन)
तथा संत माता (बीजी) रणजीत कौर जी (ब्रह्मलीन)

चेयरमैन
सन्त बाबा लखबीर सिंह जी

एडिटर-इन-चीफ
सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

प्रबन्ध सम्पादक
भाई (डा.) सुखविंदर सिंह

मुख्य सम्पादक
डा. जगजीत सिंह (97798 16909)

मासिक पत्रिका न पहुँचने सम्बन्धी पूछताछ

यदि आपको माह की 15 तारीख तक आत्म मार्ग पत्रिका प्राप्त नहीं हो पाती है तो आप कृप्या निम्नलिखित सम्पर्क नम्बरों पर कार्यलय समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक सम्पर्क करने की कृपा करें -

सम्पर्क न. - **84378-12900, 94172-14391, 94172-14379**

Email : atammarg1@yahoo.co.in

Postal Address for any Enquiry, Money Order's :

'ATAM MARG' MAGAZINE
Gurdwara Ishar Parkash, Ratwara Sahib (New Chandigarh) P.O. Mullanpur Garibdas, Teh. Kharar, Distt. S.A.S. Nagar (MOHALI) - 140901, Pb. India

SUBSCRIPTION - शुल्क (देश)

वार्षिक	आजीवन सदस्यता	प्रति कापी
300/-	3000/-	30/-
320/-	3020/-	(For outstation cheques)

SUBSCRIPTION FOREIGN (विदेश)

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 £
Canada	80 Can $	800 Can $
Australia	80 Aus $	800 Aus $

प्रकाशन के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सन्त बाबा हरपाल सिंह जी ने 'आत्म मार्ग' जै आफ सैट प्रिंटर्ज, 905 इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, चण्डीगढ़ से छपवा कर मुख्य कार्यालय 'आत्म मार्ग' रतवाड़ा साहिब, डाकखाना मुल्लांपुर, तहसील खरड़, एस.ए.एस. नगर (मोहाली), पंजाब से प्रकाशित किया।

Please visit us on internet at :-
For Atam Marg Email : atammarg1@yahoo.co.in,
Website & Live video -

www.ratwarasahib.in
www.ratwarasahib.org } **(Every sunday)**

Email: sratwarasahib.in@gmail.com

विदेशों में आत्म मार्ग की शाखाएँ

अमेरिका - बाबा सतनाम सिंह अटवाल
फोन तथा फैक्स : 001-408-263-1844

कैनेडा - भाई सरमुख सिंह पंनू, वैनकूवर
फोन : 001-604-433-0408

भाई तरसेम सिंह बैंस - मोबाइल 001-604-862-9525
फोन : 001-604-288-5000

भाई जसबीर सिंह राणू - फोन : 001-604-589-9189

इंगलैंड - बीबी गुरबख्श कौर तथा भाई जगतार सिंह जग्गी
फोन:0044-121-200-2818 फैक्स :0044-121-200-2879,

भाई अरविंदर सिंह (राज) मोबाइल:0044-7968734058

आस्ट्रेलिया : बीबी जस्प्रीत कौर: मोबाइल-0061-406619858

रतवाड़ा साहिब की संस्थाओं के सम्पर्क नम्बर

* आत्म मार्ग मैगज़ीन (पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी)
9417214391, 9417214379, 8437812900

* गुरू गोबिंद सिंह विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(CBSE) - 0160-2255003

* माता साहिब कौर मुफ्त सिलाई सैंटर - **96461-01996**

* सन्त वरियाम सिंह मैमोरियल पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(PSEB) अंग्रेजी माध्यम - **95920-55581**

* सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल (मुफ्त)
98786-95178, 92176-93845

* इंटरनैशनल डिवाइन स्कूल आफ़ नर्सिंग -
94172-14382

* इंटरनैशनल डिवाइन कालेज आफ़ ऐजूकेशन (बी. एड.)
94172-14382

* अकाल वृद्ध आश्रम (मुफ्त) **98157-28220**

विशेष जानकारी के लिए

श्री मान जी	-	98551-32009
श्री आखण्ड पाठ साहिब बुकिंग	-	94647-12900
आडियो-वीडियो लाईब्रेरी	-	98728-14385, 98555-28517
केवल टी.वी. नेटवर्क	-	94172-14385

अन्य सम्पर्क नम्बर
98889-10777, 96461-01996, 9417214381

विषय-सूची

1. सम्पादकीय 5
   भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

2. बारहमाहा 8
   डा. जगजीत सिंह

3. प्यारे की लालसा - गुरू नानक देव जी तथा राए बुलार 12
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

4. बाबाणियाँ कहानियाँ 22
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

5. श्री गुरू तेग बहादुर जी 26
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

6. प्यार भरा सुगन्धित जीवन 34
   (प्यारे महापुरुषों का मधुर स्मृति को समर्पित)
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

7. आत्म ज्ञान 40
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

8. गुरु नानक आगमन 43
   डा. भाई वीर सिंह जी

9. गुरबाणी अर्थ भण्डार 46
   सन्त हरी सिंह जी 'रन्धावे वाले'

10. स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार 48
    डा. स्वामी राम जी

11. विशेष जानकारी - बैंक खाता, आत्म मार्ग मैगजीन सदस्यता प्रारूप, अस्पताल जानकारी, तथा पुस्तक सूची 50

12. समागम के लिए सवारियों के रूट 54

सम्पादकीय

(डा.) भाई सुखविन्दर सिंह

नामु रहिओ साधू रहिओ
रहिओ गुरु गोबिंदु ॥
कहु नानक इह जगत मै
किन जपिओ गुर मंतु ॥ ***अंग - 1429***

रूहानियत का मार्ग स्थूल से सूक्ष्म की तरफ बढ़ने का मार्ग है। सुरति शब्द का मार्ग है। दृश्यमान संसार में जो कुछ भी दिखाई पड़ता है, वह पदार्थ का बना हूआ है। पदार्थ के आगे तीन और रूप हैं और ये तीन रूप हैं - ठोस, तरल और गैस। विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि पदार्थ के टूटने से इसके तीन हिस्से बन जाते हैं और ये तीन हिस्से हैं - प्रोटोन, न्यूट्रोन तथा इलैक्ट्रोन। तीनों लहरों का पदार्थ के अन्दर वेग है और उनमें भी कोई अदृश्य शक्ति कार्य कर रही है लेकिन जो कुछ भी है प्रत्येक चीज या वस्तु का कोई न कोई आकार तथा नाम है जिस भी चीज का नाम व आकार है गुरवाणी के अनुसार उसने एक दिन नष्ट हो जाना ही है यानि कि उसका अन्त स्वाभाविक व निश्चित है -

जो उपजिओ सो बिनसि है
परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले
छाडि सगल जंजाल ॥ ***अंग - 1429***

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि प्रत्येक वस्तु, जो भी उत्पन्न हुई है, अस्तित्व में आई है, उसने एक दिन समाप्त हो जाना है, भावार्थ नष्ट हो जाना है तो फिर क्या कोई चीज ऐसी भी है जो कि अमर हो और शाश्वत रहे? गुरवाणी के पावन प्रकाश में हमें इस प्रश्न का जवाब मिल जाता है।

यदि विचार करके देखा जाए तो दुनिया की प्रत्येक चीज तीन रूपों में सामने आती है - स्थूल, सूक्ष्म तथा अतिसूक्ष्म। मनुष्य शरीर भी तीन रूपों की ही बनावट है - स्थूल, सूक्ष्म व कारण शरीर। स्थूल शरीर की भी आगे तीनों अवस्थाएँ भावार्थ पड़ाव हैं -

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि
तीनि अवसथा जानि॥
कहु नानक हरि भजन बिनु
बिरथा सभ ही मानु ॥ ***अंग - 1428***

अब इस मनुष्य शरीर की सफलता कैसे हो? इस शरीर को धारण करने का प्रयोजन कैसे हल हो? इसके आगे चार दर्जे हैं - कर्म, उपासना, ज्ञान तथा विज्ञान। चारों दर्जे भी स्थूल, सूक्ष्म तथा अति सूक्ष्म के सिद्धान्त के साथ जुड़े हुए हैं। पहले कर्म, स्थूल शरीर के कारण सेवा रूप में किए जाते हैं, जिन्हें हम निर्मल कर्म कहते हैं। सेवा के तौर पर जिज्ञासुजन करते हैं यही स्थूल कर्म, शरीर से आगे आन्तरिक मन, चित्त व बुद्धि के तौर पर किए जाते हैं जो कि सूक्ष्म रूप धारण कर जाते हैं क्योंकि मन, चित्त व बुद्धि के तौर पर प्रत्येक समय प्रत्येक प्राणी कर्म कर रहा है, जिनके बारे में गुरवाणी के अन्दर फुरमान है कि -

अैसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईअै ॥
अंग - 918

जिन्ी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवही साँई दै दरबारि ॥ अंग - 1381

यही वृत्ति जब साधी जाती है तो 'निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे।।' (अंग - 774) में बदल जाती है फिर प्रेम व प्रेम मिश्रित भय वाली स्थिति बन जाती है। कर्म के बाद रूहानियत का अगला पड़ाव है - उपासना। यदि कर्म को स्थूल में देखा जाए तो उपासना सूक्ष्म है। उपासना बाहरी भी है और आन्तरिक भी है लेकिन कर्म की अपेक्षा यह सूक्ष्म है इसके आगे अवस्था है ज्ञान व विज्ञान की। ज्ञान का नाम है - प्रकाश। प्रकाश के बाद है - साक्षात और यह अति सूक्ष्म है।

गिआन अंजनु गुरि दीआ
अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु ॥ ***अंग - 293***

प्रकाश, मन के अन्दर होना है, गुरू के ज्ञान ने अन्दर प्रकट होना है और फिर घटित क्या होना है?

गुरहि दिखाइओ लोइना ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
ईतहि उतहि घटि घटि घटि घटि
तूंही तूंही मोहिना ॥ ***अंग - 407***

मैं व मेरी यानि कि अहंभाव समाप्त होकर तू ही में यानि कि परमात्मा या वाहिगुरू जी में अभेदता प्राप्त हो जाती है -

कबीर तूं तूं करता तू हूआ
मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ
जत देखउ तत तू ॥ *अंग - 1375*

जब हम होते तब तू नाही
अब तूही मै नाही ॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि
जल केवल जल माँही ॥ *अंग - 657*

यह सारा घटनाक्रम स्थूल से शुरू होकर सूक्ष्म में से निकलता हुआ अति सूक्ष्म अवस्था में पहुँच जाता है। यही पदार्थ से अतीत परमार्थ का मार्ग है और यही असली आत्म मार्ग है।

भावार्थ **materialist** से **Creator** की तरफ को बढ़ता है यानि कि यह पदार्थवाद से कर्ता की तरफ का सफर है क्योंकि वह परमात्मा स्थूल होता हुआ भी अति सूक्ष्म है -

सूछम ते सूछम कर चीने
ब्रिधन ब्रिध बताए॥
भूम अकास पताल सभै
सजि एक अनेक सदाए। *शबद हजारे पातशाही 10*

दूसरे रूप में स्थूल से सूक्ष्म की तरफ को बढ़ना ही भावार्थ शरीर से मन, मन से आत्मा और आत्मा से परमात्मा की तरफ बढ़ने का मार्ग है। शरीर का मूल मन है, मन का मूल आत्मा है, आत्मा का मूल परमात्मा है, ऐसा अनुभवी परमात्मा के प्यारों ने माना है।

मन तूं जोति सरुपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
अंग - 441

के सिद्धान्त की रूपमानता है। समर्थ सतगुरू ने गुरुमन्त्र तथा मूलमन्त्र प्रदान करके नाम को प्रकट करना है। शरीर स्थूल है और गुरुमन्त्र तथा मूलमन्त्र सूक्ष्म है तथा नाम अति सूक्ष्म है। जिह्वा स्थूल है, फिर यही जाप बैखरी से शुरू होकर मध्यमा, पसन्ती तथा परा तक पहुँचता है, ऐसा प्यारे महापुरुषों ने अपने प्रवचनों में अनेक बार प्रकट किया है। सारा व्यवहार स्थूल से अतिसूक्ष्म तक पहुँचता है। स्थूल पदार्थों में रहते हुए अति सूक्ष्म सुरति को परमात्मा के नाम के साथ जोड़कर रखना है। स्थूल का प्रयोग तो करना है लेकिन उसमें ही लीन नहीं हो जाना है या खप नहीं जाना है, बल्कि -

जैसे जल महि कमलु निरालमु
मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ
नानक नामु वखाणे॥ *अंग - 938*

नामा कहै तिलोचना
मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु
चीतु निरंजनु नालि ॥ *अंग - 1476*

लिप्त नहीं होना है बल्कि निर्लिप्त रहना है। मैं, मेरी से ऊपर उठकर गुरू परायण जीवन व्यतीत करने की ताकीद गुरवाणी में से हमें मिलती है -

आपु छडि सदा रहै परणै
गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ *अंग - 920*

फिर गुरू की कृपा वाला द्वार खुल जाता है, जपुजी साहिब में आए हुए पाँच खण्डों वाली अवस्था भी इसी सिद्धान्त का प्रकटीकरण करती है जो कि अति सूक्ष्म है। अक्टूबर माह के आत्म मार्ग में 'हरि जन ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ' के सिद्धान्त की विचार की गई है। उस शब्द में भी सतगुरू जी ने स्थूल से सूक्ष्मता वाला आत्म मार्ग ही दिखाया है। मन की आत्मिक अवस्था स्थूल रोड़े से शुरू होकर खेह (धूल) रूपी सूक्ष्मता वाला आत्म मार्ग ही दिखाया है। मन की आत्मिक अवस्था स्थूल रोड़े से शुरू होकर खेह (धूल) रूपी सूक्ष्मावस्था और फिर पानी जैसा होकर अति सूक्ष्मावस्था में बदलने का जिक्र किया गया है। पानी रूपी अवस्था के बाद भी पूर्णता हासिल नहीं होती है। असल में हरिजन हरि जैसा ही होना चाहिए जो कि अति सूक्ष्म है। यह पावन शबद इस प्रकार से है -

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का
तजि मन का अभिमानु॥
ऐसा कोई दासु होइ
ताहि मिलै भगवानु ॥ 146॥
कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ
पंथी कउ दुखु देइ ॥
ऐसा तेरा दासु है
जिउ धरनी महि खेह ॥ 147॥
कबीर खेह हूई तउ किआ भइआ
जउ उडि लागै अंग ॥
हरि जनु ऐसा चाहीऐ
जिउ पानी सरबंग ॥ 148 ॥
कबीर पानी हूआ त किआ भइआ

सीरा ताता होइ ॥
हरि जनु ऐसा चाहीऐ
जैसा हरि ही होइ ॥ *अंग - 1372*

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही
जो किछु है सो तेरा॥
तेरा तुझ कउ सउपते
किआ लागै मेरा ॥ *अंग - 1375*

स्थूल में बदलाव हैं। घटना, बढ़ना व टूटना इनके नियम हैं। इसने ठंडा व गर्म भी होना है।

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि
तीनि अवसथा जानि॥
कहु नानक हरि भजन बिनु
बिरथा सभ ही मानु ॥ *अंग - 1428*

सृष्टि स्थूल है, टूटने व घटने, बढ़ने में है लेकिन कर्ता स्थाई है। हाथी रूपी मन ने सूक्ष्म चींटी रूप होकर गुरू के शब्द की कमाई करनी है -

हरि है खाँडु रेतु महि बिखरी
हाथी चुनी न जाइ ॥
कहि कबीर गुरि भली बुझाई
कीटी होइ कै खाइ ॥ *अंग - 1377*

कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा
राई दसवै भाइ ॥
मनु तउ मैगलु होइ रहा
निकसिआ किउ करि जाइ॥ *अंग - 509*

जब तक वृत्ति स्थूल पदार्थों में फँसी है, तब तक उद्धार नामुमकिन है। जब गुरू के शब्द की कमाई करके वृत्ति सूक्ष्म से अति सूक्ष्म हो जाएगी तो फिर मुक्ति का द्वार खुलने में तनिक भी देर नहीं लगेगी।

गुरु दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ *अंग - 730*

इस मार्ग पर चलने के लिए पहले तो पाँच प्यारे शारीरिक नियम बतलाते हैं, उसके बाद आन्तरिक नियम व मर्यादाओं को बतलाते हैं यानि कि मन, बुद्धि व चित्त पर पहरा देने की ताकीद करते हैं। गुरवाणी के अनुसार पहले स्थूल शरीर के स्थूल अंगों ने नियमों का अनुपालन करना है जैसे कि -

पर त्रिअ रुपु न पेखै नेत्र ॥ *अंग - 274*

करन न सुनै काहू की निंदा ॥ *अंग - 274*

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजनु नालि ॥
अंग - 1376

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥
अंग - 922

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी
अंग - 922

विणु सेवा धिगु हथ पैर होर निहफल करनी।
भाई गुरदास जी

इत्यादि प्रमाण गुरवाणी के अन्दर मिलते हैं लेकिन इन स्थूल अंगों के उपर्युक्त नियमों का पालन करते-करते फिर दिव्य कान आन्तरिक अमृत रूपी शबद को सुनते हैं।

बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥
कोई जाणै कैसा नाउ ॥ *अंग - 1256*

अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥
अंग - 954

मन ने भी फिर अ-मन हो जाना है। कर्मेन्द्रियाँ स्थूल हैं जबकि ज्ञानेन्द्रियाँ सूक्ष्म हैं। इसके आगे है - मन, चित्त, बुद्धि व अहंभाव। ये और भी अधिक सूक्ष्म हैं। इसका भाव यह है कि स्थूल अंगों के नियमों व मर्यादाओं का पालन करते हुए सूक्ष्म अंगों के नियम व मर्यादाओं पर भी पहरा देते हुए सजग रहना है। इनके बारे में श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के अन्दर जिक्र मिलता है।

यही है परमात्मा के प्यारों का आत्म मार्ग या रूहानी मार्ग। इस मार्ग पर चलने वाले एक दिन अपनी मंजिल-ए-मकसूद पर पहुँच ही जाते हैं। क्योंकि उनके पास तेल, दीपक व बाती रूपी पिछले जन्मों की कमाई, पहले से ही संचित होती है और कर्मखण्ड वाली गुरू की कृपा उस जन्म में हो जाती है। फिर इस कृपा की बदौलत जहाँ वे स्वयं नाम-वाणी के साथ जुड़े होते हैं वहीं जो जीव उनकी संगत में आते हैं, वे भी नाम-वाणी के साथ जुड़ जाते हैं। उनके द्वारा किए गए कार्य सदियों तक मानवता का कल्याण करते रहते हैं। उनके द्वारा स्थापित किए गए परोपकारी कार्यों की बदौलत वे सदा के लिए अमर हो जाती हैं, भले ही उनका पाँच तत्वों वाला शरीर अलोप हो जाता है, लेकिन -

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥
जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥ *अंग - 846*

महावाक्य के अनुसार वे निगुर्ण परमात्मा में अभेद होकर अमरावस्था को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसे ही थे प्यारे महापुरुष तथा उनकी जीवन संगिनी परम सम्ममानीया बीजी माता

(शेष पृष्ठ 11 पर)

मंघरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ी आह।।

(मार्गशीष माह की संक्रान्ति - 16 नवम्बर, 2018 दिन शुक्रवार)

(डा.) जगजीत सिंह

बारह माहा माँझ महला ५ घरू ४

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥

पद अर्थ - मंघरि माहि = मार्गशीष के माह में, पिर संगि = पति के साथ, किआ गणी = मैं क्या बताऊं? ब्यान नहीं किया जा सकता है। जि = जिनको, साहिबि = प्रभु जी ने, राम सिउ = परमात्मा के साथ, संगि साध सहेलड़ी आहि = सत्संगियों के साथ, बाहरी = बिना, ते = से, दिसहि = दिखाई पड़ती है, खड़ीआह = सावधान या सचेत, कंठि = गले में (भाव हृदय में) बांछै = मांगता है, दरि = द्वार पर, बहुड़ि = दोबारा।

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह॥

मार्गशीष माह में ऋतु ठंडी व मधुर बन जाती है, ग्रीष्म ऋतु की जलन व घबराहट समाप्त हो जाती है। इस सुहावनी ऋतु में प्रभु प्यार वाले जीव, नाम स्मरण व भक्ति के द्वारा, प्रभु की निकटता का आनन्द लेते हैं। जिस प्रकार से सांसारिक सन्दर्भ में सुहागिन स्त्रियाँ इस ऋतु में बहुत ही योग्य व सुहावनी है। श्री गुरु अरजन देव जी इस सच्चाई को बतला रहे हैं कि मार्गशीर्ष के मधुर ठंडक वाले मौसम में वे सुहागिन स्त्रियाँ अत्यन्त शोभनीय लगती हैं जो कि अपने पति की निकटता का सान्निध्य प्राप्त करती हैं। ठीक इसी प्रकार से वे जीव रूपी स्त्रियाँ व जीवात्माएँ भी धन्यता के योग्य हैं, सुन्दर हैं व भाग्यवान हैं जो पति परमेश्वर के सान्निध्य को प्राप्त कर लेती हैं। पति परमेश्वर भी उनके सच्चे प्यार को स्वीकार्य करते हुए अपना प्यार प्रदान करता है तथा अपने साथ मिला लेता है। इस प्रकार की भाग्यशाली जीव स्त्रियों की शोभा का ब्यान नहीं किया जा सकता है। सत्संगी सखियों यानि कि गुरुमुख प्यारों की संगत में प्रभु जी के साथ मन को जोड़ने के कारण नाम अभ्यासीजनों का मन व तन सदैव खिला रहता है। वे सदैव आनन्द व उल्लास में विचरण करते हैं। श्री गुरु महाराज जी ने नाम अभ्यासी प्रभु प्यारेजनों को भक्त, साधू, गुरुमुख, सन्त ब्रह्मज्ञानी कह कर उनका सम्मान किया है। उनकी संगत अच्छे भाग्यों के कारण प्राप्त होती है।

1. ***साध कै संगि मुख उजल होत ॥***
   साधसंगि मलु सगली खोत ॥
   साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
   साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥ *अंग - 271*

2. ***पारब्रहमु साध रिद बसै ॥***
   नानक उधरै साध सुनि रसै ॥ *अंग - 272*

3. ***साध की सोभा साध बनि आई ॥***
   नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥ *अंग - 272*

अर्थात सन्तजनों व प्रभु जी में कोई अन्तर नहीं है। ब्रह्मज्ञानी की अवस्था को तो आप और भी ऊँची कथन करते हैं। ब्रह्मज्ञानी तो जल में निर्लिप्त रहने वाले कमल के फूल की तरह संसार से निर्लिप्त रहते हैं। वे समदृष्टि वाले, धैर्यवान, निर्मल, समदर्शी, ब्रह्मज्ञानी, सुख-सहज-निवासी बड़े प्रताप वाले और मानो प्रभु जी की ही मूरत होते हैं -

नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥ *अंग - 273*

साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह॥

श्री गुरु जी ने इस महीने में एक तरफ तो सुहागिन

स्त्रियों के प्यार रंग की आभा का वर्णन किया है और दूसरी तरफ प्यार विहीन सुहागिन स्त्रियों के दुख दर्द भरी बुरी दशा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। श्री गुरु जी कथन करते हैं कि जिन भाग्यहीन जीव स्त्रियों को प्रभु-प्यारों की संगत प्राप्त नहीं होती है, जो गुरुमुख प्यारे गुरुमुखों की संगत से खाली रह जाती है, वे अकेली (पति रहित) रहकर असीम दुखों को भोगती हैं। 'आसा दी वार' में श्री गुरु नानक देव जी इस प्रकार की बेमुख जीव स्त्रियों की दुर्दशा की तुलना फसल रहित वीरान खेत से करते हैं जिसके अन्दर अपने आप उगे हुए फल रहित तिलों के पौधे यत्र-तत्र मुरझाए हुए खड़े होते हैं। वे वेचारे पौधे वैसे तो फूलते भी हैं और फलते भी हैं, फिर भी उनके तन में अर्थात उनकी फली में तिल के स्थान पर राख ही होती है। इसलिए वे अपने एक स्वामी के न होने के कारण अनेकों खसमों को खड़ा कर लेते हैं। कई गरीब लोग उन लावारिस सूखे पोधों के डंठलों को ईंधन आदि के तौर पर ले जाते हैं। इसी प्रकार से जब यह जीव चतुराई करके गुरु को अपने मन से विस्मृत कर देता है, गुरु की रहनुमाई की जरूरत नहीं समझता है तो फिर कामादिक सैकड़ों अवगुण उसके मन को आकर घेर लेते हैं। फलस्वरूप उसका मन विकारों का शिकार होता रहता है। गुरु जी का फुरमान है -

नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥
अंग - 463

खसम रहित जीव को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि दुश्मन आकर घेर लेते हैं, उसके दुखों की कहानी बहुत लम्बी होती है, मानो वे तो सदैव यमदूतों के वश ही पड़े रहते हैं। परमेश्वर से टूटे हुए व्यक्ति को प्रत्येक प्रकार के रोग व दुख दबाकर ही रखते हैं -

परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥अंग - 135

परमात्मा रूपी स्वामी को छोड़कर, भूलकर, विस्मृत करके किसी अन्य चीज में (माया में) अपने मन को जोड़ने वाले जीव इस संसार सागर में डूब जाते हैं। गुरु की शरण में रहने वाले जीव उसकी कृपा की बदौलत ही इस संसार समुद्र से पार हो जाते हैं -

सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ॥
जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ
इनी नेत्री जगतु निहालिआ ॥
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥
सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥
करि किरपा पारि उतारिआ ॥ अंग - 470

प्रभु जी से सदैव दूर रहकर वियोग के दुख को सदैव भोगती हैं, उन्हें इस लोक में भी सुख नहीं मिलता है और मरणोपरान्त वे यमदूतों के हाथों अत्यन्त दुखों पड़ जाती हैं तथा जन्म मरण के लम्बे चक्र में पड़कर असीम दुख को भोगती है -

जमि जमि मरै मरै फिरि जंमै ॥
बहुतु सजाइ पइआ देसि लंमै ॥
जिनि कीता तिसै न जाणी अंधा ता दुखु सहै पराणीआ॥ अंग - 1020

प्रभु जी को भूलकर, सांसारिक भोगों में लीन होकर, विकारों को खुशी का श्रोत मानने वाले लोग, अपने कर्मों के फल को अवश्य ही भोगते हैं। उन्हें यमदूतों के द्वारा अनेकों प्रकार के दुखों को सहन करना पड़ता है, उनसे फिर कर्मों का हिसाब मांगा जाता है। वहाँ पर फिर सगे-सम्बन्धी, धन-दौलत, मान-सम्मान, बड़े रूतबे आदि कुछ भी सहायता नहीं करते हैं। गुरु वाक्य है -

पाप करेदड़ सरपर मुठे ॥
अजराईलि फड़े फड़ि कुठे ॥
दोजकि पाए सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ ॥ २ ॥
संगि न कोई भईआ बेबा ॥
मालु जोबनु धनु छोडि वञेसा ॥
करण करीम न जातो करता तिल पीड़े जिउ घाणीआ॥
अंग - 1019-20

जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥ १०॥

वास्तविक सुखानुभूति करने वाली जीव रूपी स्त्रियाँ तो वे हैं जिन्हें अपने प्रभु रूपी पति का सान्निध्य प्राप्त होता है और जो प्रभु-स्वामी को अपने हृदय में बसा लेती हैं तथा प्रत्येक प्रकार से विकारों की तरफ से सचेत रहते हुए उनके (विकारों के) आक्रमण से सदैव बची रहती हैं। उनके सहजमयी व उल्लासमयी जीवन में से सदैव आनन्दमयी नूर

झलकता रहता है। परमात्मा का यशगान उनके हृदय में सदैव ओत प्रोत रहता है और यह यशमान इस प्रकार से उनके हृदय में सदैव शोभायमान होता रहता है, मानो कीमती हीरे, जवाहरात व लाल आदि को हार उनके गले की शोभा बढ़ा रहे हों।

जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥

गुरु महाराज जी ऐसी सुहागिन स्त्रियों से, जो कि प्रभु जी के चरणों के साथ जुड़ी रहती है, बार-बार बलिहार जाते हैं और उनके चरणों की धूल की याचना करते हैं जिन्होंने कि प्रभु जी के द्वार पर आत्म समर्पण कर दिया है। *(नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥)* अन्तिम वाक्य में गुरु जी फुरमान करते हैं कि मार्गशीर्ष के सुहावने महीने में प्रभु जी का स्मरण करने से जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है।

मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥

गुरवाणी के अनुसार परमात्मा का निवास कण-कण में है और परमात्मा तो हमारे अन्दर ही निवास करता है। दरअस्ल हमने स्वयं ही जीवात्मा व परमात्मा के बीच मे ंहउमै की दीवार खड़ी कर ली है तथा परमात्मा को दूर करके स्वयं ही 'मैं' 'मेरी' का हउमै का संसार खड़ा कर लिया है -

धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥ *अंग - 1263*

साधूजन, गुरु-प्यारे हमें यह रूहानी ज्ञान प्रदान करते हैं और गुरबाणी हमें यह समझ प्रदान करती है कि नाम-स्मरण के द्वारा अन्दर निवास कर रहे प्रभु जी को पहचानो, हउमै के पतले से पर्दे को दूर कर दो जिसने कि पास में ही निवास कर रहे परमात्मा और आत्मा के बीच दूरियाँ खड़ी कर दी हैं, उस पर्दे को हटा कर प्रभु जी के साथ एकत्व प्राप्त कर लो -

हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ॥
भाँभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥

अंग- 624

और इस प्रकार से हम वास्तव में गुरू की शरण में आएँ क्योंकि गुरु हमें, जो कि अनेकों जन्मों से बिछुड़े हुए हैं, प्रभु जी के साथ मिलाने में पूर्ण समर्थ है। सन्त, साधू, गुरमुखजनों की संगत करते हुए ही गुरू की प्राप्ति होती है और गुरु जन्म-जन्म के बिछड़े हुओं को प्रभु मिलाप प्रदान करवा देता है। गुरवाणी का ऐसा विधान है -

कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै
हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥
अनेक जनम के विछुड़े जन मेले
जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥ ४ ॥

अंग - 836

रागु तुखारी छंत महला १ बारहमाहा

मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥
गुणवंती गुण रवै मै पिरू निहचलु भावए ॥
निहचलु चतुरू सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ॥
गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ
॥ गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥
नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥

अंग - 1109

मार्गशीर्ष का माह मधुर ऋतु का महीना है, इसके अन्दर न तो ज्येष्ठ व अषाढ़ वाली तपिश है और न ही पौष व माघ वाली कंपकपांती सर्दी। प्रभु जी की भक्ति करने के लिए, उसके यशगान में जुड़ने के लिए, यह अत्यन्त सुन्दर ऋतु है।

श्री गुरु नानक देव जी इस महीने को सुहावना व मधुर करके याद करते हैं (मंघर माहु भला) तथा हम जीव रूपी स्त्रियों को यह उपदेश करते हैं कि परमात्मा का यशगान करके हम उसे अपने हृदय में बसा सकते हैं (हरि गुण अंकि समावए) वैसे तो पहले ही हमारे हृदय में निवास कर रहा है लेकिन हम स्वयं ही उसे विस्मृत करके बैठे हुए हैं परमात्मा के यशगान के द्वारा, गुरवाणी के गायन के द्वारा जो कि उसका यशगान ही है, उसके नाम स्मरण के द्वारा हम इस खोई हुई अवस्था को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। विस्मृत हो चुके परमेश्वर को पुनः याद करना ही उसका नाम स्मरण है। वाहिगुरु शब्द का प्रत्येक समय जप, जिह्वा के द्वारा, कंठ के द्वारा, हृदय के द्वारा श्वासों के द्वारा, उठते-बैठते, बोलते, चलते, काम करते प्रत्येक समय उसका स्मरण करना उसकी याद को ताजा करना ही है, अपने अनुभव में लाना है, उसके द्वारा टूटी हुई डोरी को पुनः जोड़ना है, अन्दर निवास कर रहे परमात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है। नाम स्मरण के द्वारा, गुणगान के द्वारा, स्थिर रहने वाला, निश्चल प्रभु-पति प्यारा लगने लग पड़ता है। गुणवान स्त्री, सूझवान स्त्री, एक मन व एक चित्त होकर सच्ची लगन के द्वारा, गुण गान

के द्वारा अपने पति का प्यार प्राप्त कर लेती है। (गुणवन्ती गुण रवै मै पिर निहचलु भावए।।) उसे यह समझ प्राप्त हो जाती है कि यह दृष्यमान संसार, इसके सारे सम्बन्ध, सारे रिश्ते व व्यवहार सब झूठे हैं, साथ में निभने वाले नही हैं, चंचल हैं, नाशवान हैं और केवल परमेश्वर ही सारे जगत का सृजनहार है, वही चतुर सयाना व सदा स्थिर रहने वाला व सच्ची प्रीति वाला है (निहचल चतुर सुजाणु बिधाता चंचलु जगत सबाइआ) प्रभु जी के यशगान, गुणगान व नाम स्मरण के द्वारा प्रभु जी का ज्ञान व प्रभु जी की पहचान होती है, उसमें सुरति टिकती है तथा उसके गुण हृदय में आकर बस जाते हैं तथा उसके हुक्म व उसकी रजा की समझ प्राप्त होती है, फलस्वरूप उसकी रजा में हो रही सारी क्रियाएँ फिर अच्छी लगने लग पड़ती हैं (गिआन धिआन गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ) मन की ऐसी स्थिति प्राप्त हो जाती है, जिसमें कि दुखों का कोई स्थान नहीं रहता है, प्रभु जी की सिफत-सालाह में जुड़ने से प्रभु जी के मीठे गीत (गुरवाणी) सुन-सुन कर मन आनन्दित होता है तथा सारे दुख दूर हो जाते हैं। गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै।। प्रभु-प्यार में, प्रभु की रजा में, विचरण करती हुई जीव रूपी स्त्री प्रभु रूपी पति को मनमोहक लगने लग पड़ती है, अतः वह (जीव रूपी स्त्री) उसके साथ (प्रभु जी के साथ) एकत्व प्राप्त कर लेती है अर्थात उसे जीवन आदर्श की प्राप्ति हो जाती है (नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै।।) अतः मार्गशीर्ष के माह में प्रभु जी की स्तुति व उसका यशगान करके तथा उसके नाम का स्मरण करके हम उसके प्यार को प्राप्त कर सकते हैं।

(पृष्ठ 7 का शेष)

रणजीत कौर जी। रतवाड़ा साहिब ट्रस्ट के संस्थापक होने के नाते आप जी के द्वारा किए गए परोपकारी कार्य भले ही वे धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक अथवा किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित थे, सदैव ही सम्पूर्ण मानवता का कल्याण करते रहेंगे। परोपकारी कार्यों के अतिरिक्त एक और महान कार्य जो गुरू जी ने आपसे करवाया वह था -

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥
जीअ दानु दे भगती लाईन हरि सिउ लैनि मिलाए॥
अंग - 749

जीवनदान करना भावार्थ वाहिगुरू जी से टूट चुकी आत्माओं को पुनः वाहिगुरू जी के साथ जोड़ देना सर्वाधिक महान कार्य है।

आपि जपै अवरह नामु जपावै॥ ***अंग - 306***

सिद्धान्त पर आजीवन पहरा देकर आपने अनेकों प्राणियों को शब्द गुरू श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के साथ जोड़ा। ऐसी ईश्वरीय आत्माएं, उनके द्वारा जीवन भर किए गए कार्यों के कारण तथा अभेदावस्था प्राप्त होने के कारण वे सदा ही अमर हैं। नाम अमृत को पीकर वे सदा ही अमर हैं। 'अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु' तथा 'ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता' वचनों के अनुसार उनके पाँच तत्वों वाले शरीरों के अलोप हो जाने के बाद भी वे आज हमें अमर ही प्रतीत हो रहे हैं। उनकी पावन याद को ध्यान में रखते हुए रतवाड़ा साहिब की पावन धरती पर महान गुरमति समागम 30-31 अक्टूबर तथा 1-2 नवम्बर को आयोजित किए जा रहे हैं। साहिब श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की छत्रछाया में ट्रस्ट के वर्तमान मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी के देखरेख में ट्रस्ट के सारे सदस्यों व संगत के सहयोग से प्रबन्धों को अन्तिम स्वरूप दिए जा चुके हैं। प्यारे के प्यार में, देश व विदेशों से शामिल होने के लिए प्रेमीजन इस अवसर पर पहुँच रहे हैं। इस अवसर पर आँखों के मुफ्त आप्रेशन शिविर, कैंसर के निःसुल्क परीक्षण शिविर तथा निःशुल्क मैडिकल शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। संगत के लिए उपयुक्त अस्थाई आवास व्यवस्था, आत्म मार्ग स्टाल, ट्रांसपोर्ट, पार्किंग, गुरू के लंगर, जोड़ा घर, पण्डाल, बिजली व पानी आदि अनेकों सेवाओं का सुव्यस्थित प्रबन्ध किया गया है। भारी मात्रा में अमृत संचार हो रहे हैं। ईश्वरीय प्रेम में भीगी हुई आत्माएं, वक्तागणों के रूप में सारी संगत को इलाही वाणी के कथा कीर्तन द्वारा शरशार करेंगी। समस्त श्रद्धालुजनों व सहृदय पाठकों को इस अलौकिक व विलक्षण रूहानी समागम में पहुँचने के लिए ट्रस्ट रतवाड़ा साहिब के द्वारा हार्दिक निवेदन किया जाता है ताकि हम लोग उस शाश्वत अकाल पुरुष वाहिगुरू जी के यशगान में जुड़कर इस सिद्धान्त की पूर्णता कर सकें कि -

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥
अंग - 1429

प्यारे की लालसा
श्री गुरू नानक देव जी तथा राए बुलार
(गुरू नानक देव जी महाराज प्रकाश दिवस - 23 नवम्बर 2018)

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 31)

नवाब जी बोले, नानक! आज जुमा रात्रि (शुक्रवार की रात्रि) है, क्या आप हमारे साथ नमाज पढ़ने चलोगे? गुरू जी बोले, हाँ! अवश्य चलेंगे। मरदाना ने बताया राय साहिब! जब गुरू जी नवाब साहिब के साथ नमाज पढ़ने चले गए तो सारे शहर में निन्दा होने लग पड़ी कि गुरू नानक ने इस्लाम धारण कर लिया और मस्जिद में नमाज पढ़ने गया है।

बेबे नानकी ने कहा, मेरा भाई तो मजहबों से ऊपर है, वह मजहब रहित है। उसका मजहब तो वाहिगुरू है, इसके अतिरिक्त वह अन्य किसी धर्म या दिखावे में नहीं है। यह कोई उसकी लीला है, वह स्थिर भाव में रही। शेष सारा शहर कहने लगा कि इतना अच्छा होता था वह इस्लाम में चला गया। जब नमाज शुरू हुई तो इमाम आगे खड़ा है, गुरू नानक उसके पीछे है। एक तरफ काजी और दूसरी तरफ नवाब खड़ा है। जब कलमा पढ़ना शुरू किया तो गुरू नानक देव जी खड़े हैं। उसके बाद गुरू नानक देव जी एक तरफ होकर बैठ गए क्योंकि नमाज शुरू हो चुकी थी। इसलिए नमाज में कोई व्यवधान नहीं डाला जा सकता था। जब नमाज पढ़ी जा चुकी तो काजी ने कहा नानक तो नमाज पढ़ने आया था परन्तु इसने नमाज तो पढ़ी ही नहीं और उधर जाकर बैठ गया। नवाब साहिब कहने लगे, नानक जी! आप तो नमाज पढ़ने के लिए आए थे? नानक जी बोले, हाँ आए तो थे। हम तो पढ़ते ही हैं, अब भी पढ़ रहे हैं, हम तो प्रत्येक क्षण पढ़ते हैं, जबकि तम लोग केवल पांच बार ही पढ़ते हो। हमारी नमाज तो कभी भी खण्डित नहीं होती है। जबकि तुम लोग तो पांच बार भी नहीं पढ़ते हो तब हम किसके साथ पढ़ते? नवाब ने कहा मैं तो यहीं पर मौजूद था। गुरू नानक ने कहा नवाब साहिब! तुम तो कन्धार के अन्दर घोड़े खरीद रहे थे। तुम अपने कर्मचारियों को बता रहे थे कि इतने घोड़े अमुक रंग के लेने हैं, इतने तोपों को खींचने वाले लेने हैं, इतने सवारियों वाले लेने हैं। तुम अभी-अभी वहाँ से लौटकर आए हो।

राय जी! उस समय सबने मुँह में अंगुली ले ली कि शुभान अल्लाह! नानक तो सबके मन की बातों को जानता है। काजी बोला, नानक! तो फिर आप मेरे साथ नमाज पढ़ लेते? गुरू नानक देव जी कहने लगे काजी साहिब! तुम भी तो अभी ही वापिस आए हो, तुम अपने घर पर गए हुए थे और अपनी घोड़ी के नवजात शिशु को कुएं में गिरने से बचा रहे थे। घोड़ी ने शिशु को जन्म दिया था और तुम्हारे घर में जो कुआं है, उस पर चारों और चारदीवारी नहीं है, इसलिए तुम उस नवजात शिशु को उसमें गिरने से बचाते रहे। तुम नमाज अदा करने के लिए तो आए ही नहीं थे, उस समय काजी भी बहुत शर्मिन्दा हुआ।

इस प्रकार गुरू नानक ने उन्हें समझाया कि यदि तुम परमेश्वर का नाम लेना चाहते हो तो उसके लिए चित्त की एकाग्रता आवश्यक है, नवाब ने पूछा हे नानक! चित्त को एकाग्र कैसे किया जा सकता है? गुरू नानक ने कहा जब तक व्यक्ति के अन्दर वासनाएं हैं, तब तक चित्त के अन्दर एकाग्रता नहीं आ सकती है। जैसे धन की वासना व्यक्ति को स्थिर नहीं होने देती है और वह दिन रात दौड़ता रहता है, वह स्वप्न में भी धन की ही बातें करता है। दिन में भी धन की बात सोचता है, रात में भी। वह इस कोशिश में लगा रहता है कि किस प्रकार से दूसरों के धन को अपना बना लिया जाए। मित्रों को किस प्रकार से धोखा दिया जा सकता है, छल कैसे किया जा सकता है, अतः धन के लिए व्यक्ति

असंख्य प्रकार के पाप करता है और उसके मन का एकाग्र होना लगभग मुश्किल हो जाता है। वे बोले कि नानक! फिर धन की वासना को किस प्रकार से दूर किया जा सकता है? गुरू जी बोले, मन में सन्तोष धारण करने से। इसके लिए 'यथा लाभ सन्तुष्टे' रहना पड़ता है।

परमेश्वर ने जो कुछ माथे में लिख दिया है, उसने तो मिल ही जाना है और उससे अधिक कुछ मिलने वाला नहीं है।

इस का बलु नाही इसु हाथ॥
करन करावन सरब को नाथ॥ *अंग - 277*

दूसरी वासना, पुत्र वासना होती है। भारतीय समाज के अन्दर पुत्र को अधिक महानता प्रदान की गई है, जो अंग्रेजों का समाज है, उसमें न पुत्र की अधिक महानता है और न पुत्रियों की, बल्कि कुछ मात्रा में लड़की को अधिक अच्छा समझा जाता है क्योंकि मां बाप की वृद्धावस्था में, लड़की उनके पास रहती है, जबकि लड़के पास में नहीं रह पाते हैं। इस प्रकार यह वासना (पुत्र प्राप्ति की) भारतवर्ष के दम्पत्तियों से बड़े उल्टे कार्य करवा देती है।

इस प्रकार के कार्य भी लोग करते हैं कि जिन्हें सार्वजनिक कर पाना भी कठिन है। मान लो पुत्र प्राप्त हो गया लेकिन फिर बीमार हो गया और मर गया तो फिर?

एक राजा चित्रकूट था, उसके घर पुत्र की प्राप्ति नहीं हो पाती थी, उसने बहुत बड़ी गिनती में शादियां भी करवा ली थीं, लेकिन पुत्र प्राप्ति नहीं हो पा रही थी। आखिर वशिष्ठ जी, विश्वामित्र जी आदि महर्षियों ने उन्हें मन्त्र या योग बल से एक पुत्र दिलवा दिया। वह पुत्र थोड़ी सी उम्र पाने के बाद मर गया। अब वह उससे भी अधिक दुखी हो गया। गुरू जी कहते हैं कि पुत्र वासना व्यक्ति को टिकने नहीं देती है। वह देखता रहता है कि यह मेरी जायदाद वैसे ही चली जाएगी न जाने यह किसके हाथ आ जाएगी? अंग्रेज लोग ऐसे नहीं करते हैं। वे पहले ही सोच लेते हैं। उनके पुत्र भी होते हैं, तो भी वे यह पूर्व निर्धारित ही करते हैं कि मैंने जो कमाई जिन्दगी भर की है, उसे विभिन्न प्रकार से वितरित किया जाए, जैसे अस्पताल को इतनी जाए, भूखे व नंगों को इतनी मिले, जानवरों की रक्षा के लिए इतनी मिले, अन्त में, पुत्रों के लिए होता है कि इनके लिए मेरी सद्भावना है। बच्चे भी कहेंगे थैंक्स डैडी, थैंक्स डैडी। कोर्ट के अन्दर पढ़कर सुनाया जाता है। यहाँ पर यह होता है कि मेरी जायदाद को कौन संभालेगा? हमारे पास पड़ोस वाले संभाल लेंगे। दूसरा यह है कि निकटतम सम्बन्धी भी कहेंगे कि यह जल्दी चला जाए ताकि इसकी जायदाद हमें मिल जाए।

तीसरी वासना होती है - लोक लाज। लोग सोचते हैं कि कोई हमें बुरा न कह दे। धन शक्ति का अभाव होता है, हैसियत से अधिक स्तर का ब्याह करना चाहता है, उसके लिए कर्ज ले लेता है। फिर कर्ज वापिस करना मुश्किल हो जाता है। जमीन जायदाद सब बिक जाती है। आवश्यकता से अधिक स्वयं को शो करता है कि लोग मुझे अमीर कहें। लोगों को खुश करने की कोशिश करता है। लेकिन आज तक कोई ऐसा नहीं हुआ है जो कि लोगों को खुश कर दे। श्री राम चन्द्र जी जब लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद अयोध्या पहुँचे तो लोगों ने सीता की अग्नि परीक्षा ली। आग को खूब प्रचन्ड वेग में जलाया गया। उसमें से सीता को निकाला गया और यह शर्त रखी गई कि यदि वह आग में से पार निकल गयी तब तो वह सच्ची है अन्यथा कलंकित है। वह सच्ची थी आग में से सुरक्षित निकल गई। वह घर आ गई। लेकिन यहाँ वाले लोगों ने फिर भी उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि नौ महीने रावण के पास रहने के बाद भी यह कलंकित न हो, यह कैसे हो सकता है? बात चलती गई।

एक दिन रामचन्द्र जी वीर यात्रा पर निकले हैं कि एक धोबी अपनी घरवाली के साथ झगड़ा कर रहा है और वह उसे अपने घर में घुसने नहीं दे रहा है। वह कहती है कि तुम मुझे अन्दर क्यों नहीं आने दे रहे हो? मैंने कोई गुनाह नहीं किया है। मेरा पिता बीमार था, मैं उसकी खबर लेकर अभी वापिस आ गई हूँ, मैं तो घर रूकी भी नहीं, मैंने तो पानी भी नहीं पिया।

रामचन्द्र जी, जो कि उस समय वीर यात्रा पर थे, कहने लगे ऐ भद्रपुरुष! क्या बात है तम इसके साथ क्यों लड़ रहे हो? वह बोला मैं लड़ूँ क्यों न? यह मुझे पूछे बिना बाहर गई। वह बोली मैं बाहर नहीं गई, धोबीघाट दूर था, मुझे सन्देश आया कि मेरा पिता बीमार था। मैं उसकी खबर लेकर वापिस आ गई। रामचन्द्र जी कहने लगे, ऐ बन्धु! इतने पास में गांव है और यह तुरन्त वापिस आ गई है। लेकिन तुम फिर भी इसे अन्दर घुसने नहीं दे रहे हो? वह बोला, क्या तुम मुझे रामचन्द्र समझते हो जो कि नौ महीने सीता को रावण के पास रखने के बाद पुनः अपने घर ले आए? जब लोक राय

ली गई तो वह खिलाफ हो गई। फलस्वरूप रामचन्द्र जी को, सीता जी को निर्दोष होते हुए भी जंगलों में छोड़ना पड़ा। कारण? कारण था लोक लाज।

अब वे घूमते-घूमते अपने राज्य में पूर्व की ओर चले गए, आपके साथ में लक्ष्मण जी भी हैं, उन्हें पानी की प्यास लगी। एक जमींदार हल चला रहा था लेकिन उसकी जो पोशाक थी वह अजीब प्रकार की थी। बैलों के ऊपर भी उसने एक तारों का कम्बलनुमा वस्त्र बनाकर ओढ़ाया हुआ था। बैलों के पैरों में भी उसने एक अजीब प्रकार के फुटलस डाले हुए थे। उसने अपने पैरों में भी घुटनों तक के बड़े जूते पहने हुए थे तथा सिर के ऊपर एक लौह टोप रखा हुआ था तथा अपने शरीर पर भी उसने लोहे का कोट पहना हुआ था। पानी पीने के बाद रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी भी एक वृक्ष की छाया देखकर बैठ गए। वे उस कृषक को पूछने लगे, ऐ बन्धु! तुमने यह क्या भेष बनाया हुआ है? वह बोला, महाराज! यहाँ पर एक ऐसी नुकीली चोंच वाला पक्षी है कि यदि वह अपनी चोंच मार दे तो मांस ही निकाल लेता है, इसी लिए हमने तारों का वस्त्र बनाकर बैलों को ओढ़ाया हुआ है। इसीलिए हमने भी कोट तथा टोप ले रखा है। पैरों की जहां तक बात है वह यह है कि यहाँ पर एक ऐसा बिच्छू है जो कि अत्यन्त जहरीला है, जिसे वह पक्षी लड़ जाए तो वह व्यक्ति बच ही नहीं पाता है। उससे बचाव के लिए हमने ये विशेष प्रकार के जूते पहन रखे हैं। रामचन्द्र जी बोले, चलो हम तुम्हें बढ़िया जगह पर जमीन दिलवा देते हैं। भारतवर्ष में कौन सी जमीन की कमी है? ऐसी जमीन पड़ी है कि जरा सी ही सिंचाई व जुताई से बहुत अच्छी फसल हो जाती है। तुम यहाँ पर क्यों परेशान हो रहे हो? वह कृषक बोला, वाह! भई वाह! एक तो हमने तुम्हें पानी पिलाया है, दूसरा तुम हमें उल्टी शिक्षा दे रहे हो। वह बोला मुझे तुमने रामचन्द्र ही समझ लिया है। क्या कभी कोई अपनी स्त्री या जमीन का भी त्याग करता है? रामचन्द्र जी लक्ष्मण की तरफ देखने लग पड़े। भावार्थ यह पूछने लगे कि उधर दूसरी प्रकार की बात हो रही है और इधर दूसरी प्रकार की बात हो रही है। इसे ही लोक लाज कहते हैं। लोक लाज में कोई भी व्यक्ति सबको सन्तुष्ट नहीं कर पाया करता है। क्योंकि जितनी स्तुति होती है उतनी ही निन्दा भी हो जाया करती है। गुरू जी कहते हैं-

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना॥

अंग - 219

इस प्रकार से अनुष्ठान वासना, शास्त्र वासना आदि होती है। किताबें पढ़ते रहते हैं। कोटेशनें लिखते रहते हैं। लिख लिखकर सुनाते रहते हैं। इन्हें गधा कहते हैं। किताबें ढोने वाला गधा। इसके अतिरिक्त होता है सन्त, साधू, महात्मा, तान्त्रिक आदि जो लोगों को धागे व ताबीज आदि बनाकर देते हैं। वे साधना तो करते हैं लेकिन ईश्वर का भजन नहीं करते हैं।

अतः गुरू जी कहने लगे, नवाब साहिब! इस प्रकार की अनेक वासनाएं मन को घेर कर रखती हैं और व्यक्ति नाम जप ही नहीं पाता है।

इस प्रकार श्री गुरू नानक देव जी कहने लगे, नवाब साहिब! अनेक प्रकार की वासनाएं मन को घेर कर रखती हैं। मरदाना कहने लगा, वहाँ पर गुरू नानक देव जी ने सबको सही मार्ग पर डाला। इस प्रकार से दौलत खान गुरू जी का शिष्य बन गया तथा चरणामृत लेकर नाम जपने लग पड़ा।

राय बुलार बोला धन्य है वह, जिसे मेरे गुरू की समझ पड़ गई। मरदाना ने कहा, जी इसके बाद हम लोग भाई लालो के यहाँ चले गए। गुरू नानक देव जी वहाँ पर काफी दिन रहे। वहाँ पर कई कट्टर धर्मावलम्बियों ने शिकायत कर दी कि गुरू नानक क्षत्रिय होकर लालो बढ़ई शूद्र के यहाँ रहता है। शूद्रों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया था। एक तो वे थे, जिन्हें अपनी आजीविका कमाने के लिए शरीर में से पसीना आ जाए, दूसरे वे थे जिन्हें अस्पर्श्य कहा जाता है, अर्थात जिन्हें हाथ लगाया और अछूत हो गए। एक वे थे, जिनके घर का नहीं खाना है। यदि खाना भी है तो खुद पकाकर खाना है। जाति पात का विभाजन बहुत गहरा था। कहने लगे कि भाई लालो मेहनतकश सिक्ख था, परन्तु परमेश्वर का प्यारा सिक्ख था। वह तो केवल प्यार की मूर्ति था लेकिन उसकी बहुत अधिक निन्दा, परगने के मालिक, मलक भागो के पास कर दी गई। उसने ब्रह्मभोज किया लेकिन गुरू नानक देव जी ने मना कर दिया। लेकिन अन्त में, वे चले जाते हैं। वहाँ पर उसे कहा गया, नानक! तुम ब्रह्मभोज क्यों नहीं खाते हो? उन्होंने कहा मुझे तो भूख ही नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि तुम्हारी कमाई पवित्र नहीं है। जिस लालो के विषय में तुम मुझे उलाहने दे रहे हो, उसकी कमाई बहुत मेहनत की है, उसे तो जो भी खा लेगा वह नाम जपने लग पड़ेगा, जबकि तुम्हारी रोटी जो भी खाएगा वह नाम को पूर्णतः भूल ही जाएगा।

जा की रहित न जाणीअै गुरबाणी नहीं रीत
तिस दे हथहु खाधीअै विसरै हरि की प्रीत।

वहाँ पर गुरू नानक ने एक लीला की। उन्होंने लालो के सूखे टुकड़े मंगवाए तथा इसके ब्रह्मभोज की पूरियां मंगवाई। उन्होंने दो थालियां मंगवा लीं तथा हाथों से दबा दीं। मलक भागो के मालपुओं में खून चलने लगा तथा लालो के सूखे टुकड़ों में से दूध की धार चलने लगी। उस वक्त गुरू नानक देव जी ने कहा मलकभागो! तुम पाप करते हो अथवा पुण्य? तुम लोगों का खून चूस-चूस कर फिर दान करते हो। इसे तो दान का फल लगने वाला नहीं है। क्योंकि उसूल कभी उल्टे नहीं हुआ करते हैं -

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु॥
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु॥ अंग - 1379

नानक जी कहने लगे, मलक जी! तुम लोग तो हाकिम लोग हो। एक न्यायपूर्ण बात बताओ कि यदि बबूल का पेड़ उगाओ तो क्या उसे अंगूर लगते हैं? वह बोला, नहीं यदि कोई महिला कपास का सूत कातती रहे और कहे कि मुझे रेशम मिल जाए तो क्या यह सम्भव है? वह बोला, नहीं यह तो -

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु॥ अंग - 134

तुम कितने पाप बोते हो, कितने धक्के करते हो, प्रजा से कितना अनाज छीनते हो। लेकिन याद रखो कि तुमने ये जो कर्म किए हैं, ये अटल हो गए हैं। फिर यमराज की दरगाह में तुम्हें सजाएं भोगनी पड़ेंगी और तुम्हें सजाएं मिलेंगी। ऐसा नहीं है कि तम कर गए हो और तुम्हें रोकने वाला कोई नहीं है। यहाँ पर तो तुम कर गए हो, लेकिन संसार के अन्दर तो तुमने सदैव रहना नहीं है। यहाँ पर से तो चले जाना है लेकिन ऐ बन्धुजन! जब तुम दरगाह में जाओगे तो वहाँ पर बहुत मुसीबत में फंस जाओगे। इसलिए महापुरुषों का वचन मानना ही हितकर है।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु
काले लिखु न लेख॥
आपनड़ै गिरीवान महि
सिरु नींवां करि देखु॥ अंग - 1378

बहु परपंच करि पर धनु लिआवै॥
सुत दारा पहि आनि लुटावै॥
मन मेरे भूले कपटु न कीजै॥
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै॥
छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै॥
तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै॥
कहतु कबीरु कोई नही तेरा॥
हिरदै रामु की न जपहि सवेरा॥ अंग - 656

लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी॥
तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी॥
संनी देनि विखंम थाइ मिठा मदु माणी॥
करमी आपो आपणी आपे पछुताणी॥
अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी॥ अंग - 315

कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ॥
उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइ॥
अंग - 1375

गुरू नानक देव जी कहने लगे, ऐ मलक भागो! यही खून तुम साधुओं को जब खिलाओगे तो क्या वे भजन कर पाएंगे? क्या उनके द्वारा किए गए पुण्य फलीभूत हो पाएंगे? जब तुम नर्कों की ओर जाओगे तो ये सब भी नर्कों में जाएंगे। कहने लगे, राय साहिब! जब वह समझ गया तो चरणों पर गिर पड़ा। इसी प्रकार वहाँ का नवाब जालम खां था। उसे भी गुरू ने सदबुद्धि प्रदान की। इतने वचन सुनते-सुनते राय बुलार के नेत्रों में जल जा रहा है। उसके मन में बहुत सारी श्रद्धा तथा प्यार जागृत हुआ है। उस समय मरदाना कहने लगा राय जी! गुरू नानक को साधारण मनुष्य न कहो, गुरू नानक तो साक्षात् परमेश्वर का रूप है।

समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ
इक वसतु अनूप दिखाई॥
गुर गोविंदु गोविंदु गुरू है
नानक भेदु न भाई॥ अंग - 442

कहने लगा राय जी! गुरू नानक की महिमा को किसके बराबर कथन करुं।

कहि मरदाना सुनिये राइ!
नानक धारयो रूप खुदाइ।
किह की उपमा दोवों तांही।
तिन की सम को दीसति नाही।
श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

संसार के अन्दर कोई भी ऐसा दिखाई नहीं पड़ रहा है, जिसके समान गुरू नानक को कहा जा सका। वह तो खुदा के जैसा ही खुदा रूप है। इतनी वार्ता जब राय साहिब ने सुनी तो उसकी आँखों में से अश्रु प्रवाहित होने लगे। वे

कहने लगे कि उन्हें गुरू नानक के दर्शनों की तीव्र लालसा है परन्तु ऐ बन्धु! वे तो अपनी मौज के मालिक हैं। न जाने दोबारा दर्शन हो पाएंगे अथवा नहीं। मैं तो दिन-रात लालसा में हूँ क्योंकि जब मैं अपने शरीर को देखता हूँ तो हैरान हो जाता हूँ क्योंकि -

धनु जोवनु अरु फुलड़ा
नाठीअड़े दिन चारि॥
पबणि केरे पत जिउ
ढलि ढुलि जुंमणहार॥ *अंग - 23*

भाई मरदाना! शरीर तो पैदा होता है फिर जवान होता है, उसके बाद बुढ़ापा आता है और उसके बाद तो फिर जाना ही होता है। ये वस्तुएं जैसे धन, यौवन तथा फूल आदि कभी भी स्थिर नहीं रह पाती हैं।

रंगु माणि लै पिआरिआ
जा जोबनु नउ हुला॥
दिन थोड़ड़े थके
भइआ पुराणा चोला॥ *अंग - 23*

अर्थात जब तक यौवन है, शरीर मजबूत है, तब तक नाम का जप कर लो।

राय बुलार कहने लगा मरदाना जी! देको मेरी उम्र अब मेरा साथ नहीं दे रही है। बड़ी उम्र हो गई है तथा मेरे हृदय के अन्दर गुरू नानक का प्यार है। मेरा मन उनके दर्शनों के लिए इस प्रकार से लालायित है जैसे चन्द्रमा के दर्शनों के लिए चकोर लालायित रहता है। मेरे मन के अन्दर प्रत्येक समय इस प्रकार की भावना बनी रहती है।

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले।
चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले।
नेहु कवल जल जाणीअै खिड़ि मुह वेखाले।
नारि भतार पिआरु है मां पुत समाले।
पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले॥

भाई गुरदास जी, वार 17/4

भाई मरदाना! इन सबकी प्राप्ति जग में प्रकट है। चकोर, चन्द्रमा की तरफ देखता ही रहता है। हो सकता है कि चन्द्रमा को इसके बारे में कुछ पता ही न हो लेकिन चकोर तो अपने प्यार में मस्त रहता है। चकवी का प्यार सूर्य के साथ है, वह उसकी तरफ मुँह करके खड़ा रहता है। जिस समय सूर्य छिप जाता है, उस समय जोड़ी का विच्छेद हो जाता है। इसी प्रकार से कमल का प्यार जल के साथ है। मोर व बबीहों को बादल रुचिकर लगते हैं। स्त्री का प्यार अपने पति के साथ है, तथा मां व पुत्र की प्रीति को सब जानते हैं। ठीक इसी प्रकार से मेरे भी मन में बेतहाशा स्नेह है। परन्तु मेरा गुरू नानक तो घट-घट को जाननहार है। यह प्यार इतना सशक्त है कि यह किसी भी तरीके से कम नहीं हो पाता है।

सलिल निवास जैसे मीन की न घटै रुचि।

भाई गुरदास जी, कबित्त 424

मछली सदैव ही पानी में रहती है लेकिन फिर भी उसका प्यार पानी से कभी भी कम नहीं होता है।

दीपक प्रगास घटै प्रीति न पतंग की॥

भाई गुरदास जी, कबित्त 424

दीपक जलता है और पतंगा आकर उसमें जल जाता है और दूसरा तीसरा आदि सभी पतंगे उसमें जलते ही जाते हैं, लेकिन प्यार में कमी नहीं आती है।

कुसम सुबास जैसो त्रिपति न मधुप कउ।

भाई गुरदास जी, कबित्त 424

भ्रमर फूलों के अन्दर निवास कर लेता है और फूल बन्द हो जाता है तथा वह उसके अन्दर ही मर जाता है।

उडत अकास आस घटै न बिहंग की॥

भाई गुरदास जी, कबित्त 424

जो जानवर आकाश में उड़ते हैं उनकी इच्छा कभी कम नहीं होती है।

घटा घनघोर मोर चात्रिक रिदै उलास।

भाई गुरदास जी, कबित्त 424

जब घनघोर घटा आती है, तो मोरों के हृदय में बेशुमार खुशी छा जाती है। चात्रिक के हृदय में भी खुशी होती है।

नाद बाद सुनि रति घटै न कुरंग की॥
तैसे प्रिअ प्रम रस रसिक रसाल संत,
घटत न त्रिसनाप्रबल अंग अंग की॥

भाई गुरदास जी, कबित्त 424

घंडाहेड़ा (एक विचित्र प्रकार का नाद) का शब्द सुनते ही हिरण मस्त हो जाता है। तब तक शिकारी इसे पकड़ लेता है लेकिन उसकी रुचि में कोई कमी नहीं आती है। वह उस नाद में लीन होता है। उसे यह भी ख्याल नहीं रहता है कि शिकारी मुझे पकड़ लेगा। इसी प्रकार जो लोग परमेश्वर को प्यार करते हैं (सन्तजन) उनके मन में परमेश्वर के प्रति सदैव ही प्यार बना रहता है।

अतः ऐ मरदाना! आप दोनों ने मुझे, मेरे प्यारे के वचन सुनाएं हैं, इसके बदले में, मैं तुम लोगों को क्या अर्पित करूँ? बस, गुरू जी के हुक्म के मुताबिक सबसे बड़ी चीज, जिसे अर्पित किया जा सकता है, वह तो यह है -

तै साहिब की बात जि आखै
कहु नानक किआ दीजै॥
सीसु वढे करि बैसणु दीजै
विणु सिर सेव करीजै॥ *अंग - 558*

भाई मरदाना! मेरे पास कोई ऐसी चीज नहीं है जो कि मैं आप लोगों को अर्पित करूँ। बस, यदि तुम लोग मुझे मेरे गुरू के साथ मिला दो तो मैं उसके लिए बड़ी से बड़ी कीमत देने को तैयार हूँ।

हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी
अरपी सभि देसा॥
हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे
जो प्रभु देइ सदेसा॥ *अंग - 247*

भाई मरदाना! तुम लोग धन्य हो, मेरे गुरू के साथ रहते हो। मेरा शरीर वृद्ध हो गया है आप लोगों की भांति चलने की हिम्मत नहीं है। दूसरी बात मेरे लिए जा पाना और भी कठिन है। यदि आप मुझे उनके दर्शन करवा देते तो मैं हजार बार तुम्हारे ऊपर न्यौछावर जाता, फिर मैं पैरों के बल नहीं, बल्कि सिर के बल चल कर दर्शनार्थ जाता, यदि मेरे शरीर में शक्ति होती।

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंनि॥
पैरी थकां सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलंनि॥
अंग - 1384

ऐ प्रिय बन्धुओ! आप लोग मेरा सन्देश गुरू नानक को दे देना कि यदि मेरे शरीर में बल होता तो मैं पैरों के बल नहीं बल्कि सिर के बल चलकर आता।

अब सवाल पैदा होता है कि क्या वास्तव में यह भी सम्भव है? हमने यू. पी. के अन्दर देखा है। वहाँ पर थारू लोग हैं, उनका गुरू नानक देव जी के साथ सीधा सम्बन्ध है। उनका सम्बन्ध हम लोगों जैसा नहीं है। हम लोग तो शब्दों के अलंकार बांध कर अरदास करते हैं, लेकिन उन्हें तो अरदास का पता ही नहीं है। वे लोग तो स पीधा कहते हैं, बाबा जी! मुझे यह परेशानी है मेरी यह परेशानी दूर करो और हैरानी की बात है कि बाबा जी उनकी बात सुन भी लेते हैं।

हमारे घर पर एक राम स्वरूप नाम का नौकर था, जिसकी आयु लगभग 45 वर्षों की थी। उसकी पत्नी की आयु भी लगभग 41-42 वर्षों की थी। ऐसा भी नहीं था कि उनका जीवन बहुत शुद्ध था। वह शराब व तम्बाकू का सेवन भी करते रहते थे लेकिन वे मानते हैं गुरू घर को। नानक मता साहिब पर उनकी अथाह श्रद्धा है, वे कहने लगे हमने दर्शनार्थ जाना है। मैंने सारे श्रमिकों को कहा कि ट्रैक्टर ट्राली ले जाओ और उन्हें दर्शन करवा लाओ। वह महिला (राम स्वरूप की पत्नी) मुझे कहने लगी, बाबू जी! मुझे गुरू नानक देव जी के घर से पुत्र मिल जाएगा? मैंने कहा हां, अवश्य मिल जाएगा। वह बोली, मैं क्या करूँ? मैंने कहा, तुम नहा धोकर मांग लेना फिर वहाँ पर जहाँ पर पंजा साहिब, के सामने पीपल नीचे कह देना। वह सहज स्वभाव ही बात हो गई तथा उस महिला ने उस बात को शत प्रतिशत मान लिया। वह स्नानादि करके चली गई तथा जहाँ पर श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी प्रकाश थे, वहाँ पर खड़ी हो गई। वहाँ पर एक पहरेदार की ड्यूटी लगी हुई थी। वह वहां पर मत्था टेक कर खड़ी हो गई। वह एक ही बात कहती रही बाबा जी! मैं पुत्र लने आई हूँ। जो वहाँ पर ग्रन्थी बैठा था, उसने सहज स्वभाव ही अपना सिर हिला दिया। वह प्रसन्न हो गई कि बाबा जी ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। उसे यह भी पता नहीं था कि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी से मांगना है अथवा ग्रन्थी जी से मांगना है। आस्था व श्रद्धा की बात है। आस्था व विश्वास वालों के बेड़े पार हुआ करते हैं। सभी हैरान हुए। दस महीने बाद उसके घर एक बालक ने जन्म लिया। जिस समय बालक ने जन्म लिया उस समय उसकी आयु 45 वर्ष की थी।

लोग जिस समय वहाँ पर पहुँचते हैं तो कहते हैं कि बाबा जी! मैं दण्डवत् करता हुआ आपके द्वार पर पहुँचूंगा। जिस स्थान से गुरू घर का कलश दिखाई पड़ने लग जाता है, वहाँ पर से वे अपने कपड़े, अपनी घरवाली या अन्य सम्बन्धियों को पकड़ा देते हैं तथा स्वयं लम्बे लेट जाते हैं। फिर एक रेखा खींच लेते हैं फिर खड़े होकर पुनः लेट कर लकीर खींच लेते हैं। इस प्रकार से मार्ग तय करते हुए पहुँचते हैं। छातियों में से रक्त निकलने लग पड़ता है। वे एक ही बात करते हैं, धन्य गुरू नानक! धन्य गुरू नानक! गुरू नानक देव की जय! चार पांच मील तक वे इसी प्रकार करते हैं।

जब बहुत अधिक श्रद्धाभाव हो तभी इस प्रकार के वचन आते हैं कि मैं सिर के बल चल कर आऊँ। राय साहिब कहने लगे भाई मरदाना! मैं गुरू नानक देव जी की कोई

सेवा नहीं कर सका। वैसे मैंने उस समय से पहचान लिया था जबकि सांप ने उसे छाया की थी। इसके बाद जब वृक्ष की छाया उसके ऊपर से न ढली जबकि अन्य वृक्षों की छाया ढल चुकी थी। तीसरी बार जब मैंने देखा कि एक खेत को सचमुच ही गाय, भैंसें चर आई थीं लेकिन जब मैंने निरीक्षण के लिए अपने आदमी को भेजा तो खेत पहले की अपेक्षा भी अधिक लहलहा रहे थे। बस उसी समय मैंने देख लिया था कि यह तो कोई अल्लाह का व्यक्ति है। लेकिन इसका कुछ पता नहीं चल पाता है। महिता कालू को तो बिल्कुल ही पता ही नहीं चल सका। मैंने ही उन्हें दूर भेज दिया। जब वे यहाँ पर थे तब मैं किसी न किसी बहाने से जाकर उनके दर्शन कर आता था। लेकिन अब मेरा शरीर सहयोग नहीं कर पा रहा है वैसे मेरे मन के अन्दर एक लगन लगी हुई है, लेकिन शारीरिक रूप से मैं असमर्थ हो चुका हूँ। यदि नदी है लेकिन उसमें पानी नहीं है तो उसका क्या लाभ है?

जिउं सरिता निशफल बिनबारी।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 469

चन्द्रमा के बिना काली रात व्यर्थ ही है -

हीनमयंक सरबरी कारी।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 469

जैसे पति के बिना स्त्री का जीवन बेकार होता है-

जिउं अनाथ बिन भरता नारी।
तिउं तुम मय बिन देह हमारी।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 469

इसी प्रकार से मेरा शरीर बेकार हो चुका है। भाई मरदाना! तुम्हीं कोई उपाय करो ताकि गुरू जी स्वयं आकर मुझे दर्शन प्रदान कर दें।

भाई मरदाना बोला, महाराज! यदि भाई बाला भी मेरा सहयोग करें तो हम दोनों लोग जाकर गुरू जी को आपकी हार्दिक स्थिति के विषय में अवगत करवाएं। राय साहिब बोले, ऐ भक्तजनों! आप चाहे कुछ भी करो मुझे गुरू जी के दर्शन करवाने की कृपा करो। मेरे मन में तो प्रत्येक क्षण उनके दर्शनों की प्यास ही लगी रहती है।

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई॥
बिलप करे चात्रिक की निआई॥
त्रिखा न उतरै सांति न आवै
बिनु दरसन संत पिआरे जीउ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई
गुर दरसन संत पिआरे जीउ॥ *शबद हज़ारे*

मेरे मन से यही इच्छा बनी रहती है कि कोई आकर मुझे गुरू से मिलवा दे। यदि आप लोग यह महान काम कर दो तो मैं आपका ऋणी हूँगा।

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा
हउ तिसु पहि आपु वेचाई॥
दरसनु हरि देखण कै ताई॥
क्रिपा करहि ता सतिगुरु मेलहि
हरि हरि नामु धिआई॥ *अंग - 757*

भाई मरदाना! मैं क्या बताऊं मुझे न तो रोटी अच्छी लगती है, न मुझे नींद आती है। बस मेरा ख्याल तो उन्हीं की तरफ लगा रहता है। तुम यह उपकार करो, मैं आजीवन आपका आभारी रहूँगा -

करि मरदाने! कारज मेरा। होवों रिणी सदा मैं तेरा।
तव असान कबि मन न भुलाऊं। जे दरशन नानक अब पाऊं। *श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 467*

शरीर के परित्याग से पहले पहले यदि मैं गुरू नानक के दर्शन पा जाऊँ तो यह अहसान मैं कभी भी नहीं भूलूंगा।

करि मु पर इह पर उपकारा।
दरसावहु दरशन इक बारा।
जिउं रंकहि को पारस देई।
जस आमी को आम मिटेई।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 467

जिस प्रकार से गरीब व्यक्ति को पारस मिल जाए उस प्रकार की हालत मेरी हो चुकी है। यदि कोई मुझे गुरू नानक के दर्शन करवा दे तो उसकी कीमत मैं अदा नहीं कर सकता हूँ। मेरी दशा तो उस मछली की भांति है जो पानी से बिछुड़ी हुई है -

जिउ मछुली बिनु पाणीअै
किउ जीवणु पावै॥
बूंद विहूणा चात्रिको
किउ करि त्रिपतावै॥
नाद कुरंकहि बेधिआ
सनमुख उठि धावै॥
भवरु लोभी कुसम बासु का
मिलि आपु बंधावै॥
तिउ संत जना हरि प्रीति है

देखि दरसु अघावै॥ *अंग - 709*

भाई मरदाना! यह अवश्य प्रतीत होता है कि मेरा श्वास चल रहा है लेकिन मेरा जीवन खाली है। कृप्या मुझे नानक से मिलाने का पुण्य हासिल कर लो।

साधु संगत जी! इसे बिरहा कहते हैं, जिस हृदय में वाहिगुरू जी के लिए विरह उत्पन्न नहीं होता है उसके बारे में गुरू जी कहते हैं कि वह हृदय व्यर्थ है -

बिरहा बिरहा आखीऐ
बिरहा तू सुलतानु॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै
सो तनु जाणु मसान॥ *अंग - 1379*

वह तो श्मशान की धरती के सदृश्य है जहाँ पर परमेश्वर के प्रति प्रेम ही नहीं है। परमेश्वर के प्रति प्रेम की निशानी है -

सीने खिच जिन्हां ने खाधी
ओ कर अराम नहीं बहिंदे।
निहुं वाले नैणां की नींदर ओ
दिने रात पए वहिंदे।
इको लगन लगी लई जांदी है
टोर अनंत उन्हां दी
वसलों उरे मुकाम न कोई
सो चाल पए नित रहिंदे। *डा. भाई वीर सिंह जी*

अत: जिस हृदय में वाहिगुरू के प्रति प्रेम नहीं है वह तो श्मशान की भांति निरर्थक हृदय है -

कबीर बिरहु भुयंगमु मनि बसै
मंतु न मनै कोइ॥
राम बिओगी ना जीऐ
जीऐ त बउरा होइ॥ *अंग - 1368*

साधु संगत जी! यह वैराग्य की निशानी होती है। यदि वैराग्य नहीं उत्पन्न हुआ है तो समझ लो कि अभी वह चीज नहीं आई है, जिसके द्वारा परमेश्वर का मिलाप होना है। यदि हृदय में परमेश्वर के प्रति आकर्षण ही उत्पन्न नहीं हुआ है तो परमेश्वर कहाँ से आ जाएगा? परमेश्वर तो प्रेम के वशीभूत है।

अत: इस प्रकार से राय बुलार अपनी विनतियां कर रहा है कि हे मरदाना! एक बार तुम गुरू नानक को ले आओ, फिर मैं उसकी बड़ी से बड़ी सेवा करूंगा। मैं स्वयं को उसके ऊपर न्यौछावर कर दूँगा तथा उसकी सेज पर अपनी आँखों को बिछा दूँगा।

मू थीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा॥
जे डेखै हिक वार ता सुख कीमा हू बाहरे॥
अंग - 1098

इस प्रकार की वैराग्यपूर्ण बातों को सुनकर मरदाने के नेत्रों में से जल बह रहा है कि इतनी लगन! इतना प्यार! और फिर मेरा गुरू बेपरवाह! किस विधि से इसे दर्शन हो पाएंगे? क्योंकि साधु सगंत जी! वैराग्यावस्था को समझ पाना बहुत मुश्किल होता है।

लागी होइ सु जानै पीर॥
राम भगति अनीआले तीर॥ *अंग - 327*

जिसके हृदय में नुकीले तीर घुस गए हैं, उसी को उसकी पीड़ा का पता है, अन्य लोगों के लिए तो यह एक कहानी मात्र है। लेकिन भुक्त भोगी को ही वास्तविकता का ज्ञान होता है, उसके लिए तो जब तक परमेश्वर का मिलाप नहीं हो पाता है तब तक सुखानुभूति नहीं हो पाती है। क्योंकि -

विछैड़ा सुणै डुखु विणु डिठे मरिओदि॥
बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि॥ *अंग - 1100*

अत: वह कहने लगा, भाई मरदाना! मैं तुम्हारे अहसान को कभी भी भूलूँगा नहीं। एक बार मुझे अपनी जिन्दगी में गुरू नानक के दर्शन करवा दो क्योंकि अब मेरे जीवन के कुछ ही दिन शेष रह गए हैं। अब मेरे मन में यही बात आती रहती है कि क्या मुझे गुरू नानक के दर्शन हो भी जाएंगे? मरदाने ने कहा, महाराज! आप भाई बाला जी को भी कह दो, हम दोनों लोग गुरू जी के चरण पकड़ कर उनसे सारी वार्ता कथन करेंगे।

भाई बाला जी को भी बुला लिया गया तथा कहा भाई बाला जी! तुम दोनों लोग जाओ और मेरी विनती को गुरू नानक के द्वार पर जाकर कहो। मुझे उनके दर्शनों के बिना जीना अब बहुत मुश्किल है। मैं अपने प्रत्येक श्वास में गुरू नानक की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरे मन में गुरू दर्शनों की लालसा प्रत्येक क्षण बनी रहती है।

पंथु निहारै कामनी लोचन
भरी ले उसासा॥
उर ना भीजै पगु न खिसै
हरि दरसन की आसा॥ *अंग - 338*

दोनों को गुरू नानक की तरफ भेज दिया। वे सात दिन व सात रातों के बाद गुरू नानक के पास पहुँच जाते

हैं। उन्होंने महाराज जी को सारा वृत्तान्त सुनाया। माता पिता आदि के बारे में बताया तथा कहा महाराज जी! राय बुलार के नेत्रों में से प्रतिक्षण वैराग्य के आंसू बहते रहते हैं। वे तो किसी अन्य के साथ बात ही नहीं करते हैं। उनके मन में केवल एक ही लगन लगी रहती है कि किस प्रकार से वे आपके दर्शन कर सकें। हमें भी उन्होंने बार-बार कहकर भेजा है तथा साथ ही कहा है -

जे होवहि बल तन विखै आवों सिर के भार।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग - 469

महाराज जी! उसकी वैराग्य भावना बड़ी प्रबल है। कृप्या आप उसे तो अवश्य ही दर्शन प्रदान करो।

गुरू नानक जी कहने लगे, भाई बाला! भाई मरदाना! जितनी खींच उसके हृदय में है उससे कहीं अधिक मेरे हृदय में है। हमारा भी मन उससे मिलने के लिए विह्वल है।

सतगुरू का यह स्वभाव ही है कि जब कोई सिक्ख उसे याद करता है तो वह उसे, उससे भी अधिक याद करता है।

चरन सरनि गुर एक पैंडा जाइ चल,
सतिगुर कोटि पैंडा आगै होइ लैत हैं॥
एक बार सतिगुर मंत्र सिमरन मात्र,
सिमरन ताहि बारंबार गुर हेत हैं॥
भावनी भगति भाइ कउडी अग्रभाग राखै,
ताहि गुर सरब निधान देत हैं॥
सतिगुरु दइआ निधि, महिमा अगाधि बोधि,
नमो नमो नमो नमो नेति नेति नेति हैं॥ कबित्त 111

भाई मरदाना! हमारे हृदय में भी बहुत खींच पड़ रही है। चलो तलवंडी वापिस चलते हैं। गुरू नानक महाराज जी, भाई बाला जी, भाई मरदाना जी तलवंडी आ गए। उस समय श्री गुरू नानक देव जी, भाई बाला के पिता चन्द्रभान के कुएं पर बैठ गए और उन दोनों को भेज दिया। जब वे दोनों गए तो माता पिता व सारे परिवार को सूचना मिली। पहले महिता कालू जी को पता लगा। वे वहाँ पर पहुँचते हैं, जाकर देखते हैं कि यह क्या बना हुआ घूम रहा है? सिर के ऊपर एक वस्त्र ओढ़ा हुआ है तथा अधोवस्त्र के रूप में भी एक कपड़ा लपेटा हुआ है। वस्त्र कोई भी पहना नहीं है तथा दो चद्दरों को उठाकर घूम रहा है। इसने यह क्या हाल बना लिया है? कितना सुन्दर लगता था, जब यह मोदीखाने में कार्यरत था। महिता कालू जी की भौहें चढ़ी हुई हैं तथा होंठ कांप रहे हैं। न जाने क्या बात कहना चाह रहे थे लेकिन लालू जी कहने लगे कि भ्राता जी! नानक जी बड़ी देर के बाद वापिस आए हैं। आप कुछ सब्र में रहना। अभी ही अपना नजला उतारने मत लग पड़ना, वे पूर्ण पुरुष हैं। भ्राता जी की बात मानकर महिता कालू जी चुप रहे, लेकिन अन्दर से शरीर कांप रहा है क्योंकि आन्तरिक भाग में क्रोध आया हुआ है। माता जी दौड़ कर आते हैं, उन्होंने (गुरू) नानक को अपने आलिंगन में ले लिया तथा अकथनीय वैराग्य किया। न तो वह अपने आलिंगनबद्ध हाथों को छोड़ती हैं और न ही रोने से हटती हैं। माता के नेत्रों में से इतना जल बह रहा है कि गुरू जी के शरीर पर भी अश्रुधार वह चली।

गर सों लाइ नीर द्रिग जाई।
महां मोह माता बिरमाई।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 471

जिस प्रकार से किसी गरीब को पारस मिल जाता है तो वह उसे छोड़ता नहीं है, इस प्रकार से माता उसे छोड़ नहीं रही है।

अस्त्रपात सों भीगे अंगा।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 471

गुरू जी के अंग आंसुओं से भीग गए -

मनहु प्रेम परवाहि उमंगा।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 471

ऐसे प्रतीत हो रहा है मानो प्रेम प्रवाह का कोई दरियाव बह रहा है। अतः माता ने काफी समय बाद अपने हाथोंों को छोड़ा। उस समय महाराज जी खड़े हैं। माता ने उस समय कहा, पुत्र! घर चलो! आप घर चल पड़ते हैं। कुछ देर बातचीत चली सब कहने लगे कि राय जी आपको बहुत याद करते हैं। महिता कालू जी तथा लालू जी दोनों भाई सलाह करते हैं कि यहाँ पर इसे कुछ नहीं कहना है। वहां पर राय जी के सामने ही कहेंगे। क्योंकि राय जी इन्हें बहुत प्रेम करते हैं, ये उनकी बात तो अवश्य ही मान जाएंगे।

उस समय गुरू नानक देव जी सबके साथ राय बुलार जी के पास पहुँचते हैं। वहां पर राय बुलार जी गुरू नानक को देखकर दंग रह गए। लेकिन गुरू नानक ने, पहले, जैसे कि परमेश्वर, अपनी भक्तों की लाज रखता है, उनके चरणों को स्पर्श करना चाहा लेकिन राय जी ने कहा, हे नानक! देखना ऐसा काम मत करना, मुझे तो दरगाह में भी माफी नहीं मिल सकेगी क्योंकि मेरे नेत्र खुल गए हैं। मैंने तुम्हें

पहचान लिया हे। हे नानक! ऐसा मत करना कि यह इतना बड़ा गुनाह मुझसे उतरे ही नहीं और मैं नर्कों में सड़ता रहूँ, तुम तो स्वयं परमेश्वर हो।

परमेशुर तूं पुरख पुरातन।
पारब्रहम किरपाल सनातन।
जोती रूप अनूप सरूपा।
शाहिनशाह भूप कौ भूपा।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 476

तुम तो बादशाहों के बादशाह, स्वयं परमेश्वर हो।

करूनाकरि बखशहु मुझ स्वामी॥
दीनबंधु सभि अंतरजामी।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 476

हे प्रभु जी! मेरे ऊपर कृपा करो। इतना कहकर उसने गुरू महाराज जी के चरणों पर नमस्कार की तथा हाथ जोड़कर आपके सामने खड़ा हो गया तथा विनती कर रहा है महाराज बहुत जन्म निकल चुके हैं -

कई जनम भए कीट पतंगा॥
कई जनम गज मीन कुरंगा॥
कई जनम पंखी सरप होइओ॥
कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥ *अंग - 176*

महाराज! अब मेरा जन्म मरण काट डालो क्योंकि तुम तो स्वयं परमेश्वर हो।

भव बंधन ते करि छुटकारा।
पतित उधारन बिरद तुमारा।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 476

पतितों का उद्धार करना आपका धर्म है। कृपा करके अब मेरे बन्धनों को काट दीजिए। अब पुनः आवागमन के चक्र में न आऊँ।

जिउं जिउं बिनै दीन हुइ करिई। तिउं तिउं राइ मोह तम टरिई।
देख दीनता अधिक दयाला। रिदै प्रसीदति भये बिसाला।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अंग 476

वह ज्यों-ज्यों रो-रोकर विनतियां करता है, त्यों-त्यों उसकी अन्धकार पूर्ण बुद्धि, दूर होकर, वह प्रकाशमय होती जाती है। श्री गुरू नानक जी का पवित्र हाथ उठा और जब वह राय जी के सिर पर टिका तो उस समय उसके जन्म जन्मान्तरों के जो पाप थे, व सब दूर हो गए।

करि हुकमु मसतकि हथु धरि
विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ॥
सहि उठै नउ निधि पाईआ॥ *अंग - 473*

उसके बज्र कपाट खुल गए तथा उसकी सुरति वहाँ पहुँच गई, जिसके बारे में कथन है -

नउ दरवाजे काइआ कोटु है
दसवै गुपतु रखीजै॥
बजर कपाट न खुलनी
गुर सबदि खुलीजै॥
अनहद वाजे धुनि वजदे
गुर सबदि सुणीजै॥
तितु घट अंतरि चानणा
करि भगति मिलीजै॥
सभ महि एकु वरतदा
जिनि आपे रचन रचाई॥
वाहु वाहु सचे पातिसाहु
तू सची नाई॥ *अंग - 954*

गुरू जी ने अपनी दृष्टि करके माया के आवरण को दूर कर दिया।

गिआन अंजनु गुरि दीआ
अगिआन अंधेर बिनासु॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु॥ *अंग - 293*

अब वह क्या देख रहा है कि चारों तरफ गुरू नानक ही दिखाई पड़ रहा है, उसके नेत्र खुल गए वह जिधर भी देखता है उसे गुरू नानक ही दिखाई पड़ रहे हैं।

गुरहि दिखाइओ लोइना॥
ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि
तूहं तूंही मोहिना॥ *अंग - 407*

जो आँख बन्द पड़ी थी, वह खुल गई। जिसके लिए हम जप तप करते हैं, दान करते हैं, तीर्थयात्रा करते हैं, दीवान सुनने के लिए दूर दराज से आते हैं। उसकी वही आँख गुरू नानक ने खोल दी। हम सबका भी यही प्रयोजन होता है कि माया का अन्धकार दूर हो जाए तथा वास्तविकता का प्रकाश हो जाए। अब उसे कण कण में गुरू ही दिखाई पड़ता है।

सो अंतरि सो बाहरि अनंत॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत॥
धरनि माहि आकास पइआल॥
सरब लोक पूरन प्रतिपाल॥

(शेष पृष्ठ 25 पर)

बाबाणियाँ कहानियाँ

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, अंग - 25)

ये गुरबाणी के बाण हमें घायल नहीं कर रहे क्योंकि हमने बुल्ट प्रूफ जैकटें पहनी हुई हैं, अब हमारे हृदयों में से नहीं निकल रहा -

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई।
बिलप करे चात्रिक की निआई।
त्रिखा न उतरै सांति न आवै।
बिनु दरसन संत पिआरे जीउ।
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई
गुर दरसन संत पिआरे जीउ॥ *शबद हज़ारे*

हमें इस वैराग्य के झंझट में पड़ने की जरूरत ही क्या रह गई, हम तो पूरे ज्ञानी बन गये और हमें ज्ञान हो गया कि वाहिगुरू हर स्थान पर है इस बात को हमारे ज्ञानी लोग चिल्ला-चिल्ला कर सुना रहे हैं कि वह प्रत्येक के अन्दर है। पर मेरे सतगुरू इन ज्ञानियों को महत्व नहीं देते बल्कि इसके स्थान पर इन्हें मुर्दा कहते हैं -

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि डिआनी धनवंत।
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत॥
अंग - 253

आप जी जब कीर्तन किया करते थे आम तौर पर बाबा फरीद जी की तपस्या के बारे में बहुत ही विस्तार से वर्णन किया करते थे जिसमें वर्णन किया करते थे कि बाबा फरीद जी का शरीर सूख कर हड्डियों की मुट्ठी भर रह गया। यहाँ तक भ्रम पड़ता था कि कौवे भी मुर्दा समझ कर पैरों की तली में से चोंचे मारा करते थे। आप जी के ये शब्द जिनमें एक कौवे को आप जी बहुत प्यार के साथ कह रहे हैं कि हे कौवे! तूने मेरा मांस तो खा लिया, मैंने तुम्हें मना नहीं किया, देखना मेरे नेत्र मत खा लेना क्योंकि मैंने अपने प्यारे प्रीतम के दर्शन इन नेत्रों से करने हैं। यह व्याख्यान इतना प्रबल हुआ करता था कि सुनकर श्रोताओं के मन में चाव उठता था और अनेक प्रेमी ऐसी तितिक्षा के बारे में सुनकर अमृत बेला में उठने लग गये। गाँवों में गुरसिखों ने अमृत बेला में उठना बाहर शौचादि की क्रिया करके बाहर बाहर ही गुरूद्वारा साहिब में कुण्डों में स्नान करना। गुरूद्वारा साहिब की परिक्रमा में बैठ कर किसी ने सुरत से बाणियों का पाठ करना, किसी ने गुरू शब्द की आराधना करना। उन दिनों जीवन में आज जैसे चालाकी नहीं हुआ करती थी। वास्तव में अन्दर से उत्साह उठता था कि हम भी प्रभु के दर्शन करें। सन्त महाराज जी के दो दीवान पूर्णमाशी और सक्रान्ति एक बहुत बड़ी रहमत थे, उन जिज्ञासुओं के लिये, जिनके अन्दर प्रभु प्यार की धारा बहती रहती थी। उस समय शारीरिक आयु मेरे शरीर की बहुत कम थी पर जब मैंने पहली बार ढक्की में जाकर आपका कीर्तन सुना उसका बहुत गहरा प्रभाव मुझ पर पड़ा। रहिरास साहिब के पाठ के बाद, अरदास के बाद, आप जी ने कीर्तन शुरू किया, दीवान में से गैस के लैम्प उठाकर दूर संगतों के पीछे रखवा दिये। दीवान में पूरी तरह से एकाग्रता छा जाया करती थी। कोई भी श्रोता इधर-उधर नहीं देखा करता था। आप जी ने दो बजे उसी तरह कीर्तन करते हुये श्री आसा जी की वार का आरम्भिक शब्द पढ़ लेना, उसी समय आप जी खड़े होकर बाजा सामने टेबल पर रख कर कीर्तन किया करते थे और पूरी तरह से वैराग का रूप ही बने होते थे, तीन चार छक्के पढ़ कर आप जी पौने घंटे के लिये शौचादि करने तथा स्नान करने के लिये, दीवान में से पिछली ओर से अपने कमरे में चले जाया करते थे और बहुत जल्दी स्नान करके, वस्त्र पहन कर वैसे ही बिना कुछ खाये, पढ़े जा रहे छक्के श्लोक से कीर्तन शुरू कर देना। कीर्तन तब तक हुआ करता था जब तक बैठी संगत, एक दूसरे को देख न सकती हो और पौ फटने लगती थी, फिर आप जी ने कीर्तन का भोग डालना। अरदास करनी, प्रसाद लेने के उपरान्त संगतें लंगर में पंक्तियां बना कर बैठ जाया करती थीं। उस समय गर्म-गर्म मिस्सी रोटियां, लस्सी, दूध, चाय आदि के साथ, संगत भोजन किया करतीं। चाय अभी नई-नई शुरू हुई थी, बहुत से प्रेमी चाय नहीं पीते थे, लस्सी

पिया करते थे। रोटी खाने के लिए आचार आदि मिल जाया करता था। उसके बाद कामगर आदमी, स्त्रियां अपने अपने घरों को पैदल ही चले जाया करते थे। उन दिनों न तो आज कल की तरह रास्ते हुआ करते थे और न ही आजकल जैसी बसें आदि की सहुलियत होती थी। कभी कभी किसी न किसी गाँव में से यदि कोई ट्रक निकल रहा होता तो गाँव के सारे बच्चे उस ट्रक के पीछे दौड़ा करते थे और ट्रक को देख देख कर खुश हुआ करते थे। राड़े साहिब को केवल नहर की पटरी के जितने रास्ते अलग अलग ओर से आते थे, वे सभी रेतीले टीलों से भरे हुआ करते थे जिनमें चलने के लिये चमड़े की जूती उतार कर चला जा सकता था। खेती आदि का काम इतना अधिक हुआ करता था कि कहीं भी जाने की फुर्सत ही नहीं हुआ करती थी। खेतों में पानी देने के लिये रहट (हलट) और इससे पहले चरस चला। चकबन्दी न होने के कारण खेत दूर दूर गाँव के चारों ओर बिखरे बिखरे हुआ करते थे और खेत तक पहुँचने के लिये काफी समय लग जाता था, आम तौर पर सारे खेती के धन्धे किसान को स्वंय करने पड़ते थे। आजकल की तरह खेती बाड़ी करने के लिये तथा और काम करने के लिये प्रवासी मज़दूर नहीं आया करते थे। इसलिए खेती करना पशुओं की देख भाल करना तथा घर के छोटे मोटे काम करने अपने जिम्मे हुआ करते थे पर यदि अब उस समय का और आधुनिक समय की तुलना करें तो बहुत हैरानी होती है कि आज कल के बच्चे माँ बाप का कहना नहीं मानते। उस समय बच्चे बड़ों का आदर किया करते थे, कहना माना करते थे, खाली कोई होता ही नहीं था। पढ़ाई का रिवाज़ बहुत कम था, जब बच्चा डण्डी पकड़ कर पशुओं को वापिस घर लाने लायक हो जाता था उस समय उसे ढोरों (पशुओं) का पाली बना दिया जाता था। उसी समय से उसे अपने हाथों से काम करने की सूझ आ जाया करती थी और वह फालतू समय बर्बाद नहीं किया करता था। 13-14 साल का बच्चा हल चलाने लग जाता था। मुझे याद है कि सख्त ज़मीन में हल चला चला कर पेट पक जाया करता था। माताएं दूध में घी डाल कर पीने के लिये देती थीं। स्कूल बहुत ही कम हुआ करते थे स्कूल में बच्चों को दाखिल करने के लिये मास्टर जी को घर घर जाकर कहना पड़ता था कि स्कूल में बच्चों को पढ़ाओ। मुझे याद है कि एक बार हमारे पड़ौसी जिनका नाम सरवण दास था, वह दूर के गाँव के स्कूल में मास्टर लगे हुये थे, स्कूल भटिन्डा जिले के किसी गाँव में था, मुझे उनके पास ठहरने का मौका मिला तो उन्होंने बताया कि बहुत कम बच्चे स्कूल में पढ़ने आते हैं। माँ बाप बच्चों को स्कूल में बहुत कम दाखिल करवाते हैं। मैं स्वंय घर घर जाकर कमज़ोर कमज़ोर बच्चों को जो स्कूल जाना पसन्द नहीं करते, ले कर आया करता था, इसके विपरीत राड़े साहिब के चारों ओर बहुत बड़े गाँव थे जैसे कि घुडाणी, घलोटी, धमोट आदि। यहाँ सरकारी स्कूल थे, माता-पिता बच्चों को पढ़ने के लिए भेज दिया करते थे पर परिवार में से एक या दो को ही पढ़ाते थे, यह हाल किसान (किरती) परिवारों का हुआ करता था जब बच्चा स्कूल से वापिस आता उस समय घर का छोटा-मोटा काम ही उससे करवाया जाता था। गाँव के गुरूद्वारे में सेवा करने वाले ग्रन्थी सिंह आदि जहाँ गुरू घर की सेवा करते थे साथ ही उनका पूरा कर्तव्य बच्चों को पढ़ाने का भी हुआ करता था। गाँवों में जो साधुओं, सन्तों के डेरे हुआ करते थे, वहाँ भी सन्त बच्चों को पढ़ा दिया करते थे, बच्चे काम काज़ में से समय निकाल कर कोई दो घंटे, कोई तीन घंटे तथा गुरूद्वारा साहिब तथा डेरों में पढ़ने जाया करते थे और फिर अपने काम में जुट जाया करते थे। एक बात बहुत हैरान कर देने वाली है कि जो गुरूद्वारों में बच्चे पढ़ते थे या महापुरुषों के डेरों में पढ़ते थे उन्हें दो तीन सालों में ही गुरूबाणी का शुद्ध पाठ सिखा कर अखण्ड पाठी बना देते तथा कठिन शब्दों के अर्थ याद करवा देते थे। वे दो तीन साल में अच्छे विद्वान बन जाया करते थे। उसे हर प्रकार के पहाड़े जबानी याद हो जाया करते थे और प्रारम्भिक सवाल हल कर लेने की उसमें क्षमता आ जाया करती थी। जल्दी ही वे गुरबाणी की कथा करने योग्य हो जाया करते थे। उसे पौराणिक कथाएं, रामायण, महाभारत तथा और धार्मिक ग्रन्थ याद हो जाया करते थे। आम तौर पर गुरू ग्रन्थ साहिब जी का पाठ कराने से पहले बाल बोध पढ़ कर भी पाँच ग्रन्थी की संज्ञा दी जाती थी उसके बाद 22 वारें भगत बाणी पढ़ाई जाती थी। भगत बाणी के साथ साथ हनुमान नाटक, भांबर स्मृति, विचार सागर और प्रबोध चन्द्र नाटक, भाई गुरदास जी की वारें तथा कवित्त सवैये, बहुत सोच विचार कर पढ़ाये जाते थे। दस ग्रन्थी जिसमें गुरू दसवें पातशाह की बाणी दर्ज़ होती है वह भी पढ़ाई जाती थी। तीन या चार साल की पढ़ाई के बाद आज कल के ग्रेजुएट से अधिक पढ़ाई उन बच्चों की हुआ करती थी। पाँच बाणियां, सुखमनी साहिब, श्री आसा जी की वार, उन बच्चों के जबानी याद हुआ करते थे और वह बाजे के साथ सुन्दर कीर्तन भी कर लिया करते

थे। इस प्रकार मन्दिरों, मस्जिदों में पाठशाला तथा स्कूल हुआ करते थे। मस्जिद में कुरान शरीफ का पाठ करवाया जाता था। चाहे आजकल जैसी नियम बद्ध पढ़ाई तो नहीं हुआ करती थी पर वे पढ़े लिखे मूर्ख श्रेणी में नहीं गिने जाते थे क्योंकि उन्हें परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त होकर एक उच्च जीवन की प्राप्ति हो जाया करती थी। जब हम आजकल की पढ़ाई देखते हैं तो यह विद्या चरित्रहीन, गुस्ताख, निकम्मे, आवारा-गर्द, अनुशासन हीन जीवन वाले बच्चे निर्माण करती है। जिनके मनों में अशान्ति होने के कारण संसार में अशान्ति ही पैदा कर रहे हैं। यही कारण है कि गुरूद्वारों तथा डेरों में पढ़े हुये विद्यार्थियों का जीवन एक अच्छे साधु, सन्त जैसा हुआ करता था। उच्च जीवन होने के कारण चाहे आर्थिक साधन बहुत ही कम थे पर फिर भी तृष्णा की आग, उन्हें सताया नहीं करती थी। सुख शान्ति के साथ अपने गाँवों में रहा करते थे। जब सन्त महाराज जी राड़े साहिब वाले ढक्की में तितिक्षा कर रहे थे तथा उस समय अलग अलग गाँवों से बहुत सारे जिज्ञासु जो प्रभु के मिलाप की तीव्र इच्छा रखते थे इस राड़ा साहिब के स्थान पर पहुँचने शुरू हो गये, जिनका जीवन प्राचीन समय के ऋषियों-मुनियों के रहन-सहन की तरह कलयुग में प्रत्यक्ष रूप में प्रकट पहाड़ा दिखाई देता था। जब उनकी लगन को याद करता हूँ तो हैरान रह जाता हूँ कि उनके शरीर कितनी कठोर तितिक्षा को सहन कर सकते थे। ऐसे प्रेमियों ने एक बार सन्त महाराज जी के पास प्रार्थना की कि महाराज जी जब हम अपने पूर्वज हो चुकी रूहानी हस्तियों के बारे में सुनते हैं कि वह जंगलों में रह कर कन्द मूल खाकर अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को बहुत ही सीमा में बान्ध कर तप, तपस्या किया करते थे तो हमारे मन में शौक पैदा होता है कि हम भी वही कठिन साधना करें। यह बिछुड़ी हुई जीव आत्मा अपने प्रभु में अभेद हो सके। बहुत सारे प्रेमी इक्ट्ठे होकर सन्त महाराज जी के पास आए और इस बात की प्रार्थना की कि महाराज! हमारा मन करता है कि हम मौन धारण करके, मौन रख लें और एक रस प्रभु के सुमिरन में लीन हो जायें। सन्त महाराज जी उनके वचन सुनकर कहने लगे कि हमें बहुत प्रसन्नता हुई है कि आपके अन्दर प्रभु मिलाप के लिये वैराग उत्पन्न हुआ है। दो प्रकार की तितिक्षा हुआ करती है। एक को सहज तितिक्षा कहते हैं, दूसरी को हठ तितिक्षा कहते हैं। गुरू घर के अन्दर चाहे किरत (कर्म) का बहुत महत्व है पर फिर भी यदि कोई भजन में सचमुच लीन होना चाहे तो उसके लिये बन्धन नहीं है। सहज के जीवन के बारे में भाई गुरदास जी अपनी वार में लिखते हैं कि मैं कुर्बान जाता हूँ उन सिखों पर जो पहर रात रहते उठकर, अमृत बेला में स्नान करते हैं, एक मन होकर गुरू मन्त्र की आराधना करते हैं और साधु संगत के दरबार में जा विराजते हैं। वहाँ गुरबाणी गाते और सुनते हैं तथा मन को प्रभु के साथ इकमिक करते हैं और अति प्यार के साथ गुरूपर्व मनाते हैं और अपनी सेवा का फल प्राप्त करते हैं। इसी तरह से आप फ़रमान करते हैं कि मैं उस गुरसिख पर सब कुछ कुर्बान करता हूँ जिसमें नम्रता (गरीबी) आ जाये जो पर नारी के पास नहीं जाते, बेगाने धन को हाथ नहीं लगाते, पर निन्दा सुनकर उसे मना करते हैं, पाप की कमाई इक्ट्ठी न करने के लिए कहते हैं आप सतगुरू के उपदेश का पालन करते हैं तथा दूसरों को समझाते हैं और सुल्प सी निद्रा शरीर के लिए करते हैं। इन रहतों को मानने वाला गुरसिख सहज में समा जाया करता है तथा इससे आगे और लिखते हैं कि मैं उस पर भी कुर्बान जाता हूँ जिसका विश्वास अति श्रद्धा से भरा हुआ हो तथा गुरू और परमेश्वर को एक समान समझे, दूसरा भाव उसके अन्दर बिल्कुल भी न आये। अवगुणों को छोड़कर गुणों को धारण करके जीवन व्यतीत करे। किसी को जुबान से बुरा न बोले, किसी के साथ कोई चालाकी धोखा न करे। धर्म की कमाई में से दान करे तथा परोपकार करके प्रभु के प्यार का रसानन्द ले, ऐसा गुरसिख दरगाह में मान प्राप्त करता है। सो इसी प्रकार आन्तरिक रहतों के बारे में आप फ़रमान करते हैं कि पहर रात आलस त्याग कर गुरसिख जाग कर स्नान करे तथा नाम, दान, स्नान अपने जीवन में दृढ़ करके, मीठा, बोले, विनीत होकर चले, नेक कमाई के लिए शुभ कार्य करे। जो गुरू महाराज जी ने माया के अंजलि (दोनों हाथों से भर कर) बख्शे हैं तो अभिमान मत करो बल्कि विनम्रता धारण करके जीवन व्यतीत करें और जहाँ महापुरुष कीर्तन करते हों, वहाँ दिन हो या रात को पहुँच कर हाज़िरी भरे। शब्द सुरत की कमाई द्वारा गुरू के ध्यान में लीन हुआ मन को बचा कर रखे। आशाओं तथा अन्दशों से मन को ऊँचा रखकर इनसे बचे। सो इस प्रकार के उपदेश देकर आप जी ने फरमाया कि प्यारे! जो हम उपर्युक्त वचन कर रहे हैं यदि हम नियमों में पूरी तरह से लाकर भजन बन्दगी करें तो सहज ही नाम जपते हुये, सेवा करते हुये, उच्च अवस्थाएं प्राप्त हो जाया

करती हैं, पर यदि नाम इतना अरूढ़ हो जाये कि बात चीत करते हुये भी रस न टूटे, ऐसा प्रेमी सहज ही मौन अवस्था में से गुज़र रहा होता है।

(पृष्ठ 21 का शेष)

बनि तिनि परबति है पारब्रहमु॥
जैसी आगिआ तैसा करमु॥
पउण पाणी बैसंतर माहि॥
चारि कुंट दह दिसे समाहि॥
तिस ते भिंन नही को ठाउ॥
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ॥ *अंग - 294*

गुरू ने उसके पांचों भ्रम दूर कर दिये तथा परमेश्वर का साकार रूप में दर्शन करवा दिया। अब वह जिधर देखता है उसे गुरू नानक ही नजर आता है। परमेश्वर से उसकी जो दूरी बनी हुई थी, उसे समाप्त कर दिया। वह तो अब गुरू नानक का रूप ही बन गया। गुरू ने उसे अब अपना ही रूप बना लिया।

अतः इस प्रकार से गुरू प्यार के द्वारा ही भीगता है, धन दौलत से उसका कोई लगाव नहीं है। यह ठीक है कि वह राजा था, लेकिन वह एक अलग बात है, यहाँ तो प्यार का ही सौदा होता है। राय बुलार प्यार वाला था, जब प्यार की प्रबलता आई तब फिर उसके सारे बन्धन दूर हो गए तथा गुरू ने उसे वास्तविकता की झलक दिखला दी।

जिमी जमान के बिखै समसति एक जोत है
ना घाट है न बाढ है न बाढ घाट होत है।
अकाल उसतति

अतः उसके नेत्रों के अन्दर वह ज्योति आ गई जो कि कण-कण में परमेश्वर को देखती है। विचार का तात्पर्य है कि परमेश्वर धन दौलत से वश में नहीं आता है, न वह किसी राग विद्या से प्रभावित होता है, न वह दान आदि से प्रभावित होता है।

सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा॥
तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा॥ *अंग - 962*

जो प्यार करता है, उसके लिए अब भी गुरू दूर नहीं है क्योंकि गुरू नानक पारब्रह्म परमेश्वर है। निःशंक संसार के अन्दर बहुत से गुरू हैं, लेकिन पारब्रह्म गुरू केवल गुरू नानक या गुरू ग्रन्थ साहिब ही हैं। शेष सब लोग गुरुमुख हुआ करते हैं। गुरुमुखों की यह ड्यूटी हुआ करती है कि संसार को सीधे मार्ग पर चलाना है। परमेश्वर का मार्ग बताना स्वयं नाम जपना तथा दूसरों को जपाना है। स्वयं परमेश्वर से मिलना तथा दूसरे लोगों को मिलाना, गुरुमुखों का प्रमुख कार्य है।

इस प्रकार आप सब श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी पर निश्चय रखो, किसी भी तरफ डोलो नहीं। यहाँ पर इस घर में सब कुछ है, इसे छोड़कर किसी और तरफ जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि कहीं फर्क है तो हमारी तलाश में फर्क है। अभी तक हमें कोई ऐसा मिल ही नहीं सका है जो कि हमें परमेश्वर से मिलवा दे।

इस प्रकार से साधु संगत जी! हम लोगों ने जो प्यार के वचन किए हैं इनके बारे में, बहुत कम लोगों को पता है कि राय बुलार का गुरू नानक साहिब से इतना घनिष्ठ प्यार था। प्यार के इस खेल में जाति वगैरह का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। राय बुलार जाति का मुसलमान था, परन्तु गुरू नानक के प्रेम में इतना लीन हुआ कि उनका ही रूप बन गया। अब समय अनुमति प्रदान नहीं कर रहा है। अतः अब यहीं पर समाप्ति है।

आवश्यक निवेदन

रिन्युवल का चन्दा भेजने के लिए मेंबरशिप नम्बर (सदस्यता संख्या) तथा रिन्युवल तारीख (पुनर्नवीनीकरण तिथि) का व्यौरा अवश्य दिया जाए तथा यह भी बतलाया जाए कि चन्दा, रिन्युवल के लिए है अथवा नई मेंबरशिप प्राप्त करने के लिए प्रेषित किया गया है।

यदि किसी प्रेमी पुरुष ने आत्म मार्ग मैगजीन के लिए चन्दा जमा करवाया हो और उसे मैगजीन न पहुँच पा रहा हो, तो उसे जमा करवाई गई रकम का रसीद नम्बर आदि लिखकर आत्म मार्ग कार्यालय से सम्पर्क करना चाहिए।

'आत्म मार्ग' एक धार्मिक मैगजीन है, इसके अन्तर्गत श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की वाणी छपी हुई होती है, इसलिए समस्त पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि कृप्या इसका प्रयोग रद्दी पेपर की भांति न किया जाए। यदि आप पुराने मैगजीन को रखना नहीं चाहते हैं तो उन्हें हमारे किसी भी वितरण केन्द्र पर सहर्ष वापिस कर सकते हैं।

गुरू तेग बहादुर जी

(शहीदी दिवस - 12 दिसम्बर, 2018)

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

सतिनाम श्री वाहिगुरू,
धंन श्री गुरू नानक देव जीओ महाराज

डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ॥
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ॥ अंग - 256

फिरत फिरत प्रभु आइआ परिआ तउ सरनाइ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ॥अंग - 289

धारना - लेखे विच ला लओ जी,
जनम तुम्हारे लेखे

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि
अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै
जन कउ पूरनु दीजै ॥ 1 ॥
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥
कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ
इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ
चिर भइओ दरसनु देखे ॥ ***अंग - 694***

साधु संगत जी! अपनी चित्त वृत्तियों को एकाग्र करते हुए, नेत्रों के द्वारा गुरू स्वरूप का ध्यान करो, कानों के द्वारा गुरवाणी-विचार श्रवण करो तथा बुद्धि के द्वारा विचार करके उसे अपने हृदय में धारण करो। जब इस ढंग से हम लोग सत्संग करेंगे तो फिर हमें इसका पूरा-पूरा लाभ प्राप्त होगा। आज का जो दिन है, यह बहुत ही महान है, इसे बलिदान दिवस के रूप में, सारे सिक्ख जगत में बहुत ही श्रद्धा भावना के साथ मनाया जाता है। इस प्रकार से अन्य लोग भी गुरू जी के बलिदान के कारणों को जान जाते हैं, फलस्वरूप उनका सिर भी श्रद्धा से झुक जाता है। दरअस्ल श्री गुरू तेग बहादुर महाराज जी ने इस दिन एक अद्वितीय शहादत देते हुए एक बहुत बड़ी घटना को अंजाम दिया -

कीनो बडो कलू महि साका।

कल्युग के अन्दर यह एक बहुत बड़ी घटना घटित हुई है। अब यहाँ एक प्रश्न प्रायः मन में आता है कि इसकी पृष्ठभूमि क्या है? दरअस्ल पहले राजाओं के जो राजभाग थे उसमें इस्लाम अपने आप में बहुत अच्छा था। महाराज जी कहते हैं कि जो असली मुसलमान है उसका दिल मोम के सदृश्य नर्म हो और वह कभी किसी के दिल को न तोड़े -

जे तउ पिरीआ दी सिक
हिआउ न ठाहे कही दा।। *अंग - 1384*

बाबा फरीद जी, जो कि इस्लाम के बहुत ही बड़े पूज्यनीय सूफी पीर थे, आप जी इसकी गवाही भरते हुए फुरमान करते हैं कि यदि तुमने परमात्मा को मिलना है तो फिर किसी के दिल को मत तोड़ो। यह बहुत बड़ी बात है कि मन्दिर तोड़ देने से कुछ नहीं होता है जबकि दिल तोड़ने से बहुत बड़ी बात हो जाती है और उससे वाहिगुरू बहुत नाराज हो जाता है। दरअस्ल वाहिगुरू इस शरीर के अन्दर बसता है, बाहर नहीं। वाहिगुरू जी का जो मन्दिर है वह है - यह इन्सान। उस समय देश व समाज के अन्दर बहुत बड़ी अनीतियाँ चल रही थीं। वैसे तो यदि हम ध्यानपूर्वक विचार करें तो ये अनीतियाँ शुरू से ही चली आ रही हैं। मानव अधिकारों की बात आजकल खूब की जा रही है लेकिन सबसे पहले श्री गुरू जी ने मानवीय अधिकारों की बात की।

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।।
अंग - 15

वे लोग जिन्हें समाज के अन्दर कोई भी पूछता नहीं था, गुरू जी उनके पक्ष में खड़े हो गए। आप बड़े-बड़े लोगों के पक्ष में खड़े नहीं हुए। आप भाई लालो के पक्ष में खड़े

हुए जिसे कि बहुत मेहनत करने के बाद ही दो समय का भोजन प्राप्त हो पाता था। श्री गुरू नानक देव जी उसके घर में जाते हैं। वह भोजन ग्रहण करने के लिए विनती करता है। कुछ समय बाद मरदाना देखता है कि यह तो बहुत अधिक गरीब है। हम लोग तो महाराज जी के साथ उदासियों पर निकले हुए हैं। दरअस्ल जब महाराज जी मोदीखाने में थे तो वहाँ पर कोई बहुत बड़ी बचत नहीं होती थी लेकिन फिर भी महाराज जी के 790 रुपए निकल आए। महाराज जी तेरा-तेरा करके तौलते रहे लेकिन फिर भी महाराज जी की 790 रुपए की बचत हो गई। उस समय के 790 रुपए को यदि हम मुद्रा की क्रय शक्ति के हिसाब से देखें तो वह एक बहुत बड़ी रकम बन जाती है। यदि एक मोटा सा हिसाब लगाएँ तो उस समय का एक रुपया आज के दो सौ रुपए के बराबर है। 790 रुपए को 200 के साथ गुणा करके देख लो तो यह कितनी बड़ी रकम बन जाएगी। यह एक लाख 41-42 हजार रुपए की रकम बन जाएगी। इतनी बचत यदि आज किसी को होती तो उसके घर का रहन-सहन काफी उम्दा किस्म का होना था। उसके घर में भोजन भी बहुत अच्छे प्रकार का बनना था। गुरू जी कितना राशन लुटाते थे, कितना लंगर भी चलाते थे, लेकिन फिर भी इतनी बड़ी बचत गुरू जी की हो गई। अब भाई मरदाना इस प्रकार के माहौल में से निकल कर अचानक भाई लालो के घर आ जाता है। आपका ख्याल था कि गुरू नानक जी बहुत बड़े हैं, आप जहाँ भी जाएँगे आपको बहुत अच्छा खाना मिलेगा। लेकिन जब वह देखता है कि बाजरे की बिना चुपड़ी रोटी है और सब्जी की भुरजी का एक गोला सा रखा हुआ है। वह महाराज जी की तरफ देखने लग पड़ा। महाराज जी बोले, क्या देखते हो? कहने लगा, महाराज जी! इस भोजन के प्रत्येक कौर के साथ पानी की घूँट पीनी पड़ेगी तभी यह अन्दर निगल पाएगा क्योंकि बाजरा भी शुष्क है और सब्जी (भुरजी) में भी कोई तरी नहीं है। गुरू जी बोले, मरदाना! खा कर तो देखो मजा आ जाएगा क्योंकि यह मेहनत की कमाई का अन्न है। मेहनत के द्वारा जो अन्न कमाया जाता है, उसका तो स्वाद ही अलग प्रकार का होता है, जबकि पाप के द्वारा कमाया गया अन्न रसहीन होता है, वह तो रोगों को न्योता देने वाला हुआ करता है। भोजन जितना अधिक स्वाद वाला होगा उसमें से उतना ही दुख अधिक निकलेगा।

भोजन जितना अधिक सादा होगा, स्वास्थ्य उतना ही अच्छा होगा और भजन बन्दगी में उतना ही अधिक मन लगेगा, बीमारी भी नहीं लगेगी। इसीलिए दूसरी तरफ जो मलक भागो के पूड़े थे, कचौरियाँ थीं, माल पूड़े थे, उन्हें गुरू जी के द्वारा तनिक भी पसन्द नहीं किया गया।

अत: श्री गुरू नानक देव जी उन लोगों के के पक्ष में खड़े हो गए जो कि दबे कुचले थे और जिन्हें कोई भी पूछता नहीं था। अब उनका भी तो अधिकार था, उन्हें भी तो परमात्मा ने ही पैदा किया था। संसार के अन्दर किसी भी व्यक्ति को इतना अधिकार नहीं है कि वह किसी दूसरे व्यक्ति को इतना निम्न स्थिति में धकेल दे कि उसकी उन्नति के सारे मार्ग ही अवरुद्ध हो जाएँ और यहीं बस नहीं बल्कि उसे नीच-नीच कहकर दुत्कारा जाए और उसे अपने नजदीक भी आने न दिया जाए। अब आज के समय में इन्हें मानवीय अधिकार कहा जाता है। ये पहले भी दिलाए जाते थे और आज भी दिलाए जाते हैं। सत्युग में भी ये दिलाए गए, त्रेते में भी दिलाए गए और द्वापर में भी दिलाए गए लेकिन वे इस प्रकार के नहीं थे कि जिस प्रकार के कल्युग में दिलवाए गए। कल्युग में जिस समय विदेशी शासकों का राजभाग आ गया, जब गुलामों का खानदान आया, तुगलक वगैरह आए, लोधी आए तो इन सबको महजबी शिक्षा प्राप्त होने के कारण इनके मन में एक दृढ़ विश्वास था कि इस्लाम धर्म सबसे अच्छा धर्म है। वे यह मानते थे कि इस्लाम धर्म जो है यह एक खुदा को मानता है, एक खुदा की पूजा करता है, एक खुदा का नाम जपता है और इसका विश्वास कई जगहों पर बँटा हुआ न होने के कारण इसके अन्दर बहुत बड़ी शक्ति है। यही कारण है कि इसके माध्यम से मनुष्य बहुत जल्दी ही परमात्मा को मिल सकता है, इसके साथ ही उनका यह भी विश्वास था कि कोई व्यक्ति, जितने अधिक अन्य लोगों को इस्लाम में लाएगा उनके पुण्यों में उतनी ही अधिक वृद्धि होगी क्योंकि भूले भटके लोगों को, नास्तिक लोगों को परमात्मा की तरफ ले आना बहुत बड़ा पुण्य कर्म हुआ करता है। यह भी एक नेक विचार था और यह विचार प्राय: सभी धर्मों में हुआ करता है। हम लोग भी तो कहते हैं कि निगुरे लोगों को अधिकाधिक अमृतपान करवा कर उन्हें गुरू के साथ जोड़ दें ताकि इनका भी उद्धार हो जाए, इनका भी मनुष्य जन्म सफल हो जाए। यही ख्याल प्रत्येक धर्म वाले का होता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने धर्म को प्यार करता है और उसकी वृद्धि चाहता है। अत: यह भावना

स्वाभाविक रूप से प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर होती है। लेकिन कल्युग के अन्दर जिस समय इस्लाम धर्म वालों के हमले होने लग पड़े तो उस समय वातावरण उल्टा हो गया।

इससे पहले का वातावरण कुछ अलग प्रकार का था, उनमें यहाँ का एक वर्ग कहता था कि हमारा जो भजन बन्दगी का तरीका है, पुण्य-दान का तरीका है, वह अन्य जातियों को मना था। वे हमारे साथ मिल नहीं सकते हैं, हम जो ओअंकार का नाम लेते हैं, वे इसे नहीं ले सकते हैं। यहाँ तक भी पाबन्दी थी कि महिलाएँ भी ओअंकार का नाम जप नहीं सकती थीं।

यही कारण था कि जब श्री गुरू नानक देव जी ने एकंकार, जो कि सबसे बड़ा मन्त्र था और जिसे कि समस्त मन्त्रों का बीज मन्त्र कहा गया, जन साधारण को दिया तो उस पर बहुत अधिक एतराज किया गया। उस समय गुरू जी को कहा गया कि हे नानक! तुम तो कुमार्गीय हो गए हो, तुम्हारा धर्म भ्रष्ट हो गया है, तुमने तो सारी मर्यादा ही बदल डाली है, छोटी जातियों वालों को तथा महिलाओं को तो ओअंकार कहने का अधिकार ही नहीं है। शूद्र लोगों का क्या हक है कि वह ओंकार कह दें। महाराज जी ने बताया कि इसी परदे में एकंकार है। इसका किसी को दोष नहीं लगता है। लेकिन उस समय की संस्कृति यही थी, कि जो हमारा पूजा पाठ का तरीका है, उसे कोई दूसरा न करे। कल्युग में ये हो गया कि इस्लाम वालों ने कहा कि जो दूसरों का पूजा पाठ का तरीका है, उसे बन्द कर दो और जो हमारा तरीका है, उसे दुनियां में प्रचलित कर दो, क्योंकि यह सब से श्रेष्ठ है। पहले तरीके में श्री रामचन्द्र जी के समय में शुभंक ऋषि यहाँ की जो आदि जाति थी, आदिवासी थे उन्होंने भजन किया। आर्यों का जो वेदों का ज्ञान था, उसका अनुभव करके, उसने 'एको ब्रहम दुतीआ नासति' ब्रह्मज्ञान की अवस्था प्राप्त कर ली। जो उस समय धर्म के ठेकेदार थे, उन्हें बुरा लगा कि दूसरी जाति का आदमी हमारे तरीके से भजन करता है, हमारे ज्ञान का प्रचार करता है। श्री राम चन्द्र जी महाराज के पास शिकायत की। उस समय अचानक एक ब्राह्मण का लड़का मर गया, उन दिनों में धर्म की मर्यादा ही ऐसी थी कि पिता के होते हुए पुत्र की मृत्यु नहीं हुआ करती थी। युद्ध, जंग आदि में तो हो जाया करती थी, लेकिन अचानक नहीं होती थी। उसकी विचार की गई कि कोई दोष है, हमारे देश में शुंभक ऋषि वैदिक तरीके से भजन करता है। इसका कोई हक नहीं है कि ये हमारे धर्म के अनुसार भजन करे। ये हमारे धर्म में नहीं मिल सकता। हम इसे किसी तरीके से भी शामिल नहीं कर सकते। शूद्र जातियां भजन नहीं कर सकती थीं कि ये दो प्रमुख जातियां ब्राह्मण और क्षत्रियों का ही हक है, किसी और का नहीं। शूद्र जाति को तो केवल यही कहा जाता था कि तुम्हारा भला तो सेवा करने में ही है। तुम्हें नया जन्म मिलेगा, तरक्की होगी, तुम वैश्य बनोगे। वैश्य बनकर तुम लोग अमीरी को बढ़ावा दोगे और खेतीबाड़ी करोगे, फिर तुम्हें पुण्यदान का फल ये होगा कि तुम्हें क्षत्रियों में जन्म मिलेगा, फिर धीरे-धीरे ब्राह्मण में आ जाओगे। जातिवाद का यह जाल बहुत बुरी तरह से फैला हुआ था। अतः आखिर में श्री राम चन्द्र जी को विनती की गई, वह तो सब जानते थे, लेकिन विरोध इतना अधिक किया गया कि यदि हमारी बात न मानी गई तो ब्रहम दाह कर लिया जाएगा, ब्राह्मण अग्नि दाह करने लग जाएंगे और ब्राह्मण हत्या का दोष तुम्हें लगेगा। अब श्री राम चन्द्र जी अवतार होते हुए, क्योंकि राजा थे, राजा का नियम होता है। यदि हमारी बात न मानी गई तो उसी नियमानुसार उन्होंने सीता जी का त्याग किया था। जबकि सब जानते थे। उसी नियमानुसार आप सत्लुज नदी के किनारे आकर जब उस आश्रम में प्रवेश करते हैं, उस समय आप उच्चारण करते हैं कि आहा! मैं कहाँ आ गया, कितना सुन्दर वातावरण है। स्वयं ही मन आत्मा से जुड़ रहा है। कितना आनन्द आ रहा है। कितना संगीत सुनाई दे रहा है, यहाँ पर कौन है, जो इस जगह पर तप कर रहा है? जिसकी चरण रज से ये धरती पवित्र हुई है। उस समय जो आचार्य थे, उन्होंने बताया कि ये शुंभक ऋषि का आश्रम है। उस समय शुंभक ऋषि श्री राम चन्द्र जी का सम्मान करने के लिए पुण्य माला आदि लेकर आते हैं। उसे बताया जाता है कि तुम्हें मारने के लिए यहाँ आए हैं। वह कहने लगा कि मेरे धन्य भाग्य हैं कि मेरे शरीर का अन्त इतने पवित्र हाथों से होगा। कितना पवित्र वातावरण बना हुआ है कि वे स्वयं आकर मेरा वध करेंगे। अब वह ऋषि मार दिया गया क्योंकि वैदिक ढंग से भजन करता था।

इसी तरह से, गुलाम प्रथा थी कि जब से मनुष्य बना है तो इसमें एक बहुत ही बुरी कमजोरी थी कि ये गरीबों को पकड़कर जबरदस्ती अपने गुलाम बना लेता था। पूरे संसार में ये प्रथा चल रही थी। गुरू नानक जी ने इसका विरोध

किया। उन्होंने कहा कि गुलाम तो मैं हूँ, परन्तु अपने मालिक का गुलाम हूँ -

मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा।।

अंग - 991

परन्तु यह जो प्रथा चल रही है, उसके बारे में गुरू महाराज जी ने यू.पी. में जाकर रामपुर जिले में, उस जगह चार-पाँच जगह गिरफ्तारियां देकर, गुलाम बने क्योंकि वहाँ पर जगह-जगह आदमी बेचे जाते थे। अब तो वहाँ पर गुरुद्वारा साहिब बन चुके हैं। वहाँ पर खास बाजार लगता था, आदमी बेचने वाला। जो रामपुर नजीवबाद वाले पठान थे, बहुत कठोर थे, वे बड़ी बेदर्दी से राहगीरों को पकड़ लिया करते थे। एक बार भाई हरा जी जो कि गुरू नानक देव जी परम सिक्ख थे, वह पकड़ लिया। इस तरह से वहाँ पर लोगों को पकड़ लिया जाता था। तो गुरू नानक देव जी महाराज वहाँ पर फँसे हुए, लोगों को छुड़ाने के लिए, स्वयं गुलाम बन कर रहे और उन्हें समझाया कि गुलामी बहुत बुरी चीज है, न किसी को गुलाम बनाओ, न ही किसी के गुलाम बनो। लेकिन ये प्रथा फिर भी न हटी। हिन्दू राजाओं की हजारों की गिनती में दास-दास्याँ होती थीं। सिक्ख राजाओं के भी गुलाम हुआ करते थे। उन गुलामों के घर आज तक भी चल रहे हैं। बल्कि गौत्र भी उसी नाम से चल रहे हैं जैसे कि गोले आदि। अतः इस प्रकार से मनुष्य को उसके सारे अधिकारों से वंचित कर के अपना गुलाम बना लेना, उसे कोई तरक्की का अवसर न देना, न ही भजन पाठ का समय देना। अतः यही मजबूरी चली आ रही है। अब यदि हम इस्लाम वालों को ही दोष दें तो यह कतई गल्त है। उनके भीतर एक और विपरीत भावना थी। वह यह थी कि जो इस्लाम का रास्ता है, वहाँ पर हमारा पैगम्बर ही अन्तिम पैगम्बर आया है और यही इस्लाम में आया है। इसलिए जो कल्मा पढ़ेगा, वह दोजक (नर्क) में नहीं जाएगा। यहाँ पर इनका दो प्रकार से प्रचार हुआ है। एक तो सूफी फकीरों ने किया है, उन्होंने प्यार और प्रेम से समझा कर प्रचार किया है। जितने लोगों को सूफी सन्तों ने इस्लाम में शामिल किया है, उतने लोग तलवारों वाले लोग नहीं ला सके। तलवार वालों ने तो उनसे अधिक काट-काट कर मौत के घाट उतार दिए। विपरीत दौर था। यह नहीं सोचा कि आर्यन भी हमारे तरीके से भक्ति कर सकता है। बस यही था कि ये नहीं कर सकते। यदि कहीं राम कह दिया तो उसी समय जीभ काट दी जाती थी। हमारे सिक्खों में ओंकार का नाम नहीं ले सकते थे। यदि कहीं पर वेद मन्त्रों की बात सुन ली जाती तो, उनके कानो में सिक्का भर दिया जाता था। यह क्या थोड़ा जुल्म था? बहुत अधिक क्रूरता थी। हम दूसरों को दोष देते हैं। हमारे यहाँ भी यही था। जिस समय कोई शूद्र राह पर चलता था, तो कहते थे कि इसके पांवों के निशान मिटा दो। उस बेचारे के पीछे एक झाड़ी बाँध दी जाती थी। ये सब करके हम अपने अवगुणों को नहीं देखते। ये तो केवल गुरू साहिब ने देखे, गुरू दशमेश पिता जी ने यह दर्द देखा कि मनुष्य के साथ इतना धक्का क्यों हो रहा है। जो कि नहीं होना चाहिए। हर मनुष्य आजाद जन्मा है, उसे आजाद ही रहना चाहिए। गुलाम नहीं बनना चाहिए। दशमेश पिता जी ने गुलामी को पसन्द नहीं किया।

अतः चलते-चलते समय ने करवट ली, बदल गया। अब ऐसा समय आ गया की सारी दुनिया को इस्लाम में लाया जाए। ताकि सब अल्लाह पाक का नाम लें। हिन्दुओं के देवी-देवताओं को देख ये तर्क करते थे कि ये लोग एक परमेश्वर से बिःमुख होकर बहु देव पूजा में पड़े हुए हैं। इनका एक पर विश्वास नहीं है। इनकी मूर्तियां तोड़ दो, मन्दिर तोड़ दो ताकि ये इस्लाम में आ जाएँ। साथ में यह भी दुष्कर्म किया कि जो नहीं मानता, उसे काफिर का नाम दे दो। काफिर को मारना, पुण्य में गिना गया है क्योंकि काफिर को नास्तिक माना जाता है।

गुरु दसवें पिता जी को बहादुर शाह ने पूछा कि गुरू जी! आप भी एक खुदा को मानते हैं, हम भी एक खुदा को मानते हैं। परन्तु देखो ये एक अजीब बात है कि ये हिन्दू स्वयं ही मूर्तियां बनाकर मन्दिर में रख लेते हैं, फिर सभी मिल कर उसके आगे माथा टेकते हैं। तो आपका इस बारे में क्या विचार है? उस समय महाराज कहने लगे कि बहादुरशाह! महजब किसी को भी पार नहीं लगाता, ये तो भावना पार लगाती है। यदि तुम्हारे इस्लाम में भावना नहीं है, भाव नहीं है, प्यार नहीं है, प्रतीति नहीं है तो पार नहीं लग सकते। खोटा सिक्का कहीं नहीं चलता बाकी ये है कि हमारे लोगों में यह भावना नहीं है।

अतः यदि हिन्दू के अन्दर भावना नहीं है, केवल एक पत्थर को मूर्ति बनाकर पूजना है तो वह तो गल्त है लेकिन अगर उनकी भावना उस मूर्ति के पीछे परमेश्वर को देखने की है तो वह दोष नहीं। वह सच्ची भावना है क्योंकि भक्त

धन्ना ने भोजन करवाया, नामदेव जी ने दूध पिलाया है। महाराज कहने लगे कि उनका धर्म उन्हें मुबारक, हमारा हमें और तुम्हारा धर्म तुम्हें मुबारक। इसमें किसी का दोष नहीं, ये भावना की बात है। इस प्रकार से महाराज ने उनकी बात को नहीं माना। ऐसे ही हम कह दें कि महाराज बुत-पूजा के विरुद्ध थे। महाराज जी का प्रचार कुछ और तरह का था। बात को समझो, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के पीछे यदि आप साक्षात गुरू नानक पातशाह को नहीं देखते हो तो आप अपनी राह से भटक गए हो। यदि तुम्हारे मन में है कि गुरू नानक देव जी बोल रहे हैं, जैसे कि भाई साहिब बाणी बोल रहे हैं और तुम्हारी भावना है कि गुरू नानक साहिब बोल रहे हैं। यह भावना है, इसी से बहुत बड़ा अन्तर हो जाता है। अतः यहाँ अनेकों विचार हैं और गुलामी का रास्ता आरम्भ से ही चला आ रहा है, लेकिन यहाँ उल्टा हो गया कि जो इस्लाम में नहीं आएगा, वह जीवित नहीं रह सकता और कानून बना दिए गए। इस्लामी शरह बना दी गई। किसी का अधिकार नहीं कि वह अमीर बन सके। यदि उसके पास अधिक धन है तो कर लगाकर छीन लो। उसका कोई अधिकार नहीं कि वह अच्छे घोड़े की सवारी कर सके। उसके लिए तो गधा या पांव हैं। यही सजा उसके लिए बहुत है। उसका कोई अधिकार नहीं कि वह गेहूँ का भण्डारा रख सके, वह बस ज्वार खा सकता है। गेहूँ खाना उसका अधिकार नहीं है। क्योंकि वह काफिर का जीवन व्यतीत कर रहा है। उससे सुन्दर वस्त्र भी छीन लिए जाते थे। यदि सुन्दर स्त्री होती तो वह भी छीन ली जाती थी। सुन्दर पत्नी नहीं रख सकते थे। अतः ऐसी उल्झनबाझी चल रही थी। मृत्यु देना ही सही समझा जाता था। बाबर ने मथुरा पर आक्रमण किया और एक लाख कैदी बना लिए। वहाँ आस पास के सब लोग कैद कर लिए गए। अब उसके लोगों द्वारा पूछा गया कि महाराज! अब इनका क्या किया जाए? बाबर ने आदेश दिया कि आज ये काफिर इस्लाम में नहीं लाए जाएंगे। आज इन्हें मृत्यु दंड देना है। पंक्तियों में खड़े कर लिए गए। मृत्यु दंड देने वाले भी आ गए। जल्दी-जल्दी उनके सिर काट रहे हैं। मारे जा रहे हैं। उस समय इतना खून बहाया गया कि तीन बार तम्बू बदलना पड़ा। जब एक लाख लोग मार दिए गए तो इसने दोनों हाथ जोड़कर एक प्रार्थना की कि हे अल्लाह ताला! आज मैंने एक नेक काम किया है। आज मैंने एक लाख काफिर को मार दिया है। अब देखो ये कितनी बड़ी दुःभावना थी। यह नहीं समझते थे कि इस धरती पर सभी परमेश्वर के जीव हैं। कौन है, जो उस प्रभु से बाहर है। ये तो उसी का नूर है -

धारना - इक नूर अल्लाह दा जी,
सारी दुनीआं सारी दुनीआं

अवलि अलह नूरु उपाइआ
कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ
कउन भले को मंदे ॥ *अंग - 1350*

यह भूल कर कि उस अल्लाह का नूर ही चारों ओर है, इस बात पर आ गए कि इस्लाम में ही सभी को आना चाहिए। अब साधु संगत जी! ये विचारधारा ही है जो कि गलत है कि उसे अपनी जाति में नहीं आने देना। लेकिन इधर ये था कि सभी को मिलाओ। उधर ऐसी सोच थी कि दूसरों का जीने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह कुफर का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अतः इस्लाम की यह सोच सातवीं सदी में पहली बार भारतवर्ष में आई। उस समय हमले करते रहे। लेकिन कभी इनका शासन कभी उनका शासन। लेकिन 1010 यानि कि ग्यारहवीं सदी में ये लोग पक्के पांवों आए। महमूद गजनबी दो लाख घुड़सवार और शेष पैदल सेना लेकर यहाँ पहुँचा। अब भारत में किसी राजा के पास इतनी सेना नहीं थी, इसलिए हारते ही चले गए। कई इक्टठे भी होते थे, दो-दो, चार-चार परन्तु इसका मुकाबला न कर सके। अब गजनबी के आने से रास्ता खुल गया और तब से दमन चक्र का आरम्भ हो गया। सूफी पीर भी आ गए, लेकिन उन्होंने प्यार का सन्देश दिया जबकि इन्होंने तलवार चलाई। ऐसा चलते-चलते जब अकबर का राज्य समाप्त हुआ और शाहजहाँ फिर जहाँगीर का तो उसके बाद औरंगजेब आ गया। वह गुणवान भी था, लेकिन कट्टर था, कई अवगुण भी थे। उसका गुण ये था कि राज के खजाने से एक पैसा भी खर्च नहीं करता था। जब भी खाली समय मिलता था, तो वह कुरान शरीफ लिखता था। टोपियां बनाता था। ये सब बाजार में बेचकर खाना खाता था। पांचों नमाज अदा करना उसका प्रतिदिन का नियम था। कुरान शरीफ का पाठ करता रहता था। लेकिन दूसरी ओर यह किसी भी साधू संत को देखना तक पसन्द नहीं करता था। चाहे वह इस्लाम में हो या दूसरे धर्म का हो। यहाँ तक कि उसने अपने ही धर्म के सरमद जैसे,

जो कि सूफी पीर थे, वह सभी में एक वाहिगुरू को देखने वाले थे, उन्हें मार डाला, जो इससे पहले थे उन्होंने शमस्वतरेज जैसों की आँखें निकलवा दीं। मनसूर को सूली चढ़वा दिया था क्योंकि इनसे यह सहन नहीं होता था कि ये सब उस अल्लाहताला का खेल है, ये संसार उसी की रचना है। यहाँ सभी लोगों के साथ प्रेम भाव से रहो। कोई यहाँ बुरा नहीं है, सबसे प्रेम करो। अब ये औरंगजेब भी ये नहीं चाहता था। अतः इसने एक आदेश देकर, सभी मुलमानों को बुलाया और आदेश दिया कि इस्लाम को प्रचलित किया जाए। जबकि भीतर से इसका इस्लाम से कोई लेना देना नहीं था। इसीलिए महाराज जी ने कहा था कि तुम काफिर हो, तुम से बड़ा काफिर दुनिया में नहीं है। तूने कुरान शरीफ की कसम खाई, आनंदपुर साहिब का किला छोड़ने को कहा, कुरान शरीफ हमारे पास भेजा। अब हमारे सामने प्रश्न उठ गया था लेकिन हम तेरी मक्कारी को अच्छी तरह जानते थे कि तुम दीन दयाल नहीं हो बल्कि तुम धोखेबाज हो। यह भी पता था कि तुम्हें कुरान पर कोई विश्वास नहीं है लेकिन क्योंकि धार्मिक पुस्तक हमारे समक्ष आ गई थी, एक कौम की पुस्तक थी। तो यदि हम उसका सम्मान न करते तो कौन करता? भारतवर्ष में कौन था ऐसा? अब साधु संगत जी! हम इन बातों को न खोजते हैं, न ही किसी को बताते हैं।

गुरू साहिब सब जानते थे। हर चीज जानते थे। महाराज जी ने कहा कि हम कुरान शरीफ का सम्मान करते हैं क्योंकि ये एक धार्मिक पुस्तक है। बहुत सी दुनिया इस पर विश्वास रखती है। इसका सम्मान करना हमारा फर्ज है। महाराज जी ने कहा कि ऐ औरंगजेब! अब तू बता हमने तो उसका सम्मान रखा और तूने धज्जियां उड़ा दीं। अब बता तुम दयावान हो, या फिर काफिर हो? धोखेबाज हो तुम। तुम एक लोमड़ी की भांति। चालें चलते हो। इस्लाम तो तेरे आस पास भी नहीं है। ये जो तुम कुरान पढ़ते हो, टोपियाँ बनाकर व बेच कर भोजन करते हो, ये सब राजनीतिक चालें हैं। लोगों को धोखा दे रहे हो। तेरे भीतर सच्चाई नाम की कोई चीज नहीं है। आ तुझे मैं, तुम्हारी कमजोरियां बताता हूँ। गुरू महाराज ने जफरनामा और उससे पहले एक पत्र लिखा। उसने औरंगजेब को हिलाकर रख दिया, उसे बता दिया गया कि तुम क्या हो। उसे कहा कि दर्पण में देखो कि तुम क्या हो? अतः उस समय इसने कहा कि देखो इस्लाम किस तरह से ठहर सकता है। पंजाब में मैं एक भी हिन्दू को नहीं देखना चाहता। तब सलाहकारों ने कहा कि महाराज! इसका विरोध होगा। क्योंकि काश्मीर में सारे ही पढ़े लिखे और उच्च वर्ग के लोग रहते हैं क्योंकि जब आर्य आए थे, तो उन्होंने यहाँ कश्मीर को देखते ही कहा कि इससे शान्त जगह और नहीं है। यहाँ बैठ कर हम भीतर की खोज कर सकते हैं। साहित्य की रचना कर सकते हैं। इसलिए सभी विद्वान पुरुष काश्मीर में निवास करने लगे और जगहों पर इतने नहीं थे। इसीलिए इस्लाम वालों की यह सोच थी कि काश्मीरी पंडितों को इस्लाम में लाया जाए, तो बाकी अपने आप आ जाएंगे। फिर सभी हमारे साथ मिल कर प्रचार करेंगे। दूसरी ओर जाट जातियों में कहा कि इनमें भट्टी जो हैं उन्हें बना लिया जाए। वही विरोध करते हैं। अब दोनों पर फतवे जारी कर दिए गए और जजिया कर भी लगा दिया गया। खाना पीना घटिया कर दिया गया, पौशाक घटिया कर दी गई। अब हिन्दू छत पर नहीं चढ़ सकता था। यदि चढ़ना है तो पहले आज्ञा लेनी होगी कि मैंने छत पर चढ़ना है। ऐसे नियम बना दिए गए।

जब मैं छोटी आयु में था, तो मैंने सिन्ध में देखा था लेकिन वही प्रथा अभी भी चल रही थी। अतः ऐसी पाबंदियां लगाकर, काश्मीर में एक दमन चक्र चलाया गया और गुरू नानक पातशाह ने ये सारा हाल अपने नेत्रों द्वारा देखा। पहले जो राजा होते थे, वह धर्म-कर्म वाले हुआ करते थे, राजा हरिश्चन्द्र जैसे, श्री राम चन्द्र जी जैसे और युधिष्ठिर जैसे। सभी राजा लोग उस समय अपने धर्म-कर्म में पक्के हुआ करते थे और कोई विरला ही, दुर्योधन या रावण जैसा हुआ करता था लेकिन कल्युग के अन्दर तो कैंची का सा ही वातावरण बन गया है। राजाओं ने कसाइयों का रूप धारण कर लिया है। जबकि राजा का कार्य होता है -

राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥

अंग - *124*

सबको एक निगाह से देखना व न्याय करना। धर्म जो है यह इन्सान के अन्दर चरित्र निर्माण का कार्य करता है। मजहब और धर्म में एक बहुत बड़ा अन्तर हुआ करता है। यदि महजब के साथ राज सत्ता मिल जाए तो फिर ऐसा ही हाल हुआ करता है, जैसा कि औरंगजेब का था। दूसरी तरफ यदि धर्म के साथ राज सत्ता मिल जाए तो फिर एक सामूहिक आचरण अथवा **universal character** की स्थापना हो जाया करती है। महाराज जी तत्कालीन स्थिति का

सिंहावलोकन करते हुए कहते हैं कि आम लोगों के अन्दर से धर्म का आचरण तो शत प्रतिशत ही समाप्त हो चुका था -

कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिआ ॥ ***अंग - 145***

चहुँओर अमावस्या का सा अन्धकार छा गया -

कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा
दीसै नाही कह चड़िआ ॥ ***अंग - 145***

अब तो पता ही नहीं चल पा रहा है कि सत्य का चन्द्रमा कहाँ अलोप हो गया है, फलस्वरूप सारे संसार की हालत इस प्रकार की हो गई है -

धारना - सारे कूड़ दा हो गिआ वरतारा
सच्च वाला काल पै गिआ।
सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥
अंग - 468

चहुँओर आपाधापी पड़ चुकी है, व्यक्ति स्वार्थी हो गया है, अज्ञानता का अन्धकार छा गया है अर्थात अमावस्या की रात्रि जैसा वातावरण बन गया है। इस प्रकार के माहौल में कोई भी मार्ग नहीं मिल पा रहा है -

कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा
दीसै नाही कह चड़िआ ॥
हउ भालि विकुंनी होई ॥
आधेरै राहु न कोई ॥
विचि हउमै करि दुखु रोई ॥
कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥ ***अंग - 145***

गुरू जी कहते हैं कि संसार की इतनी अधोगति हो चुकी है कि राजा भी अन्धा हो गया है और प्रजा को भी अपने हकों का ज्ञान नहीं रह गया है। प्रजा स्वयं को भेड़ों के समान समझने लगी है कि चाहे यह राजा है अथवा कोई दूसरा है, हमारे ऊपर से तो सबने ऊन काटनी ही है। ऐसा ख्याल सारे संसार का हो गया है। मानवीय अधिकारों की प्राप्ति के लिए कोई भी व्यक्ति आगे आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। अतः इस प्रकार का दमन चक्र उस समय चल रहा था। काश्मीर के अन्दर उस समय जो गवर्नर था, वह इफ्तार खान था। उसका दिल पत्थर जैसा था अर्थात वह बहुत ही जालिम प्रवृत्ति का था। उसने दहशत फैलाना के लिए एक विशेष योजना बनाई। वह सौ ब्राह्मणों को लोहे की जंजीर से बाँधकर झेलम नदी के तट पर ले जाता (डल झील के तट पर) जहाँ पर कि पाँच, छः फुट गहरा पानी था वह वहाँ पर उन्हें धकेल देता जो लम्बे थे, वे कुछ देर तक छटपटाते रहते लेकिन जो छोटे कद वाले थे वे तो तुरन्त ही मुँह में पानी पड़ जाने के कारण मर जाते फलस्वरूप सभी को दरिया का पानी बहा ले जाता। दो-चार मील की दूरी पर फिर उनकी जंजीरों को खोलकर ले आते और पुनः उसी घटनाक्रम को दोहराया जाता। जब इस प्रकार के अन्याय होने लग पड़े तो उस समय बुद्धिमान व गणमान्य व्यक्तियों ने एक मीटिंग की कि अब क्या किया जाए? क्योंकि उस समय की दशा जो थी, वह इतनी दयनीय बन चुकी थी कि -

कतलगाह अज्ज धरम दा बणिआ भारत देश
नहीं जरवाणे साहमणे चलदी कोई पेश।

उस समय किसी भी व्यक्ति की कोई भी सुनवाई नहीं हो पा रही थी। दरअस्ल जब कोई व्यक्ति, किसी बड़े राजा का, किसी बड़े गुरु पीर का या किसी देवी देवता का मुथाज बन जाए तो बस सबकी मजबूरी ही बन जाया करती है। उस समय यह निर्णय लिया गया कि इस समय सारे भारतवर्ष में कोई हाय का नारा मारने वाला भी नहीं रह गया है। न कोई राजपूत राजा उठ रहा है, न ही कोई अन्य उठ रहा है। पहाड़ी राजा लोग भी नहीं उठ रहे हैं और वे तो केवल अपने दिन काट रहे हैं और अत्यन्त भयभीत है। जब संसार में कोई भी न रह जाए तो उस समय केवल परमात्मा ही शेष रह जाता है। उस समय ये बहुत सारे वृद्धजन, बहुत सारे वेद पाठी जन, एकत्र होकर अमरनाथ की गुफा की तरफ चले गए और वहाँ पर बैठकर नित्य प्रतिदिन पुकारें करने लगे कि हे शिव जी महाराज! आप कृपा करो, इन दुष्ट लोगों का पक्ष न करो, अपना तीसरा नेत्र खोलो और इन्हें राख कर दो। आज आपका ऋषियों मुनियों वाला देश तबाह होता जा रहा है। वेदों का अपमान हो रहा है और इस भांति यह सारी संस्कृति ही लुप्त हो जाएगी। सारे मन्दिर मिट जाएँगे, अतः आप इस वक्त कृपा करो। जब इस प्रकार अनुनय विनय करते हुए बहुत दिन बीत गए तो उनमें से बहुत सारों ने तो वहाँ पर भूख हड़ताल कर ली कि इससे तो अच्छा है कि हम लोग यहीं पर अपने प्राणों का त्याग कर दें। ऐसा ख्याल है कि उस समय एक आवाज (आकाशवाणी) है कि ऐ फरियाद करने वालो! अब कल्युग

का समय है, इस भयानक समय में कोई भी देवी-देवता आगे नहीं आ सकता है। कल्युग का तेज इतना अधिक है कि इस समय में कोई भी देवी-देवता तुम लोगों की मदद नहीं कर सकता है, इसलिए तुम लोग हमारी बात को ध्यानपूर्वक सुनो! यदि इस समय तुम लोगों की बाँह पकड़ने वाला कोई है तो वह श्री आनन्दपुर साहिब में बिराजमान है। जब तक तुम लोग वहाँ पर नहीं जाते हो तब तक तुम्हारा यह मसला हल नहीं हो सकेगा। इस प्रकार से आप लोग पढ़ लो -

धारना - बांह फड़ेगा तुहाडी
सतिगुर नौवां,
ओट जा के लै लओ ओसदी।

शहीद बिलास पुस्तक के अन्दर तथा अन्य कई पुस्तकों में इस घटना को कविता के माध्यम से सविस्तार वर्णित किया गया है -

आखिआ शिव भगवान ने मुखो
इउं उचार भारत विच प्रगटिआ कलजुग
रखणहार तेग बहादर नाम है महिमा अपर अपार
बैठा विच अनंदपुर ला के है दरबार।
जाओ उस दी शरन विच छड के होर विचार
नउका हिंदू धरम दी लाइगा ओह पार।

वहाँ पर उपस्थित सब लोगों ने इस बात को सुना। उसके बाद सबने अपने मरणाव्रत को तोड़कर विचार-विमर्श की कि भले ही देवजन स्वयं तो प्रकट नहीं हुए हैं लेकिन उन्होंने हमें यह मार्ग बतलाया है। उस समय उनके मन्दिरों को तोड़ा जा रहा था और चहुँओर इस प्रकार की स्थिति व्याप्त थी -

कीते गउआं मार के मंदर कई पलीत
कल सी मन्दिर दिसदा दिसे पई मसीत
नउका हिन्दू धरम दी डोले
अज मंझ धार ना दिसदा उरवार ही
ते ना ही दिसदा पार।

उस समय कोई भी देवी-देवता प्रकट नहीं हुआ जबकि उससे पहले की कथाओं में यह लिखा हुआ मिलता है कि वे आकर प्रकट होते थे लेकिन कल्युग में सब हाथ खड़े कर गए। उन्होंने कह दिया कि जो तुम्हारी रक्षा करने वाला है वह तो इस समय श्री आन्नदपुर साहिब में बिराजमान है और उसका नाम श्री गुरू तेग बहादर है। उस समय एक बहुत बड़ी एकत्रता की गई। सारे भारतवर्ष में से मुखी जो कि लगभग पाँच सौ ब्राह्मण थे वे पूरे भारतवर्ष में से आए और वे सभी शिखर के विद्वानजन थे, बहुत अधिक पढ़े-लिखे थे। भारतवर्ष का इतिहास कहीं नहीं लिखा गया। काश्मीर वालों ने इस इतिहास को लिखा है जो कि संस्कृत भाषा में है और जिनका मुखी कृपा राम था। उसमें लिखा है कि सारे भारतवर्ष में से पाँच सौ ब्राह्मण पहुँचे जिनमें से सोलह मुखी ब्राह्मण थे और ये सभी इकट्ठे होकर श्री आनन्दपुर साहिब पहुँचते हैं-

चल के आए पुरी अनंद बांह असाडी पकड़ीए
गुरू हरिगोबिंद के चंद।

वे वहाँ पर पहुँच कर विनती करते हैं कि हे महाराज जी! इस प्रकार के जुल्म हमारे ऊपर हो रहे हैं और इस समय हमारी रक्षा करने वाला कोई नहीं है, वे सभी रो-रोकर विनतियाँ कर रहे हैं। हम लोगों ने देवी-देवताओं की शरण में जाकर मरणव्रत भी रखे, वेद मन्त्रों का उच्चारण भी करते रहे लेकिन कोई भी प्रकट नहीं हुआ। वहाँ पर एक आवाज आई है कि श्री आनन्दपुर साहिब ने तुम लोगों की रक्षा करनी है।

केवल इको आप हो केवल इको आप।
मेटो हिन्दू धरम ते बणिआ जो संताप।

महाराज जी! इस समय हमारी रक्षा करने वाला कोई भी नहीं है। पहले समयों के बारे में सुनते आए हैं कि प्रहलाद को जब पहाड़ पर से नीचे फेंका गया तो उसे चोट तक नहीं लगी, जब उसे पानी में डुबोया गया तो वह डूबा नहीं -

जल अगनी विचि घतिआ
जलै न डुबै गुर परसादि।
भाई गुरदास जी, वार 10 पउड़ी 2

न वह जला, न डूबा और जब उसे गर्म व आग से दहकते हुए खम्भे के साथ लगाने लगे तो उस समय -

थंमु पाड़ि प्रगटिआ
नरसिंघ रूप अनूप अनादि।।
भाई गुरदास जी, वार 10 पउड़ी 2

महाराज जी! वर्तमान समय में इतना अधिक जुल्म हो रहा है लेकिन एक भी देवता प्रकट नहीं हुआ है कोई भी रक्षा इस समय नहीं कर रहा है।

'चलता'

प्यार भरा सुगन्धित जीवन

(प्यारे महापुरुषों का मधुर स्मृति को समर्पित)

भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रुख ते उच भए है गंध सुगंध निवासा ॥

अंग - 486

पावन पंक्ति के शब्दार्थ के अनुसार परमात्मा या वाहिगुरू जी की तुलना चन्दन के वृक्ष के साथ करते हुए उसे सुगन्धित बतलाया गया है। गुरवाणी का कथन है, हे माधव! तुम तो चन्दन हो जबकि मैं एक इरंड के सदृश्य हूँ। बस आपकी कृपा की बदौलत मुझे आपको चरणों में रहने की जगह मिल गई है। जब से आपकी मधुर सुगन्ध मेरे अन्दर बसी है, तब से मैं नीचे से ऊंचा बन गया हूँ। पावन गुरवाणी दरगाह की वाणी है और इसलिए इसके शब्द परमात्मा के शब्द हैं, यह सच्चखण्ड की वाणी है और इलाही नाद है। इसे सरलता से समझने व समझाने के लिए इसकी प्राप्ति हमें पंजाबी बोली और गुरमुखी लिपि के माध्यम से हुई। इन धुर दरगाह के वचनों को (sign & symbols) चिन्हों व निशानों का प्रयोग करके हमें समझाया गया है। भावार्थ सांसारिक उदाहरण व प्रमाण दिए गए ताकि हम कल्युगी जीव इसके भावों को सरलता से समझ सकें। उपर्युक्त पंक्ति के अनुसार चन्दन रूपी वाहिगुरू को सुगन्धित बतलाया गया है भावार्थ वाहिगुरू जी स्वयं खुशबू रूप है। उनके स्पर्श में से रस, आनन्द व उल्लास आदि की सुगन्ध आती है। जो भी वस्तु उस सुगन्धित व शक्तिशाली को छू जाती है, वह भी खुशबूदार बन जाती है। चन्दन के पास में उगने वाली जड़ी-बूटियाँ व घास फूस आदि भी सुगन्धित हो जाते हैं। केवल बाँस को छोड़कर सारा चौगिरदा सुगन्धित हो जाता है। सारे नजदीकी वातावरण में से सुगन्ध की बहार महसूस होती है। पावन गुरवाणी के अन्दर इस प्रमाण को और भी अधिक खोलकर समझाया गया है -

कबीर चंदन का बिरवा भला बेड़िओ ढाक पलास ॥
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥

अंग - 1365

इसी प्रकार से जो भी वाहिगुरू जी के साथ अभेद हो जाते हैं वे भी उस खुशबू को पाकर अन्य लोगों को खुशबुएँ बाँटने वाले बन जाते हैं। भाई नन्द लाल जी के अनुसार जो लोग श्री आनन्दपुर साहिब में भिखारी थे, आज वे कलगीधर पिता जी का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद बादशाहियाँ बाँटते देखे गए हैं। दोनों संसारों की बादशाही उन्हें प्राप्त हो गई है।

खुशबू को महसूस किया जाता है। परमेश्वर प्रेम स्वरूप होकर चहुँओर फैला हुआ है -

जत्र तत्र दिसा विसा होइ फैलिओ अनुराग॥

जापु साहिब

इसके प्यार में रहने वाले भी प्यार के सुगन्धित जीवन वाले बन जाते हैं। दुनियाँ की वस्तुओं में से जहाँ हमें खुशबू प्रतीत होती है, वहीं उनमें से साथ ही साथ बदबू भी आती है, भावार्थ जहाँ पर कुछ अच्छा होता है, वहाँ पर कुछ बुरा भी अवश्य ही होता है। जहाँ सद्गुणों रूपी खुशबू है, वहीं पर आसुरी शक्तियों के दुर्गन्ध भी है। सत्य, सन्तोष, धैर्य, क्षमा, मधुरभाषी, परोपकारी जीवन आदि सभी सुगन्ध का रूप हैं क्योंकि इनके द्वारा मानवता सुगन्धित होती है, लेकिन पाँचों विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) पाँचों विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) आदि की दुर्गन्ध भी आती है। इनके द्वारा मानवता दुर्गन्धयुक्त हो जाती है और फिर यह दुर्गन्ध केवल एक जन्म तक ही सीमित नहीं रहती है, अपितु जन्म जन्मान्तरों तक यह दुर्गन्ध समाप्त नहीं होती है -

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
हउमै ओई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥

अंग - 466

परमात्मा के प्यारे उस वाहिगुरू जी से नाम की सुगन्ध लेकर मानवता में बाँटते हैं और इस विधि से उन्हें दुर्गन्ध से छुटकारा दिलाते हैं। सबसे पहले तो वे स्वयं सुगन्धित होते हैं-

प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥

अंग - 381

कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥
गुरमुखि जपीअै लाइ धिआना ॥
आपि तरै सगले कुल तारे
हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥ ***अंग - 1076***

वे 'आपि जपहु अवरह नामु जपावहु।।' के धारणी बन जाते हैं और इस नाम रूपी खुशबू के द्वारा एक नहीं बल्कि

अनेकों लोग सुगन्धित हो जाते हैं। यह सुगन्ध बिना किसी भेदभाव, रूप, जाति, पात, नस्ल व लिंग भेद से प्रदान की जाती है -

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥ *अंग - 1299*

श्री गुरू नानक देव जी के द्वारा भी यही उपदेश हुआ था जबकि आपने 'उजड़ जाओ तथा बसते रहो' के सिद्धान्त की कृपा की थी। जिन्होंने सच्चे पातशाह जी की हार्दिक रूप से तन व मन से सेवा की थी और जो सुगन्धित थे उनके लिए गुरू जी ने वचन किया कि तुम लोग 'उजड़ जाओ' और दूसरी तरफ जो कि शारीरिक व मानसिक रूप से सतगुरू जी की महिमा से अनजान थे, उनके लिए आप जी ने वचन किया कि 'तुम लोग बसते रहो'। जब भाई मरदाना जी ने इस पर शंका प्रकट की तो गुरू जी ने वचन किया कि भाई मरदाना जी! सुगन्ध को फैलाना चाहिए या उसे ढकना चाहिए? मरदाना जी ने कहा, महाराज जी! सुगन्धी तो जितनी अधिक फैले उतनी ही ठीक है, जबकि दुर्गन्ध को तो ढकना ही ठीक है। गुरू जी ने कहा भाई मरदाना जी! हमने भी सुगन्ध को फैलाया और दुर्गन्ध को ढका है। ये जो परमात्मा के प्यारे हैं ये परमात्मा के प्रेम में सुगन्धित हो चुके हैं। ये जहाँ पर भी जाएँगे वहाँ पर परमात्मा के प्रेम की सुगन्ध को चहुँओर वितरित करेंगे। दूसरी तरफ जो लोग बुरी वृत्तियों वाले हैं वे सब एक ही जगह पर रहें तो ज्यादा ठीक है ताकि वे अपनी वृत्तियों का प्रसार कहीं दूसरी जगहों पर भी न कर दें।

यह कथा इस बात की पुष्टि करती है कि मनुष्यों के जीवन भी सुगन्ध या दुर्गन्ध से भरे हुए हो सकते हैं। यह बात अलग है हम लोग शारीरिक या स्थूल दुर्गन्ध अथवा सुगन्ध को ही जानते हैं भावार्थ हम लोग पदार्थवादी खुशबू या बदबू को ही जानते हैं लेकिन गुरू जी ने तो हमें शारीरिक पवित्रता के साथ-साथ आन्तरिक पवित्रता को रखने की तागीद की है -

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना
मन तन भए अरोगा ॥ *अंग - 611*

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥
फरीदा जे तूं मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥
अंग - 1382

जब एक समर्थ सतगुरू अपना बन जाता है तो फिर सारी मानवता अपनी ही बन जाती है -

जिन् नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥
अंग - 450

परमात्मा के प्यारे 'एक' की पूजा करके स्वयं भी पूजनीय बन जाते हैं। उनके अन्दर द्वैष भाव समाप्त हो जाता है और परमात्मा के साथ वे अभेद हो जाते हैं अर्थात उनके ऊपर गुरू की ऐसी कृपा हो जाती है -

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी
तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ
जिउ पानी संगि पानी ॥ *अंग - 634*

नि:शंक रूप से सबके शरीर पाँच तत्वों के ही हैं लेकिन आम मनुष्यों में इन पाँच तत्वों वाले गुण शोभायमान नहीं होते हैं। परमात्मा के प्यारों का शरीर भी चाहे पाँच तत्वों वाला ही होता है लेकिन उनके अन्दर इन पाँच तत्वों वाले गुण विद्यमान होते हैं -

अपु तेजु बाइ प्रिथमी आकासा ॥
ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥ *अंग - 327*

पाँच तत्वों की खुशबू उनके जीवन में से स्वत: ही झलकती हुई दिखाई पड़ती है।

1) मिट्टी का गुण (सुगन्ध)

ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥
जिउ बसुधा कोउ खोदै कोउ चंदन लेप ॥अंग - 272

परमात्मा के प्यारों के अन्दर एक बड़ा गुण धैर्य का होता है। जीवन की प्रत्येक स्थिति में दूख-सुख, हानि, लाभ, आदर-निरादर में मिट्टी की भांति सम रहना। चाहे कोई धरती को लेप करे, चाहे कोई उसकी खुदाई करे, धरती को कोई फर्क नहीं पड़ता है। चाहे बड़े-बड़े पहाड़ निर्मित हो जाएँ और चाहे कोई गहरे से गहरे खड्डों को खोद डाले, धरती को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। प्यारे महापुरुषों के जीवन में से एक नहीं बल्कि अनेकानेक ऐसी घटनाएँ प्राप्त हो जाती हैं कि आपने धैर्य को नहीं छोड़ा। सन् 1988 ई. के करीब मोरिंडा क्षेत्र के दीवानों के समय कुछ प्रेमीजनों ने महापुरुषों को बतलाया कि कोई तथाकथित सन्त आप जी के खिलाफ बहुत सारे सख्त शब्द बोलता है और आपकी बहुत निन्दा करता है। आप जी ने बहुत ही धैर्यता के साथ उस तथाकथित सन्त द्वारा उठाई गई शंकाओं का जवाब समागम के आखिरी दिन के दीवान में दिया और आपने कहा कि हाँ भाई! वे सन्त हैं और सन्त तो हमेशा सत्य ही बोला करते हैं वे कभी भी झूठ नहीं बोला करते हैं, भावार्थ ईर्ष्या करने वाले के साथ भी आपने कभी ईर्ष्या वाला व्यवहार नहीं किया और सदैव धैर्यता के साथ ही व्यवहार किया। यू.पी. में भी आपके ऊपर जानलेवा हमला हुआ लेकिन आप रोष में नहीं आए बल्कि आपने हमेशा धैर्य को ही धारण करके रखा तथा अपने सहज मार्ग व आत्म मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ते रहे। अन्त में आपने अपने ऊपर हमला करने वालों को भी बरी करवा दिया।

2) पानी का गुण

ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥ *अंग - 272*

पानी का एक गुण यह है कि इसे जिस बर्तन में डाला जाता है, यह उसी के अनुरूप अपना रूप धारण कर लेता है। सांसारिक मैल को धोने के लिए पानी पूर्णतः समर्थ है लेकिन यह स्वयं सदैव मैल रहित ही रहता है।

प्यारे महापुरुषों का भी जीवन इस प्रकार का था कि आप गृहस्थ में रहते हुए भी, सांसारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी, स्वयं पूर्णतः निर्लिप्त ही रहे।

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥ सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे॥
अंग - 938

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजनु नालि ॥
अंग - 1376

गुरमुख माइआ विच उदासी। *भाई गुरदास जी*

सो गिरही जो निग्रहु करै ॥
जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥
पुंन दान का करे सरीरु ॥
सो गिरही गंगा का नीरु ॥ *अंग - 952*

गुरवाणी के इन सिद्धान्तों पर पहरा देते हुए आपने मानवता को यही सन्देश दिया कि आप सब भी इसी प्रकार की जिन्दगी जियो और आपने इसके लिए खूब सुगन्ध भी वितरित की।

रे मन ऐसो कर संनिआसा॥
बन से सदन सभै कर समझहु
मन ही माहि उदासा॥ *रामकली पातिशाही 10*

प्यारे महापुरुषों का तथा उनकी जीवनसंगिनी का इसी प्रकार का जीवन था। संसार के अन्दर रहते हुए भी आप संसार से पूर्णतः निर्लिप्त थे। राजनैतिक लोगों के द्वारा आपको बहुत लालच दिए गए कि आप बस एक ब्यान दे दो कि अमुक व्यक्ति बहुत अच्छा है लेकिन आप कभी भी किसी लालच में नहीं आए। लाखों रुपयों की भरी हुई अटैची को आपने ठोकर मारते हुए कहा, खबरदार! यदि मेरे पास दोबारा इस प्रकार की पेशकश की और ऐसा ही हुआ कि दोबारा किसी के अन्दर ऐसी हिम्मत नहीं हुई कि कोई व्यक्ति इस प्रकार की पेशकश उन्हें कर सके।

आकाश वाला गुण

आकाश के स्वभाव के अनुसार महापुरुषों के जीवन में से आकाश वाली सुगन्ध भी प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती है -

ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धर उपरि आकासु ॥ *अंग - 272*

परमात्मा के प्यारों के मन में यह प्रकाश हो जाता है कि प्रभु जी तो कण-कण में व्याप्त हैं। जिस प्रकार से आकाश कण-कण में व्याप्त है, उसी प्रकार से उनके अन्दर भी गुरवाणी की रौशनी होती है -

गुरबाणी इसु जग महि चानणु
करमि वसै मनि आए॥ *अंग - 67*

दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥
बेद पाठ मति पापा खाइ ॥
उगवै सूरु न जापै चंदु ॥
जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥
बेद पाठ संसार की कार ॥
पड़ि पड़ि पंडित करहि बीचार ॥
बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥
नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥ *अंग - 791*

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥
अंग - 293

प्यारे महापुरुषों की वृत्ति प्रत्येक समय परमात्मा में लीन रहती थी। श्री गुरू नानक देव जी द्वारा नमाज अदा करने वाली साखी का प्रमाण देकर आप वचन किया करते थे कि दूरी की नमाज नहीं बल्कि हुजूरी की नमाज ही अदा करनी चाहिए यानि कि परमेश्वर को हाजिर जानकर ही गुरवाणी पढ़नी है -

जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥
रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥ 1 ॥
ईत उत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥
बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥
रहाउ ॥
प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु उन न होई ॥
सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ॥ *अंग - 677*

'पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे।।' वाली धारना को आप प्रायः अपने दीवानों में पढ़ा करते थे।

उनके अन्दर नाम का प्रकाश इतना अधिक था कि आप किसी भी प्रमाण की तरजमानी इस प्रकार से करते थे कि सब कुछ सामने ही होता हुआ दिखाई पड़ता था, भावार्थ आप बीत चुके समय को खींच कर श्रोताओं के सामने प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत कर देते थे। गुरवाणी का प्रकाश इतना अधिक था कि आप प्रत्येक वचन गुरवाणी की रौशनी में ही करते थे। शरीरकाल के अन्तिम दिनों में आपने रतवाड़ा साहिब की

स्टेज पर खुले पण्डाल के अन्दर बिराजमान संगत को सम्बोधित करते हुए कहा था कि इस स्टेज पर विभिन्न वक्ताओं ने आना है और अपने-अपने भाषण देकर चले जाना है लेकिन तुम लोगों ने वही वस्तु या विचार ग्रहण करनी है जो कि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी या गुरवाणी के अनुसार हो अर्थात गुरवाणी की कसौटी पर खरी उतरती हो। संसार के अन्दर विशेष तौर पर धर्म के मार्ग पर बहुत अधिक भ्रम उत्पन्न किए जाएँगे लेकिन तुम लोग श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी का दामन मत छोड़ना। आपने कहा कि रतवाड़ा साहिब के साथ जुड़ी हुई संगत अध्यात्मिक तौर पर काफी उच्चावस्था में पहुँच चुकी है यानि कि अब उनके अन्दर कम से कम इतनी जागृति तो आ ही चुकी है कि वह इस बात का निर्णय कर सके कि कौन सी बात गुरमति के अनुसार है और कौन सी नहीं है। भावार्थ गुणों की साझेदारी स्थापित करनी है -

गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥
जे गुण होवनि् साजना मिलि साझ करीजै ॥
साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥
पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥
अंग - 766

आपने आजीवन गुरवाणी पर आधारित तत्व वचन ही किए और गुरमति के जटिल व गम्भीर सिद्धान्तों को सरल व आसान बोली में प्रकट किया। आपने बड़े से बड़े सिद्धान्त को सरल शब्दों में तथा सांसारिक प्रमाण देकर समझाया। इन प्रवचनों का प्रकटीकरण उनके द्वारा रिकार्ड करवाई गई सीडीज के माध्यम से प्राप्त होता है। 'आत्म मार्ग' मैगजीन तथा रूहानी प्रवचनों से भरपूर अनेकों पुस्तकें, उनके सरल वचनों के माध्यम से गुरमति के गूढ़ सिद्धान्तों को प्रस्तुत कर रही हैं। ऐसे थे प्यारे महापुरुष जिनके अन्दर आकाश की भांति नाम का प्रकाश था। आपने महाप्रकाश परमात्मा से प्रकाश लेकर, जन साधारण को उस प्रकाश के द्वारा सुगन्धित किया।

अग्नि वाली गर्माहट

ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ अंग - 272

जिस प्रकार से सूर्य सारे रसों को सुखा देता है उसी प्रकार से परमात्मा के प्यारे समस्त पापों का नाश कर देते हैं, खोटी मत का नाश कर देते हैं और गुरमति का प्रकाश कर देते हैं। भाई गुरदास जी द्वारा गनका के हवाले के अनुसार-

महाँपुरख आचाणचक गनिका वाड़े आइ खलोता।
दुरमति देखि दइआल होइ हथहुं उसनो दितोनु तोता।
भाई गुरदास जी, वार 10/21

परमात्मा के प्यारे खोटी मति वालों के ऊपर भी पसीज जाया करते हैं और उनके ऊपर तरस खाकर यानि कि दयाभाव के द्वारा उनके ऊपर भी परमात्मा से कृपा करवा देते हैं -

संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥ अंग - 279

साधू की जउ लेहि ओट ॥
तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ अंग - 1196

ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥
अंग - 273

भावार्थ उनकी संगत में आने वाले व्यक्ति का भी उद्धार हो जाता है -

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ अंग - 10

प्यारे महापुरुषों ने एक नहीं बल्कि अनेकों लोगों को मनमति से हटाकर गुरमति के धारणी बनाया। यू.पी. में एक बार किसी शराबी के द्वारा आपको आलिंगनबद्ध कर लेने से आपके वस्त्र पूर्णत: मैले हो गए लेकिन आप जी ने उसे कुछ नहीं कहा, बस आपने उसे बहुत ही दया भरी दृष्टि से देखा। उस दृष्टि का उसके ऊपर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि वह हमेशा के लिए इस अलामत का त्याग कर गया। बाद में वह गुरू वाला बन गया और गुरमति के अनुसार जीवन का धारणी बन गया। इस प्रकार की एक नहीं बल्कि अनेकों मिसालें मिलती हैं जबकि आपके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति बुरे कर्मों से तौबा करके गुरमति का धारणी बन गया। सिन्धु (अब पाकिस्तान में) यू.पी. का तराई क्षेत्र, रूपनगर, चण्डीगढ़ भावार्थ देश व विदेशों में एक नहीं बल्कि अनेकों ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें कि भटके व भूले लोगों का जीवन, आपके माध्यम से सही मार्ग पर चलने वाला बना। यू.पी. के दीवानों में कुमार्ग पर जा चुके प्राणी स्वयं उठकर यह बतलाते कि मैंने इतने पाप किए हैं, मेरा उद्धार किस प्रकार से हो सकता है? विशेष तौर पर जब आप भूमिया चोर, लक्खू, लुटेरा व सज्जन ठग से भाई भूमिया, भाई सज्जन व भाई लक्खू बनने की कथाएँ सुनाया करते थे। गुरू जी की कृपा उन मनमति वालों व कुमार्ग वालों पर भी बरसा करती थी और वे भविष्य में बुरे कार्यों, चोरियों, डाकों व शराबों-कवाबों से तौबा करके खण्डे-बाटे का अमृतपान करके गुरमति वाला जीवन जीने का प्रण करते।

हवा वाली समदृष्टि

ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ अंग - 272

परमात्मा के प्यारों के अन्दर समदृष्टि वाला स्वभाव होता है जैसे कि हवा, राजा तथा रंक दोनों को समान रूप से लगती है, इसी प्रकार से उनकी दृष्टि में से प्रत्येक समय

अमृत बहता रहता है अर्थात नाम रस बहता रहता है -

ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥

अंग - 273

प्यारे महापुरुषों की संगत में चाहे कोई भी आया, चाहे कोई राजा था, चाहे गरीब था, आपकी दृष्टि में कोई भी भेदभाव नहीं था। आप प्रत्येक को आवश्यक सम्मान देते थे। आप समय के बड़े-बड़े शासकों की परवाह भी नहीं करते थे क्योंकि -

रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥

अंग - 473

आपने एक सच्चे वाहिगुरू जी के सहारे को पकड़ा और आजीवन पकड़ कर रखा। आप जी प्राय: दीवान के आरम्भ में अरदास रूप में मंगलाचरण करते थे कि -

डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ॥
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥

अंग - 256

फिरत फिरत प्रभ आइआ
परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥

अंग - 289

भावार्थ आप हमेशा अपने गुरू जी का ही सहारा लेते थे। समय-समय पर देश के प्रधानमन्त्री डा. मनमोहन सिंह तथा डा. स्वामी राम जी आपके पास आए। आपने सबको प्यार की सुगन्ध ही प्रदान की।

अत: इस प्रकार से जो पाँचों तत्वों में सुगन्ध रूपी गुण शोभायमान हैं वे आपके जीवन में से प्रत्यक्ष रूप में झलकते थे -

अपु तेजु बाइ प्रिथमी आकासा ॥
अैसी रहत रहउ हरि पासा ॥
कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥
तितु घरि जाउ जि बहुरि न आवउ ॥ अंग - 327

इस प्रकार की जीवन शैली को अपनाते हुए यानि कि नियम व मर्यादाओं का पालन करते हुए आप जी ने परमात्मा का नाम जपा और ऐसे घर में निवास प्राप्त कर लिया जिसके फलस्वरूप आपका आवागमन समाप्त हो गया।

आप जी के जीवन में से एक नहीं बल्कि अनेकों ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें से सुगन्ध झलकती है। उनका जीवन आज भी खुशबू वितरित कर रहा है और यही नहीं अपितु उनका जीवन जन साधारण के जीवन के पृथक-पृथक पड़ावों पर खुशबूओं को वितरित करता हुआ मानवता के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है।

बचपन की खुशबू - बचपन से ही नाम-वाणी की लगन, प्राथमिक शिक्षा के समय अपनी कापी पर जगत झूठ (तम्बाकू) शब्द को न लिखना, युवावस्था के समय सेवा-सिमरन तथा कीर्तन के साथ जुड़े रहना, अपने नित्तनेम में परिपक्व रहना आदि अनेकों विशेषताएँ आपके जीवन दृष्टिकोण को इंगित करती हुई जन साधारण को उत्साह व प्रेरणा दे रही है।

सन्त महाराज राड़ा साहिब वालों का मिलाप

प्रथम मुलाकात में ही 'सुहागिन को सुहागिन का मिलाप' वाला वचन होना भी उस दिव्य सुगन्ध का ही एक भाग था। इस वचन ने पूर्वजन्म की तपस्या, वर्तमान की कमाई तथा सतगुरू जी की कृपा को प्रकट किया कि आप जी की कितनी साधना व तपस्या थी, जिसके फलस्वरूप सन्त महाराज (राड़ा साहिब वाले) जी ने आप जी के लिए सुहागिन से सुहागिन का मिलाप वाला वचन किया।

प्यार के सागर - संसार प्रसिद्ध 156 देशों में घूमने वाले तथा समस्त धर्मों का अध्ययन कर चुके डा. स्वामी राम जी ने आप जी को मिलने के बाद ये वचन कहे कि आप तो प्यार का सागर हैं तथा ज्ञान से भरपूर हैं। डा. स्वामी राम जी अपनी जिन्दगी से उदास हो चुके थे, लेकिन महापुरुषों की संगत में आकर आप भी रसयुक्त हो गए तथा उल्लास से भर गए। इस मुलाकात के द्वारा आप बहुत ही आनन्द भाव में चले गए। यह कोई दिव्य सुगन्ध ही थी जो कि डा. स्वामी राम जी को प्राप्त हुई, फलस्वरूप अपना शेष जीवन उन्होंने इसी सुगन्ध के अन्दर व्यतीत किया।

अत: एक नहीं बल्कि अनेकों ऐसे उदाहरण आपके जीवन में से प्राप्त होते हैं, जिनके द्वारा सारा चौगिरदा सुगन्धित हुआ।

सिन्धु में, फौज में, सचिवालय के सेवाकाल में, यू.पी. में, कृषि फार्मिंग के दौरान यानि कि जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर आपने गुरमति के गूढ़ सिद्धान्तों पर पहरा दिया। धार्मिक दृष्टि से उचित जीविकोपार्जन करना, नाम सिमरन करना, मिल बाँट कर ग्रहण करना, पूजा अकाल (पुरुष) की, परिचय शब्द का तथा दर्शन व दीदार खालसे के सिद्धान्तों पर पहरा देते हुए आपने हम सबको इसी मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा की -

आपु छडि सदा रहै परणै
गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ अंग - 920

आप प्राय: यह करते थे कि मैं तो कुछ भी नहीं कर रहा हूँ, बल्कि मुझसे तो करवाया जा रहा है। दूसरे धर्मों व मजहबों वालों का सम्मान भी आपके हृदय में समान रूप से था। उनके इस दृष्टिकोण का प्रकटीकरण दो घटनाओं के माध्यम से बखूबी होता है।

यू.पी. में मुसलमान बन्धु रोजे रखा करते थे, जब वे लोग अपने रोजे खोलते थे तो सम्माननीया माता जी उन्हें स्वच्छ भोजन बना कर दिया करते थे। इसी प्रकार से रतवाड़ा साहिब के नजदीक चाहड़माजरा नगर के मुसलमान बन्धुओं को अपने मस्जिद का निर्माण करवा कर दिया ताकि वे भी अपने धर्मानुसार अपने अल्लाह की इबादत कर सकें।

गुजरात के भूचाल के समय तथा पंजाब में आए बाढ़ के प्रकोप के समय आपने जरूरतमन्दों की सहायतार्थ खाने पीने की सामग्री के अतिरिक्त वस्त्र, बच्चों को किताबें-कापियाँ व वर्दियाँ तथा स्कूलों की इमारतों पर सफेदी आदि करवा कर दी। ये सब बातें उनके सुगन्धित जीवन को ही दर्शाती हैं।

आपके अन्दर त्याग इतना था कि आप आजीवन यह कहते रहे कि -

तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा॥

अंग - 383

धार्मिक फिल्में बनाकर प्रचार करने के लिए सन्त महाराज राड़ा साहिब वालों के द्वारा माया की पेशकश को स्वीकार न करते हुए आपने सविनम्र विनती की कि आप मेरी कमाई में ही बरकत डाल दो ताकि मैं अपनी कमाई में से ही प्रचार कर सकूँ। समय आने पर आपने अपने खर्चे के द्वारा भावार्थ अपनी निजी माया के द्वारा ही प्रचार शुरू किया तथा फिल्में बनाईं। इस वचन का जिक्र सन्त महाराज राड़ा साहिब वालों ने अपनी निजी डायरी में किया था। आपने अपनी डायरी में एक तरफ त्याग वालों का और दूसरी तरफ पकड़ वालों का जिक्र किया था। आपने उसमें इनके त्याग का जिक्र किया था।

गुरमति प्रचार तथा परोपकार के केन्द्र

रतवाड़ा साहिब की स्थापना - जुलाई 1986 ई. में चण्डीगढ़ के नजदीक कण्डी क्षेत्र में आपने गुरमति प्रचार के केन्द्र को स्थापित किया।

यह केन्द्र रतवाड़ा साहिब के नाम से बहुत जल्दी ही संसार भर में सुविख्यात हो गया। 'जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे।।' श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के प्रकाश, श्री आखण्ड पाठ साहिबान की श्रृंखला, जपुजी साहिब मूलमन्त्र तथा गुरुमन्त्र के जप की निरन्तरता बनी। सेवा व सिमरन के कुम्भ शुरू हुए। ईश्वरीय वाणी की खुशबू चौगिरदे में देश व विदेशों तक फैली। खुशबुओं द्वारा खिंचे हुए भौंरे आने शुरू हो गए। बहुत प्रेमीजनों ने अपनी नौकरियों का त्याग करके अपने जीवन, गुरू जी को अर्पित कर दिए। चौबीसों घंटे गुरू के लंगर शुरू हो गए। इस पावन स्थान पर सेवादार दिन रात सेवा भाव से जुट गए। धार्मिक दीवान इतवार, पूर्णमाशी व संक्रान्ति के शुरू हो गए। सारे इलाके में गुरमति का प्रचार व प्रसार शुरू हो गया। लोगों का काया-कल्प होने लग पड़ा। स्वयं को पिछड़े हुए महसूस करने वालों को अपने वचनों द्वारा आपने पहले दर्जे के शहरी होने का अहसास दिलवाया। अनेकों प्राणी नशों आदि की बुरी आदतों को छोड़कर, खण्डे बाटे का अमृतपान कर गए तथा श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के साथ जुड़ गए। गुरमति का प्रचार सारे पंजाब भर में फैलकर पूरे भारतवर्ष में तथा विदेशों तक फैला। 'विश्व गुरमति रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट' अस्तित्व में आ गया, फलस्वरूप आपने अपना सब कुछ ट्रस्ट के नाम करवा दिया। अब निजी लाभ व लालच को पूर्णरूपेण समस्त करके गुरू परायण मुख्य मार्ग शुरू हो गया जैसे कि गुरू जी का कथन है 'कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा।।' (अंग - 1375) इस सिद्धान्त का अक्षरशः पालन होने लग पड़ा। गुरुद्वारा ईशर प्रकाश का सुन्दर दरबार बन गया। दीवानों के लिए विशाल शेड बन गए। बाद में शिक्षण संस्थाएँ अस्तित्व में आ गईं, जिनमें जायज फीसों के द्वारा गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध करवाई जाने लग पड़ी, शारीरिक रोगियों के लिए निःशुल्क अस्पताल शुरू हो गया। वर्तमान समय में निःशुल्क सिलाई व कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र, निःशुल्क नेत्र आप्रेशन शिविर, निःशुल्क कैंसर चेक-अप शिविर आदि अनेकों परोपकारी कार्य संगत के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं। ट्रस्ट के वर्तमान मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी, ट्रस्ट के अन्य सहयोगियों, सदस्यों, पदाधिकारियों व संगत के सहयोग से समस्त परोपकारी कार्यों की निरन्तरता को बुलन्दावस्था में बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील हैं। निःसन्देह हम यह कह सकते हैं कि रतवाड़ा साहिब का हरा-भरा चौगिरदा नाम-वाणी की खुशबुओं से संसार भर को शरशार कर रहा है। यह सब कुछ श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की कृपा की बदौलत ही सम्भव है।

अन्त में, इस लेख का मैटर अधिक लम्बा होने के कारण इसे विश्राम दिया जा रहा है। निःसन्देह आप जी का सारा जीवन सुगन्ध से भरा हुआ तथा खुशबुओं को बाँटने वाला था। परम सम्माननीया बीजी ने भी जीवन के समस्त पड़ावों पर आजीवन आपका साथ दिया। अतः आज भी उनकी सुगन्ध, उन्हें प्यार करने वालों में से आ रही है। आज भी उनकी पावन याद में लाखों लोग देश व विदेशों से रतवाड़ा साहिब की पावन भूमि पर पहुँच कर, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के सिद्धान्तों व नाम-वाणी के साथ जुड़ रहे हैं। यही है - सगन्धित जीवन की निशानी। यथा -

इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥

अंग - 320

गुरू जी हम सब पर कृपा करें ताकि हम सबको गुरवाणी की सुगन्ध व प्यार भरा जीवन प्राप्त हो जाए।

आत्म ज्ञान

सन्त वरियाम सिंह जी
सम्पादक - प्रो. गुरदेव सिंह

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 35)

बाबा फरीद जी को बचपन से ही उसकी माँ ने भक्ति की तरफ लगया। जब वह जवान हुआ तो उसे जंगल में तपस्या करने के लिए भेजा। उसने 24 वर्ष घोर तपस्या की लेकिन उसे कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई क्योंकि उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि वाहिगुरू जी को कैसे मिला जाता है, लेकिन उसका इरादा बहुत दृढ़ था। जब जंगल में रहते हुए तपस्या करके, उल्टे लटकर कर, भूखे रह कर उसका शरीर सूखकर काँटा हो गया तो उसे यह आवाज आई कि परमात्मा तो तेरे अन्दर है। तुम मुरशद-ए-कामल भावार्थ समर्थ गुरू की चरण-शरण में जाओ वह तुम्हारा मिलाप परमात्मा के साथ या खुदा के साथ करवा देगा। यथा -

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥
अंग - 1378

धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥ अंग - 1263

हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ॥
भाँभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥
अंग - 624

अपने जोर के द्वारा कोई भी परमात्मा को पा नहीं सकता है, केवल पूरा गुरू ही हमें सही मार्ग पर डालता है। यह वचन हम सबके लिए साझा है। पण्डित गुरू, अन्धा गुरू व कच्चा गुरू, इन तीनों में से कोई भी इस जीव को भवसागर से पार नहीं कर सकता है लेकिन जो समर्थ गुरू होता है वह इस जीव को सद्मार्ग पर डाल सकता है। परमात्मा तथा जीव दोनों एक जगह ही रहते हैं लेकिन जो हउमै है वह वाहिगुरू जी को देखने नहीं देती है। हउमै का पर्दा तो बहुत बारीक है लेकिन जीव तथा परमात्मा बीच में दीवार बनाकर खड़ा हो गया है। इस मन के अन्दर ही वाहिगुरू है। इसीलिए वाहिगुरू साथ में होता हुआ भी दूर प्रतीत होता है। संसार के अन्दर पूरा सतगुरू ही हउमै की दीवार को तोड़ने में समर्थ होता है। अधूरा गुरू कभी भी जिज्ञासु को पार नहीं कर सकता है लेकिन यदि पूरा गुरू मिल जाए तो बात बन जाती है।

पीर बुद्धूशाह जी, सढौरे वालों ने बड़े ही कठिन तप किए थे। कई बार मक्का जाकर काबा शरीफ का हज भी कर चुका था। इसके मुरीद भी बहुत थे लेकिन प्राप्ति न होने के कारण मन शान्त नहीं था। इसके मन में विचार आया कि पीर तो मैं बना हुआ हूँ लेकिन मैं आन्तरिक तौर पर अभी अधूरा ही हूँ क्योंकि वह अन्दर से ईमानदार था। यह पीर होने के साथ-साथ जागीरदार भी था तथा हिन्दू व इस्लाम दोनों मत वालों को समदृष्टि से देखता था। इसीलिए उसने एक लंगर हिन्दू मत वालों के लिए पृथक चलाया हुआ था और एक लंगर इस्लाम वालों के लिए अलग लगाया हुआ था। वह गुरू दशमेश पिता जी को बहुत प्यार करता था और गुरू घर का बहुत हितैषी था। भंगाणी के युद्ध में आपने दो पुत्र, एक भाई तथा 500 से अधिक अपने शहीद करवाए। इसने साधुओं के द्वारा सुना हुआ था कि कामल मुर्शिद यानि कि समर्थ गुरू के बिना रूहानी सफर तय नहीं हो पाता है तथा न ही ज्ञान का प्रकाश हुआ करता है। उसके मन में विचार आई कि गुरू गोबिन्द सिंह जी समर्थ गुरू हैं, इसलिए क्यों न उन्हें मिलकर अपना कार्य पूरा किया जाए। जिस समय दसवें पातशाह जी पांवटा साहिब की धरती पर निवास कर रहे थे तो पीर बुद्धूशाह जी इस मनोरथ की पूर्ति के लिए अपने मुरीदों को साथ में लेकर गुरू पातशाह जी के दर्शनार्थ पहुँच गया। जब यह पास में पहुँचा तो उस समय दीवान लगा हुआ था तथा गुरू महाराज जी तख्त पर सुशोभित थे। दूर से ही दर्शन करके मन में इतना आकर्षण उत्पन्न हुआ कि अपने मन के अन्दर यह सोचने लगा पड़ा कि मैंने इनके चरण पकड़ लेने हैं और तब तक नहीं छोड़ने हैं, जब तक कि वे मुझे खुदा से मिला नहीं देते हैं। जब वह पास में गया तो महाराज जी के स्वरूप को देखकर मन में शंका उत्पन्न हो गई कि ये तो लगभग बीस वर्ष की आयु के हैं और इनके चेहरे पर तो अभी-अभी ही दाढ़ी आने लगी है और मैं बुजुर्ग हूँ। मैंने तो बहुत सारे तप किए हैं, बहुत कठिन साधनाएँ की हैं, काबे का हज भी किया है, मैं नेक कार्य भी करता हूँ और दान भी करता हूँ। यदि मैं इनके चरणों पर झुकुँगा तो मेरे मुरीद कहेंगे कि हमारा पीर सिक्खों के गुरू के आगे झुक गया। अब बाहर के वैरी तो कुछ नहीं कहते हैं लेकिन जो शंका है, हउमै है इसके जैसा वैरी दुनिया में कोई दूसरा नहीं है क्योंकि यह भ्रम में डालकर वाहिगुरू जी की तरफ से तोड़कर रखता है। उस समय उसके अन्दर इस प्रकार के

ख्याल पैदा हो गए जिसकी बदौलत उसकी श्रद्धा वाली तार टूट गई। अब वह सतगुरू जी को नमस्कार करने की बजाए उनसे हाथ मिलाने के लिए ही तैयार हुआ उसने हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ दशमेश जी की तरफ बढ़ाया। उधर दशमेश जी ने भी हल्का सा हाथ पीर जी की तरफ किया और कहा पीर जी! आओ बैठो! आपने किस प्रकार दर्शन दिए हैं? उस समय वह कहने लगा महाराज जी! जब मैं पावन गुरवाणी के इस श्लोक को पढ़ता हूँ और पढ़कर उसकी विचार करता हूँ तो मुझे उसके रहस्यात्मक भाव समझ में नहीं आते हैं। गुरवाणी की पंक्तियां हैं -

नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरु आहि ॥
आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥

अंग - 550

मैं आपके पास इस शंका की निवृत्ति के लिए उपस्थित हुआ हूँ और मेरा सवाल है कि जीव और खुदा का मेल कैसे? क्योंकि इसके अन्दर एक तो वह है जो कि साखी हैं, वह कर्ता नहीं है, वह भुक्ता भी नहीं है, वह किसी भी चीज में लिप्त नहीं होता है और वह सदैव आनन्द में रहता है। दूसरा वह है जो स्वयं को सुखी, दुखी, कर्ता, भुक्ता व परलोक में आने जाने वाला समझता है। इन दोनों के भेद का मुझे कुछ भी पता नहीं लगता है। कृपा करके मेरा भ्रम दूर करो और बताओ कि जीव और खुदा का मेल कैसे? महाराज जी बोले कि सत्य और झूठ का जैसे। अब पीर जी और भी अधिक चक्र में पड़ गए कि सत्य और झूठ तो आपस में मिलते ही नहीं हैं। वह कहने लगा, सच्चे पातशाह जी! मैं अभी तक समझा नहीं क्योंकि रात और दिन का तथा सत्य और झूठ का कोई मिलाप ही नहीं होता है। महाराज जी कहने लगे कि यदि दिन चढ़ जाए तो रात अलोप हो जाती है, जब खुदा का दर्शन हो जाए तो उस समय झूठी 'मैं' मर जाती है। जीव भाव के कारण, जो यह 'मैं' बना हुआ है, यह झूठ है, असलियत में तो यह जीवात्मा है। आत्मा और परमात्मा का तो कभी बिछोड़ा ही नहीं होता है, ये तो हमेशा मिले ही रहते हैं। आत्मा के अन्दर जो जीव की कल्पना है वह तो बिल्कुल ही असत्य है। जिस प्रकार से अन्धकार में पड़ी हुई रस्सी को साँप समझ लिया जाए। अब अन्धेरे ने भ्रम में डालकर रस्सी को साँप बना दिया। इसी प्रकार से हउमै का भ्रम पड़ जाने के कारण जीव बन गया, रूह बन गई लेकिन साखी, चेतन सत्य है, उसका कभी भी बिछोड़ा नहीं होता है और परमात्मा के साथ सदैव मिलाप रहता है।

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥
आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥

अंग - 846

कहने लगा, महाराज जी! यह झूठी 'मैं' जीव का पीछा क्यों नहीं छोड़ती है? महाराज जी कहने लगे इस जीव को लम्बे समय से पाँच भ्रम पड़े हुए हैं, जिस कारण से इसका अध्यास पक गया है। एक उदाहरण के माध्यम से यह सारी बात समझ में आ जाएगी।

एक बार का जिक्र है कि राजा जनक सिंहासन पर बैठा हुआ है, दरबार लगा हुआ है। गर्मी का मौसम होने के कारण आस पास से सारे वातावरण को ठंडा किया हुआ है। सिंहासन पर बैठे हुए को नींद आ गई और सपने में ही किसी राजा ने उसके ऊपर हमला कर दिया और इसे युद्ध में हरा दिया, फलस्वरूप इसकी बहुत अधिक बेइज्जती करके इसे महलों में से बाहर निकाल दिया। लोग इसे ईंट व रोड़े मारते हैं। बड़ी मुश्किल से यह अपनी जान बचाकर दूसरे राज्य में चला जाता है। इसके कपड़े फटे हुए हैं और जख्मों में से खून बह रहा है तथा पैरों में जूते नहीं हैं, आखिर यह थक गया और एक बेरी के कटे हुए वृक्ष के ठूठ पर बैठ गया। वहाँ पर इसने एक व्यक्ति को पूछा कि मुझे बहुत भूख लगी हुई है क्या कुछ खाने को मिलेगा? उस व्यक्ति ने बताया कि वह सामने लंगर लगा हुआ है, वहाँ पर खिचड़ी वितरित की जा रही है, जाओ तुम भी पंक्ति में खड़े होकर खिचड़ी ले लो। यह भी वहाँ गया और पंक्ति में खड़ा हो गया। वहाँ पर खिचड़ी वितरित करने वाले लांगरी ने कहा कोई बर्तन लेकर आओ। इसने एक-एक कौड़ी मांगकर दस कौड़ियां एकत्र की और फिर दस कौड़ियों के बदले में एक मिट्टी के बर्तन को लेकर वहाँ पर पहुँचा लेकिन तब तक सारी खिचड़ी समाप्त हो चुकी थी। अब लांगरी ने जो कुछ बर्तन निचले भाग में, खिचड़ी का जला हुआ अंश लगा हुआ वही खुरच कर उसके बर्तन में डाल दिया और उससे कहा कि जाओ! वहाँ से घी डलवा लो और खा लो अन्यथा यह तुम्हें खानी भी मुश्किल पड़ेगी। जब वह बैठने लगा तो उसे कोई अपने पास में बैठने ही न दे क्योंकि उसके सिर के बाल बिखरे हुए थे, कपड़े फटे हुए थे और लहूलुहान होने के कारण शरीर की हालत बहुत दयनीय हुई पड़ी थी। थोड़ी दूरी पर बैठकर जब वह खाने लगा तो दो सांढ़ भिड़ते हुए वहाँ पर आ गए, फलस्वरूप वह भी उनकी चपेट में आ गया और इसी भय में उसकी नींद खुल गई फलस्वरूप वह जाग गया। जब वह जाग गया तो उसने देखा कि वह तो सिंहासन पर बैठा हुआ है। लेकिन सपने में जो उसकी इतनी दुर्दशा हुई तो उसके कारण उसके मन में चिन्ता बैठ गई कि ऐसा क्यों हुआ है? अब उसने सभा को स्थगित कर दिया और स्वयं आराम करने वाले कमरे में जाकर बैठ गया। अब वह किसी भी वजीर या रानियों के साथ बात नहीं करता है और किसी गहरी सोच में डूबा हुआ है। काफी देर बाद वह बाहर आया और घोड़े पर सवार होकर जंगल की तरफ चल पड़ा। वहाँ पर जाकर उसने जब सपने वाले सारे वातावरण को देखा तो वह हैरान रह गया कि उसी प्रकार से ईंट व रोड़े बिखरे

पड़े हैं, उसी प्रकार से बेरी का ठूठ है और लंगर भी चल रहा है।

अब उसे पक्का भ्रम पड़ गया कि यह सब सपना है या फिर वह सपना था? फलस्वरूप वह सभी सन्त महात्माओं को बुलाकर एक ही सवाल करता जा रहा है कि यह सच्चा है कि वह सच्चा था? अब कोई भी साधू-सन्त जवाब नहीं दे पा रहा है, फलस्वरूप वह किसी भी साधू-सन्त को अपने घर नहीं जाने दे रहा है। वह बार-बार यह कहता है पहले मेरे सवाल का जवाब दो, उसके बाद आप अपने घर जाओ। लेकिन साथ ही वह सबके घर परिवार के लिए खर्चा भी देता है और उनकी स्वयं की भी खूब सेवा करता है। जब इसी प्रकार से आठ वर्ष बीत गए तो एक बच्चा, जिसका नाम अष्टावक्र था और जो बाल ब्रह्मचारी व ब्रह्मज्ञानी था, वहाँ पर आता है। दरअस्ल अष्टावक्र का पिता भी राजा जनक की कैद में बन्द था। जब इसे इस बात का पता चला तो वह राजा के सवाल का जवाब देने के लिए पहुँच गया। जब यह (अष्टावक्र) वहाँ पर पहुँचा तो सारे साधूजन इसे देख कर हँस पड़े। उनके हँसने का कारण यह था कि उसके शरीर में आठ जगह से मोड़ पड़ते थे। इधर यह भी उन्हें चिढ़ाने के लिए हँसने लग पड़ा। इसके हँसने का उन सभी साधूजनों ने बहुत ऐतराज किया। राजा जनक ने कहा, बाल ब्रह्मचारी! ये सब तो धुरन्धर साधू हैं और यह विद्वानों की सभा है इसलिए तुम्हें इन्हें देखकर हँसना नहीं चाहिए था क्योंकि ऐसा करके इनका निरादर होता है। अष्टावक्र बोला राजन! मैं तो इनकी बुद्धि को देखकर हँसा हूँ क्योंकि ये मेरे शरीर को देखकर हँसे हैं और इसलिए ये तो केवल चाम के व्यापारी हैं। इन्हें तो इतना भी ज्ञान नहीं है कि मेरी आत्मा में तो कोई भी बल नहीं है। यदि गन्ना टेढ़ा-मेढ़ा हो तो उसका रस तो टेढ़ा-मेढ़ा नहीं होता है। दरअस्ल ये लोग तो आत्मदर्शी ही नहीं हैं और इसीलिए ये आपके सवाल का जवाब नहीं दे सके हैं। अतः आप मुझसे सवाल करो, मैं उसका जवाब दूँगा। राजा जनक कहने लगा कि बाल ब्रहमचारी जी ! यह सच्चा है अथवा वह सच्चा है? अष्टावक्र ने बतलाया राजन! दोनों झूठे हैं। राजा बोले, मुझे तो बात कुछ समझ में नहीं आई है। अष्टावक्र ने कहा कि यदि आप खोल कर सवाल करोगे तो मैं खोल कर जवाब दूँगा। यह सुनकर राजा जनक चुप कर गया क्योंकि इस प्रकार की हालत बताते हुए लज्जा आती है। आप कहने लगे राजन! सपने के अन्दर तुम्हारा राज भाग छिन गया और तुम भिखारी बन गए, फलस्वरूप तुम्हारी बहुत दुर्दशा हुई जिसका प्रभाव मन के अन्दर बहुत गहरा चला गया। अब पता नहीं लग रहा कि कौन सच्चा है और कौन झूठा है, लेकिन वास्तव में तो दोनों ही झूठे हैं क्योंकि जिस प्रकार से वह रात का सपना था, उसी प्रकार से यह जगत भी जीवन रूपी सपना है।

जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार॥ *अंग - 808*

जगि जीवनु अैसा सुपने जैसा॥
जीवनु सुपन समानं॥ *अंग - 482*

यदि जगत सच्चा होता तो हमारे माता-पिता भी हमेशा यहीं रहते। वे चले गए तो हमने भी चले जाना है, इसलिए यह भी सपना ही है। रात वाला तो सपना ही था, जिस प्रकार से उसका अध्यास पक गया इसी प्रकार से हम लोग जीवन के सपने को भी सत्य मानकर बैठे हुए हैं। इस प्रकार से ऋषि अष्टावक्र ने राजा जनक के भ्रम को दूर किया।

महाराज जी कहने लगे, पीर जी! लम्बा अध्यास होने के कारण जीव को भ्रम पड़ गया है, फलस्वरूप झूठी 'मैं' ने सत्य को ढक लिया है, जैसे कि तालाब के पानी को जाला ढक लेता है और अमरबेल बिना जड़ से ही वृक्ष को ढक लेती है। पीर जी कहने लगे, महाराज जी! फिर सत्य का प्रकाश कैसे हो? महाराज जी ने कहा, हउमै का त्याग करके। पीर जी ने कहा, जनाब! हउमै का त्याग करने के लिए तो मैंने बहुत साधन किए, व्रत रखे, चालीसे काटे, काबा जी के दर्शन किए तथा हज यात्राएँ कीं लेकिन हउमै का नाश नहीं हो पाया। महाराज जी कहने लगे, पीर जी! यह तो तुमने हउमै की जंजीरें और अधिक लपेट लीं। पीर जी ने कहा, महाराज जी कृपा करके आप मुझे इसका कोई और उपाय बतलाओ। महाराज जी ने कहा सत्संग के बिना इसका कोई और उपाय नहीं है। उसने कहा, महाराज जी! मैं सत्संग करने ही तो आया हूँ। महाराज जी बोले, पीर जी! आए तो हो लेकिन झूठ का कवच पहन कर या झूठ का चोला पहनकर आए हो कि मैं पीर हूँ, यदि मैं इसके चरणों पर झुक गया तो मेरे चेले क्या कहेंगे क्योंकि मैं तो पीर हूँ, जबकि यह गुरू तो अभी बीस वर्ष का ही है। कहने लगा, महाराज फिर यह पर्दा दूर कैसे होगा? महाराज जी बोले, झूठ के चोले को उतार कर फेंक दो जिसने पर्दा किया हुआ है। अब यह बात पीर जी को एकदम समझ में आ गई, फलस्वरूप उसके अन्दर इतना अधिक दिव्यानन्द आ गया कि उसने नाचना शुरू कर दिया। जब यह गुरू जी के और करीब में आया तो महाराज जी ने अपनी बाँह आगे करके इसका हाथ पकड़ लिया और हल्का सा दबा दिया। बस हाथ पकड़ने की देर थी कि गुरू जी ने अपनी कृपा करके जीव तथा ब्रह्म का मिलाप करवा दिया। यानि कि कृपा कर दी जो कि केवल समर्थ गुरू ही कर सकता है, अन्य कोई भी यह कृपा नहीं कर सकता है। अब उसके बज्र कपाट खुल गए, जब झूठ की दीवार ही टूट गई तो फिर दूसरा कोई दिखाई ही नहीं आता है, फिर चहुँओर परमात्मा के हुक्म का खेल ही दिखाई दे रहा है यानि कि अब तो जर्रे-जर्रे में वही दिखाई पड़ रहा है।

'चलता'

गुरु नानक आगमन

(श्री गुरु नानक चमत्कार)

पद्म भूषण डा. भाई वीर सिंह जी

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 42)

श्री गुरू नानक प्रकाश में लिखा है कि रात के समय जब गुरू जी की धूनी का सामान योगियों ने भाई बाले से छीन लिया तो गुरू जी के समक्ष बकरी की चार मेंगनो से एक बहुत बढ़ी धूनी लग गई। जब सिद्धों ने देखा कि गुरू जी के आगे तो बड़ी अच्छी धूनी जल रही है तो उन्होंने बहुत ही घनघोर आँधी (माया व शक्ति के द्वारा) चली दी लेकिन इसका भी असर उल्टा ही पड़ा क्योंकि इस आँधी के प्रभाव से सिद्धों की धूनियाँ तो बुझ गईं जबकि गुरू जी की धूनी जलती रही। जब सुबह हुई तो ठंड के मारे सिद्ध आग की तलाश में इधर उधर घूमने लगे उन्होंने अपनी मानसिक शक्ति का भी प्रयोग किया लेकिन आग न जल पाई। अन्त में उन योगियों ने हार मानते हुए भरथरी को भेजा कि जाओ! गुरू जी से ही आग माँग लाओ। जब भरथरी गुरू जी के पास आया तो गुरू जी ने कहा हे भरथरी योगी! पहले गोरख की खड़ाऊ व कुण्डल लेकर आओ, उनके बदले में आग देंगे। अतः जरूरत की पूर्ति के लिए भरथरी इन दोनों चीजों को गुरू जी को देकर बदले में आग ले गया। इस प्रकार करने से लिखा है कि गोरख की शक्ति चली गई, अब शर्म के मारे उनकी चित्त वृत्ति भी संयम में न रही पाई। गोरख को उदास देखकर भंगरनाथ बहुत गुस्से से भर गया। अब वह गुरू जी के पास आया और बोला कि इसमें दूध भर दो। गुरू जी ने उसमें पानी भर दिया लेकिन वह स्वतः ही दूध बन गया और योगियों ने आपस में मिलकर खूब दूध पिया लेकिन वह दूध समाप्त ही नहीं हुआ, इस प्रकार से और भी कई प्रकार के परीक्षण व परखें हुईं लेकिन सिद्ध लोग गुरू जी को जीत न सके। जब गुरू जी के सत्य व शक्ति के सामने योगी लोग टिक ही न सके तब ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने सोचा होगा कि वह शक्तियाँ जो कि मन को संयम व दृढ़ करने से प्राप्त होती हैं और जिन्हें योग दर्शन में विभूतियाँ लिखा है, हमारे पास गुरू नानक देव जी से कम हैं, तब उनके मन में एक भ्रम उत्पन्न हो गया कि इसने तो हमसे भी बड़ा कोई योग साधा हुआ है। फिर वे सोचने लगे कि यह स्थान गोरखमता हमारा एक बहुत बड़ा अड्डा है, कहीं ऐसा न हो कि इनकी ताकत के कारण यह हमसे छिन ही न जाए। जिस प्रकार से बनारस, संस्कृत के पण्डितों का बहुत बड़ा अड्डा था, उसी प्रकार से गोरखमता मानो कुण्डलधारी योगियों की राजधानी ही थी। यहाँ पर इनका अड्ढा था और ये सभी एक खास समय पर एकत्र होते थे और यहाँ मेला भी लगता था तथा उस समय इनकी खूब पूजा भी होती थी। यह मौका अब वही था कि जिस समय वे गुरू जी को अपना शिष्य बनाकर अपनी बहुत बड़ी जीत सिद्ध करना चाहते थे। लेकिन येन-केन-प्रकारेण यत्न करने के बावजूद उन्हें हार का ही सामना करना पड़ा। यही कारण था कि वे अब किसी न किसी प्रकार से गुरू जी को लोगों की नजरों में नीचा करने की कोशिश में जुट गए। उन्हें यह भी डर सता रहा था कि यदि हम लोग हारते ही चले गए तो हमें यहाँ से रफूचक्कर भी होना पड़ सकता है। क्योंकि गुरू जी यहाँ पर डटे रहेंगे और जो हमारे अनुयाई हैं वे भी शनैः-शनैः इन्हीं के अनुसरणकर्ता बन जाएँगे। फिर एक तो यह अड्डा हमारे हाथ से निकल जाएगा और दूसरा बदनामी भी होगी। अतः उन्होंने सोचा कि अब किसी न किसी प्रकार से इन्हें यहाँ से भेज ही देना चाहिए ताकि हमारा ठिकाना यहाँ पर सुरक्षित रह सके। यह सोचकर एक दिन उन्होंने गुरू जी को कहा कि आप यहाँ से चले जाओ। गुरू जी बोले, योगीजनो! यह सारी धरती तो परमात्मा की है और हमें तो किसी टिकाने कोई पकड़ ही नहीं है, अतः हम चले तो जाएँगे लेकिन जिस प्रकार से तुम लोग हमें यहाँ से भेजना चाहते हो उस प्रकार से हम नहीं जाएँगे। हम यहाँ पर कब्जा करने व तुम्हें यहाँ से निकालने नहीं आए हैं। हम तो यह तलाश कर रहे हैं कि इस असत्य की अमावस्या में क्या कोई ऐसा टिकाना भी है, जहाँ पर कि कोई सत्य का प्रकाश हो? इसलिए हम तो यहाँ पर इसलिए आए थे कि हम यह बात देखें कि तुम्हें अपनी पूजा करवाने और लोगों को दबाकर रखने का ही फिक्र है अथवा तुम लोग सही ढंग से संसार का उद्धार भी कर रहे हो? जो हमने तुम लोगों में देखा है यह हालत अन्धकार की ही है। तुम्हारा धर्म तो यह था कि तुम स्वयं वाहिगुरू जी से जुड़ो, मन की वासनाओं को अपने वश में करो, फिर मन को मार कर उसे मृत ही नहीं बना देना अपितु मन को साध कर उसे एक स्वतन्त्र उड़ते हुए पक्षी की भांति आनन्द के प्रकाश में बसा देना और इसे किसी माया के अथवा विकार की कैद में न रहने देना। वैसे उसकी स्वतन्त्र सत्ता पक्षी की भांति हो लेकिन वह अन्धकारमयी मैली जगहों, नालियों, व गन्दगीयुक्त स्थान पर कदम न रखे। अब आप सब लोग हमारा कहना मानो और इस मार्ग का त्याग

करके नाम जपो, जागो, उल्लास के घर आओ, जगत को जगाओ, उन्हें नाम के साथ जोड़ो ताकि वे आत्मिक उल्लास में खिल जाएँ। तुम्हें यदि यह भय सता रहा है कि कहीं तुम्हारी पूजा ही समाप्त न हो जाए तो हमें अपनी पूजा करवाने का तो तनिक सा ख्याल भी नहीं है। तुम लोग निश्चिन्त रहो क्योंकि हमने स्वतः ही चले जाना है लेकिन तुम लोगों के साथ सभी प्रकार की विचारें करके ही जाएँगे।

अब इस प्रकार के समझौते के बाद भी योगियों के मन स्थिर नहीं हो पाए और उल्टा वे कहने लग पड़े कि सबसे पहले तो आप इस जगह के स्वामित्व का निर्णय कर लो। गुरू जी बोले, हमें तो जगह के स्वामित्व की कोई जरूरत ही नहीं है। योगी बोले कि यदि आप अपनी पूजा करवानी चाहते हो तो शक्ति दिखलाओ और सारा न्याय शक्ति के आधार पर ही होगा। इसके लिए हम लोग किसी हाकिम के पास नहीं जाएंगे बल्कि धरती को ही पूछ लेते हैं कि हे धरती! तुम योगियों की हो या फिर गुरू नानक की? उस समय गुरू नानक देव जी मुस्कुराते हुए बोले -

शकतीवान एको जगतेशा। हमरै बिखै पायत लेशा।
अजमत को हंकार तुमारे। हमहि दिखावहु देखनहारे।
श्री गुरु नानक प्रकाश

उस समय सिद्धों ने आवाज दी कि हे धरती! यदि तुम हमारी हो तो बोल पड़ो कि मैं तुम्हारी हूँ और तुम इस बात को तीन बार कहो ताकि कोई शंका न रह जाए। यह कहने के बाद धरती के अन्दर से बहुत ही मद्धम से स्वर में आवाज आई कि 'मैं सिद्धों की हूँ।' दूसरी बार पुनः सिद्धों ने पूछा तो फिर आवाज आई कि 'मैं निश्चित रूप से सिद्धों की ही हूँ, अन्य किसी की नहीं।' सिद्ध आश्चर्यजनक रूप से खुश होकर दिखला रहे थे कि अब हमने गुरू नानक को हरा लिया है। अब तीसरी बार सिद्ध पुनः उच्च स्वर में व प्रसन्नता की मुद्रा में बोले, हे धरती! तुम किसकी हो? तीसरी बार बोलो ताकि सारा झंझट ही समाप्त हो जाए। इस बार गुरू जी बोले, अरे! अभी तक बोलने योग्य बचे हुए ही हो? इसके बाद सिद्धों ने खूब जोर लगाया लेकिन फिर आवाज नहीं आई। गुरू जी जल्दी से उठे और जहाँ से आवाज आ रही थी, वहाँ पर जाकर खड़े हो गए। वहाँ पर जो घास फूस पड़ा हुआ था उसे दूर करने लगे। सिद्ध भी शीघ्रता से वहाँ पर पहुँच गए, गुरू जी ने कहा, इस जगह को खोदो। सिद्ध उस जगह को खोदना नहीं चाह रहे थे। आखिर शर्म के मारे आँखें नीची करके जगह खोदने लगे और वहाँ पर एक सिद्ध बालक मरा हुआ पड़ा दिखाई दे रहा था। बात यह थी कि रात के समय सिद्धों ने गड्ढा खोदकर एक सिद्ध बालक को बिठा दिया था और ऊपर से घास-फूस की हल्की सी छत डालकर उसके ऊपर मिट्टी व घास-फूस सा फैला दिया था। आवाज के लिए एक पर्याप्त छेद रख लिया था कि जब हम धरती को पूछेंगे तो यह आवाज जो बालक देगा तो वह धरती की आवाज समझ कर हमारी करामात ही मानी जाएगी, लेकिन सिद्धों को यह नहीं पता था कि यह खेल भी उन्हें उल्टा ही पड़ेगा। जगत गुरू जी इस प्रकार की चालाकियों के चक्रव्यूह में फँसने वाले नहीं थे। वे जानते थे कि योगी लोग माया का खेल खेल रहे हैं। विभूतियाँ भी एक माया ही है लेकिन उसके अन्दर कपट नहीं होती है, जबकि यहाँ पर तो योगी इतना नीचे गिर गए हैं कि वे छल-कपट के माध्यम से नाटक करके उसे सिद्धियाँ बतलाने लग पड़े। अतः गुरू जी ने उस रहस्य का खुलासा कर दिया।

वास्तव में करामात की परिपाटी जो साधुओं के अन्दर डालता है वह बहुत दुखी होता है। यदि किसी साधना या तपस्या की बदौलत, किसी एकाग्रता के कारण अथवा किसी कृपा के कारण किसी के अन्दर कोई मानसिक बल आ भी जाए तो उसका उसूल यह है कि वह उसे मन के टिकाव के लिए प्रयुक्त करे, तभी वह सुखी रहता है लेकिन यदि वह इसका प्रयोग अपने ऐश्वर्य व प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए करने लग पड़े तो जिस प्रकार से प्रत्येक वस्तु खर्च करने से घटती है, उसी प्रकार से यह मानसिक शक्ति भी खर्च होती रहती है और जब साधू बार-बार इसका प्रयोग करके इसे खर्च कर लेता है तो फिर उसे बनावटों व छल कपट के हथकंडे अपनाने पड़ जाते हैं। इसी प्रकार के कई छल-कपट अमेरिका के मीडिया ने भी रेखांकित किए हैं जो कि तथाकथित साधुओं द्वारा मानसिक शक्ति समाप्त हो जाने के बाद किए जाते रहे हैं। दरअस्ल यदि किसी साधक को कभी-कभार किसी सिद्धि की झलक पड़ ही जाए तो उसे उस शक्ति को हमेशा दिखाने की ललक लग जाती है लेकिन जब वह ऐसा करके अपनी उस शक्ति का ह्रास कर बैठता है तो फिर वह दुखी होता है और कभी-कभी वह इसकी भरपाई दम्भ, पाखण्ड और बनावटों के द्वारा करने की कोशिश करता है तथा अपने पीर होने का भ्रम उत्पन्न करता है। पहले तो वह माया के अन्धकार में होता है कि मैं बड़ा बन जाऊँ, फिर वह झूठ, फरेब, तथा कपट वाले निम्न कोटि के कार्यों में पड़कर अपने आन्तरिक निजत्व को और भी मलिन कर लेता है। कई लोग तो फिर धन बल के माध्यम से भाषण देने वाले चेलों को नियुक्त करते हैं जो कि लोगों के अन्दर उनके बारे में करामाती होने का शोरगुल उत्पन्न करते हैं, फलस्वरूप वे भोले लोगों को फँसाने का कार्य करते हैं और कई बार उपर्युक्त योगियों की भांति नाटक, तमाशे व चालाकियों के माध्यम से इस प्रकार के कृत्य करके दिखलाते हैं। माया बहुत शक्तिशाली है, मुक्ति की इच्छा वाले साधक, सन्त, जिज्ञासु व महात्मा कभी भी इस मार्ग पर न पड़ें। साईं के साथ लिव जोड़कर वे जीवन की वास्तविक सच्चाई पर टिकें, उसके बाद जो करतार करे सो करे। साधक को नाम के रंग में रहना चाहिए। किसी समय जब करतार किसी के कल्याणार्थ स्वयं इस माध्यम से कोई लीला करे तो अहंकार न करे बल्कि उसे डरते रहना चाहिए कि कहीं यह लीला हमें अन्य किसी

बड़ी हउमै में फँसा न दे। उसे स्वयं नाम जपना चाहिए तथा अन्य लोगों को भी जपाना चाहिए तथा करामात की इच्छा में कभी भी दिखावे में नहीं पड़ना चाहिए। संसार के अन्दर तो उपर्युक्त योगियों की भांति बहुत पाखण्ड चल रहा है। इसीलिए श्रद्धालुजनों को या जिज्ञासुओं को सोच समझ कर ही आगे बढ़ना चाहिए। अब योगियों के सम्बन्ध में बात यह हुई कि जब उनके पाखण्ड का पर्दाफाश हो गया और तप साधना के बल से जो कुछ थोड़ी बहुत उनमें शक्ति विद्यमान भी थी, वह भी समाप्त हो गई। कवि सन्तोष जी लिखते हैं कि योगी, गुरू जी से हार जाने के बाद इस प्रकार से बैठे हैं -

प्रतीत होता है कि जब योगियों के पाखण्ड का पर्दाफाश हो गया तो जो लोग वहाँ पर मौजूद थे, वे सब भी गुरू जी की तरफ ही मुड़ गए, भावार्थ उन्हीं के श्रद्धालु बन गए। उधर योगीजन भी एक-एक करके वहाँ से खिसक गए। यह भी उल्लेख मिलता है कि जो भरथरी आदि भले योगी थे, उनका झुकाव भी गुरू जी की तरफ हो गया और अगले मिलापों में बढ़ता-बढ़ता ऐसी अवस्था आ गई कि वह (भरथरी) गुरू जी का गुणगान करते-करते फिर सदैव उन्हीं के साथ रहने लग पड़ा।

अब इसके बाद हुआ यह कि योगी धीरे-धीरे वहाँ से चले गए और उस जगह का नाम 'गोरखमता' की जगह पर 'नानकमता' पड़ गया, जो कि आज तक प्रसिद्ध है। यह भी लिखा मिलता है कि जो सिद्ध बालक, धरती के अन्दर छिपाया हुआ था और जो मृत निकला था, गुरू जी की कृपा से वह जीवित हो उठा।

गुरू जी तो अब वहाँ से आगे के लिए प्रस्थान कर गए लेकिन वहाँ के लोग, जो कि गुरू जी के उपदेश की बदौलत इस दिशा में जुड़ गए थे, वे श्रद्धावान हो गए। कोई एक त्यागी, जो कि उन्हीं के बीच से था, एक कुटिया डालकर वहाँ पर रहने लग पड़ा और कालान्तर में वह स्थान यात्रा का स्थान बन गया। यू.पी. के अन्दर नानक पंथी लोग कई जगह पर हैं, लेकिन इनका आरम्भ यहीं से हुआ प्रतीत होता है। बाद में यह स्थान उदासी सन्तों का टिकाना बन गया। अब तक वहाँ पर एक डेरा है और आम लोग तथा गुरू नानक के पन्थ के लोग उस स्थान की पूजा करते रहे हैं। इतना सब होने के बाद भी योगियों की ईर्ष्या उस स्थान के साथ जुड़ी ही रही। छठे महाराज जी के समय योगियों ने पुनः उस स्थान पर कब्जा करने की कोशिश की। वहाँ का जो साधू, उस स्थान की सेवा करता था, अकेला ही था। वह उन योगियों के समूह के सामने लाचार हो गया। अब उसने सतगुरू जी की आराधना करनी शुरू की और उसने अपनी ध्यान शक्ति से गुरू जी को अपनी तरफ खींच लिया। गुरू छठे महाराज जी को अपने पूर्वज श्री गुरू नानक देव जी के पावन स्थान का निरादर कैसे अच्छा लग सकता था। कहाँ पंजाब और कहाँ पीलीभीत और नैनीताल यानि कि पाँच, छः सौ मील का फासला लेकिन आप वहाँ से चल पड़े तथा लगभग पचास घुड़सवार आपने अपने साथ ले लिए। आप शनैः-शनैः नानक मते के टिकाने पर आ पहुँचे।

उधर योगियों को पहले ही पता चल चुका था कि छठे गुरू साहिब जी अपने आदि गुरू साहिब का निशान मिटता हुआ देखकर आ गए हैं और उनके आगे हम लोगों की एक नहीं चल सकेगी, अतः उन्होंने वहाँ से कूच कर जाने में ही अपनी भलाई समझी। लेकिन वहाँ से कूच करने से पहले उन्होंने उस पीपल को, जिसके नीचे श्री गुरू नानक देव जी बैठे थे और जिसके चहुँओर यादगार खड़ी थी, आग लगाकर जला दिया तथा गुरू जी के वहाँ पर पहुँचने से पहले वे लोग यानि कि सारे योगीजन वहाँ से रफूचक्कर हो गए।

सतगुरू जी ने वहाँ पर पहुँच कर डेरा किया तथा जो स्थान गुरू नानक पन्थी साधू का छिन गया था, उसे पुनः उस स्थान पर काबिज करवा दिया तथा दो-चार शूरवीरों को वहाँ पर छोड़कर आपने वहाँ का पक्का प्रबन्ध कर दिया लेकिन बाद में जब श्री चन्द जी के माँगने पर गुरू जी ने उन्हें अपने बड़े सपुत्र बाबा गुरदित्ता जी को सौंप दिया तो फिर उन्होंने उदास मार्ग को चार चाँद लगाए। उदास सम्प्रदाय के प्रचार का सारा सेहरा बाबा गुरदित्ता जी के सिर पर है। चार धूनियाँ अर्थात चार बड़े प्रचारक आप जी ने ही पैदा किए। इस प्रकार से यह टिकाना भी पुनः इन उदासियों की सुपुर्दगी में ही आ गया, जो कि अब तक है।

श्री गुरू नानक देव जी द्वारा हरा किया गया पीपल का वृक्ष, जिसके नीचे आप उन दिनों में टिके थे और जहाँ पर बैठकर आपने सत्य की जीत करके दिखलाई थी तथा जहाँ पर सूखे पीपल को हरा किया था, उस निशानी का मिट जाना गुरू जी को अच्छा नहीं लगा। आपने बहुत सारा केसर रगड़वा कर हाथ में ले लिया तथा सारा वृक्ष पर छिड़क दिया और वचन किया हे सत्य के महाराज श्री गुरू नानक देव जी की निशानी! तुमने नहीं मिटना, तुम सुरजीत हो जाओ और पुनः हरे-भरे हो जाओ। तुम्हारे ऊपर केसर छिड़का है, केसर की छींटे मारे हैं, तुम्हारे पत्तों पर सफेद दाग हुआ करेंगे जो कि इस बात की याद दिलवाया करेंगे कि तुम पुनर्जीवित हुए हो।

अतः वह पीपल पुनः हरा हो गया। उसके पत्तों को गुरू जी की पावन यादगार के तौर पर श्रद्धालुजन वहाँ से लाना अपना सौभाग्य समझते हैं। इन पत्तों पर सफेद निशान भी विद्यमान रहते हैं। इस प्रकार से गुरू बाबा जी के निशान को कायम करके, श्री गुरू हरिगोविन्द महाराज जी पुनः वापिस आ गए।

'चलता'

गुरबाणी अर्थ भण्डार

सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 46)

सिरीरागु महला 1 घरु 5

अछल छलाई नह छलै;

नह घाउ कटारा करि सकै।

माया जो अछल है यह किसी के द्वारा भी छली नहीं जा सकती है तथा इसे कटारा = कटार आदि के द्वारा कोई घाव भी नहीं कर सकता है अथवा जो शोरभ ऋषि जैसे अछल कहलाते हैं, उन्हें भी इसने छल लिया है -

जिउ साहिबु राखै, तिउ रहै;

इस लोभ का जीउ टल पलै॥

नहीं, यह परमात्मा को छल नहीं सकती है क्योंकि यह तो उस प्रभु जी के अधीन है। जिउ = जिस प्रकार से साहिब = मालिक (प्रभु) राखै = रखता है यह माया तो उसके हुक्म में तिउ = उसी प्रकार से आज्ञा में रहै = रहती है। यह तो लोभी जीव ही है जो कि इस माया के अधीन रहता है। इस लोभी = लालची जीव का जीउ = मन वाहिगुरू जी की तरफ से पलै = पल-पल ही टलै = टलता रहता है।

बिन तेल; दीवा किउ जलै॥1॥रहाउ॥

हे भाई! प्रत्यक्ष तेल व बाती के बिना दीपक कैसे जल सकता है? भावार्थ नहीं जल सकता है, इसी प्रकार से ज्ञान रूपी दीपक भी तेल व बाती के बिना किउ = किस प्रकार से जलै = प्रकाश कर सकता है?

पोथी पुराण; कमाईऐ॥

पोथी = धार्मिक ग्रन्थ, पुराणों आदि के सिद्धान्त रूपी वचनों का कमाइऐ = अनुपालन रूपी तेल उस दीपक में डाले।

भउ वटी; इतु तनि पाईऐ॥

प्रभु जी की भउ = भय रूपी बाती को इतु = इस तनि = सूक्ष्म शरीर रूपी दीपक में डालो भावार्थ प्रत्येक समय परमात्मा के भय में जीव रहे कि वह हमारे अच्छे व बुरे सभी कर्मों को देखता है।

सचु बूझणु; आणि जलाईऐ॥2॥

गुरू साहिब की तरफ से जो सुच = सच्चे प्रभु के बारे में बूझणु = शिक्षा प्राप्त करनी है, वह आणि = लाकर जलाईऐ = अग्नि को प्रज्वलित करें। इस विधि से यह ज्ञान रूपी दीपक जग जाएगा और अन्धकार रूपी अज्ञान मिट जाएगा।

इहु तेलु; दीवा इउ जलै॥

इस प्रकार से धार्मिक ग्रन्थों व पुराणों आदि के सिद्धान्तों रूपी वचनों को कमाने रूपी तेल तथा भय रूपी बाती द्वारा ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित होता है।

करि चानणु; साहिब तउ मिलै॥1॥ रहाउ॥

हे भाई! इस प्रकार से अपने हृदय अथवा अन्तःकरण में ज्ञान रूपी दीपक का चानणु = प्रकाश कर तउ = तो फिर साहिब = मालिक मिलेगा, जो कि सारे खण्डों व ब्रहांडों के प्रकाश के रूप में अन्दर ही निवास करता है।

इतु तनि; लागै बाणीआ॥

हे भाई! इतु = इस तनि = शरीर का हिसाब-किताब करने के लिए प्रत्येक समय यमराज रूपी बाणीआ = बनिया लागै = लगा हुआ है।

सुखु होवै; सेव कमाणीआ॥

गुरू की सेवा करने से सुख की प्राप्ति होती है, जिस आत्मिक सुख को पाने के लिए सारी दुनिया तरसती रहती है।

सभ दुनीआँ; आवण जाणीआ॥3॥

हे भाई! यह सारा दृश्यमान संसार आने-जाने वाला भावार्थ जन्म लेने व मर जाने वाला है।

विचि दुनीआ; सेव कमाईऐ॥

जब तक दुनीआ = सृष्टि विचि = में शारीरिक तौर पर रहना है, तब तक गुरु व संगत की सेव = सेवा कमाइऐ = करनी ही चाहिए।

ता दरगह; बैसणु पाईऐ॥

तब ही दरगह = सचखण्ड में बैसणु = बैठने के लिए आसण पाईऐ = ठिकाना प्राप्त हो पाता है। अथवा प्रभु जी के द्वार पर तुरिया पद में उसका अधिष्ठान रूपी निवास प्राप्त हो पाता है।

कहु नानक; बाह लुडाईऐ

सतगुरू नानक देव जी फुरमान करते हैं कि तो फिर

बांह = भुजा को लुडाइअै = फैला कर चला जाता है, भावार्थ निश्चिंत होकर चला जाता है। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति करके वृत्ति रूपी बाँह को फैलाकर भावार्थ बेफिक्र होकर आत्मिक आनन्द में विचरण किया जाता है।

सिरीराग महला 3 घरु 1
ੴ सतिगुर प्रसादि
हउ सतिगुरु सेवी आपणा;
इक मनि इक चिति भाइ॥

हे भाई! हउ = हम तो अपने सतगुरू श्री गुरू नानक देव जी व श्री गुरू अंगद देव जी की ही सेवा व अर्चना करते हैं, भावार्थ उनका ही भजन करते हैं और एक चित्त या एकाग्र होकर या चिन्तन करने वाले होकर अथवा प्यारपूर्वक उनकी आराधना करते हैं।

सतिगुरु मन कामना तीरथु है;
जिसनो देइ बुझाइ॥

क्योंकि सतगुरू जी ही मन कामना = मनीकरणा तीर्थ हैं अथवा सतगुरू जी ही मन कामना = मन की कमानाएँ पूरी करने वाले तीर्थ हैं लेकिन सतगुरू जी की महिमा को वही जानता है जिसनो = जिसे कृपा करके प्रभु जी स्वयं ही बुझाई = समझा दें।

मन चिंदिआ वरु पावणा;
जो इछै सो फलु पाइ॥

सतगुरू जी के द्वारा मन चिंदिआ = मनवांछित वरु = वरदान पावणा = प्राप्त कर लिया जाता है तथा प्रेमी सिक्ख या सेवक जो भी इच्छा करते हैं वे सतगुरू जी द्वारा सो = वही फल पाइ = प्राप्त कर लेते हैं, भावार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर लेते हैं।

नाउ धिआईअै नाउ मंगीअै;
नामे सहजि समाइ॥1॥

हे भाई! सतगुरू जी द्वारा प्रभु जी का नाउ = नाम ही मांगना चाहिए और फिर उस नाम को ही धिआइअै = जपें भावार्थ श्रवण, मनन व चिन्तन करें जिस नामे = नाम को जपने के कारण प्रभु जी के सहज स्वरूप में अथवा सहज स्वभाव ही ज्ञान स्वरूप में समाइ = समा जाया जाता है।

मन मेरे, हरि रसु चाखु; तिख जाइ॥

अपने मन को किस प्रकार से समझाएँ कि हे मेरे मन! हरि = परमात्मा के साथ रस या प्रेम रस को चाख = चखो ताकि सारे रसों-कसों की तिख = तृष्णा चली जाइ = जाए।

जिनी गुरमुखि चाखिआ;
सहजे रहे समाइ॥1॥रहाउ॥

जिन्होंने गुरमुखि = मुखी गुरू जी द्वारा अमृतमयी नाम रस को चाखिआ = चखा है वह सहजे = सहज स्वभाव ही वाहिगुरू जी में समाइ = लीन रहै = रहते हैं भावार्थ मस्त होकर उसमें अभेद हो जाते हैं।

जिनी सतिगुर सेविआ;
तिनी पाइआ नामु निधानु॥

जिनी = जिन्होंने सतगुरू जी का सेविआ = सेवन व पूजन किया है तिनी = उन्होंने सतगुरू जी से नाम का निधानु = खजाना पाइआ = प्राप्त किया है।

अंतरि हरि रस रवि रहिआ;
चूका मनि अभिमानु॥

उनके हृदय के अंतरि = अंदरि हरि रसु = हरि जी के रस का आनन्द, जो रवि रहिआ = व्याप्त है, उसी वजह से उनके मनों में से अभिमानु = अहंकार चूका = दूर हो गया है।

हिरदै कमलु प्रगासिआ; लागा सहजि धिआनु॥

उनके हृदय रूपी कमल में ज्ञान प्रगासिआ = प्रकाशमान हुआ है तथा प्रभु जी के स्वरूप में उनका सहजि = सहज स्वभाव ही ध्यान लग गया है।

मनु निरमलु हरि रवि रहिआ;
पाइआ दरगहि मानु॥

उनका मन निरमलु = मैलु से रहित भावार्थ शुद्ध हो गया है तथा उन्होंने प्रभु जी को रवि रहिआ = सर्व व्यापक जाना है अथवा हरि जी का प्रत्येक समय उच्चारण करते रहते हैं तथा दरगाहि = परलोक अथवा सच्चखण्ड में उन्होंने मानु = इज्जत को प्राप्त किया है अथवा जो दर = अन्दर अन्तःकरण रूपी गहि = जगह है उसमें परमात्मा के मानु = मनन ज्ञान को प्राप्त कर लिया है।

सतिगुरु सेवनि आपणा; ते विरले संसारि॥

जो अपने सतगुरू जी की सेवा करते हैं इस प्रकार के पुरुष बहुत थोड़े ही हैं।

हउमै ममता मारि कै; हरि राखिआ उर धारि॥

उन्होंने हउमै = देह की हंगता तथा पदार्थों की ममता या पदार्थों के लोभ का त्याग करके प्रभु जी को अपने उर = हृदय में धारण कर लिया है।

हउ तिन कै बलिहारणै; जिना नामे लगा पिआरु॥

हउ = मैं भावार्थ तिन = उन प्रेमीजनों कै = के ऊपर बलिहार जाता हूँ जिनका हरि जी के नाम के साथ प्यार लगा हुआ है।

(शेष पृष्ठ 50 पर)

स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार
(Inspired Thoughts of Swami Ram)

डा. स्वामी राम जी

अनुवादक - शमशेर सिंह 'कोमल'

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 54)

जब तुम अपने आपको समझना शुरू कर देते हो, जब तुम स्वयं को शरीर से पृथक कर लेते हो, इन्द्रियों व मन से पृथक कर लेते हो, फिर तुम्हें पता लगता है कि तुम्हारा निजत्व एक अन्दर की लहर है और वह शाश्वतता या अमरता का पुत्र है। जो तुम्हारे लिए समस्या खड़ी करता है, वह है तुम्हारा मन क्योंकि तुम प्रत्येक समय स्वयं को विचारों के साथ जोड़ते रहते हो। तुम न तो इस बात को जानते हो और न ही सोचते हो कि इससे आगे भी कुछ हो सकता है यानि कि इससे गहरा अथवा कुछ ऊँचा भी हो सकता है। उदाहरण के तौर पर तुम सोचते हो कि मेरे पति ने कहा है कि मैं अच्छी नहीं हूँ इसलिए मैं अच्छी नहीं हूँ, मेरा पुत्र भी कहता है कि मैं अच्छी नहीं हूं, इसलिए मैं बुरी ही हूँ। तुमने ये सारी बाहर की बातें मान ली हैं, लेकिन तुमने इन बातों को समझने की कोशिश नहीं की, तुमने अपने अन्दर झांकने की कोशिश नहीं की। फलस्वरूप तुम स्वयं को कसूरवार समझ रहे हो और दुखी हो रहे हो, सबके साथ ऐसा ही होता है। तुम्हें किसी समय बैठकर सोचना चाहिए और इन सभी बातों को परमात्मा पर नहीं फेंकना चाहिए कि मुझे परमात्मा ने इसी प्रकार का बनाया है और मैं इसी प्रकार का हूँ। परमात्मा ने तो तुम्हें सुन्दर बनाया था लेकिन तुमने स्वयं को दुखी बना लिया है। तुम्हारे पास इतनी शक्ति है कि तुम अपने आपको प्रसन्न रख सकते हो। सुखी व दुखी होना तुम्हारे अपने हाथ में ही है। तुम इस बात को समझ कर अपनी शख्सियत को बदल सकते हो।

शरीर इन्द्रियाँ तथा मन से परे

तुम अपने व्यक्तित्व को किस प्रकार से बदल सकते हो? उसके लिए तुम अपने अन्दर के सत्य के प्रति चेतन रहो। वह सत्य जो कि न तो शरीर है, न इन्द्रियाँ हैं न श्वास है और न ही मन है। सत्य इन सबसे परे है। वह ज्योति, वह प्रकाश, वह जीवन, स्वयं को यह याद करवाओ कि मैं शरीर नहीं हूं, मैं इन्द्रियाँ नहीं हूँ, मैं नहीं हूँ। अतः मेरे लिए समस्या कौन उत्पन्न कर रहा है? ये इन्द्रियाँ, यह शरीर, ये विचार इनके अन्दर कोई ऐसी शक्ति नहीं है कि ये मेरे लिए समस्या उत्पन्न करें, मैं दुखी क्यों हूँ? मैं दुखी इसीलिए हूँ क्योंकि मैं शरीर के साथ जुड़ा हुआ हूँ। इन्द्रियों के साथ जुड़ा हुआ हूँ, मन के साथ जुड़ा हुआ हूँ। इन सबका भरपूर प्रयोग करो यह बात तो ठीक है लेकिन जब तुम इनके साथ पूरी तरह से जुड़ जाते हो, स्वयं को इनके साथ अभेद कर लेते हो तो फिर तुम दुखी हो जाते हो। व्यक्ति दुखी तभी होता है जबकि तुम्हारे पास कुछ है लेकिन तुम उसका प्रयोग करना नहीं जानते हो। यदि तुम इस बात के प्रति चेतन हो जाओगे तो फिर तुम वास्तविकता को समझ जाओगे कि तुम्हारे पास वह सब कुछ है जिसकी तुम्हें जरूरत है। आवश्यकता इस बात को सीखने की है कि उन वस्तुओं का प्रयोग कैसे किया जाए।

अतः तुम्हारे पास जो भी साधन हैं, तुम्हें उनका प्रयोग आना चाहिए। तुम्हें प्रत्येक समय सत्य के लिए चेतन रहना चाहिए। तुम्हें यह सोचना चाहिए कि मैं शरीर से परे हूँ, इन्द्रियों से परे हूँ, मन से परे हूँ, मुझे दुख कौन पहुँचा सकता है? यदि तुम यह कहो कि मुझे परमात्मा दुखी करता है तो फिर परमात्मा तो तुमसे भी अधिक दुखी होना चाहिए क्योंकि इस विधि से तो उसने सारा संसार ही दुखों वाला रच दिया है। यदि तुम यह कहते हो कि परमात्मा ने ही यह दुख व सन्ताप वाला संसार रच दिया है तो फिर परमात्मा को मानने व उसके ऊपर विश्वास रखने की ही क्या जरूरत है? लेकिन वास्तविकता इससे बहुत परे है। परमात्मा ने तो दुख संताप वाले संसार की रचना ही नहीं की बल्कि हम लोगों ने अपने आप ही इसे दुखों से भरा हुआ बना लिया है। हम अपने इन

दुखों व संतापों को दूर करके प्रसन्न हो सकते हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि सत्य के साथ जुड़े रहो, सत्य के प्रति सतर्क रहो क्योंकि सत्य शरीर, इन्द्रियों व मन से परे है। जब तुम अपना कार्य करते हो तो यह सोचकर करो कि संसार की सारी चीजें एक साधन हैं, इन्हें साधन के तौर पर ही प्रयोग में लाओ। इनका प्रयोग तो करो लेकिन यह समझ कर करो कि ये तुम्हारी नहीं हैं, ऐसा समझ कर तुम प्रसन्न रहोगे। दरअस्ल खुशी कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कि तुम प्राप्त नहीं कर सकते हो। खुशी को हासिल करना तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। हम खुशी को प्राप्त करने के लिए ही तो कार्य कर रहे हैं। हम खुशी के लिए ही तो जीते हैं और उसी की आशा में ही तो जीते रहेंगे।

तुम किसी अन्य संसार की बात करते हो, अनजानी चीजों की बातें करते हो, जिसका कोई लाभ नहीं है। तुम्हें इस प्रकार की बातें नहीं करनी चाहिए, जो कुछ भी धरातल की बात है, उसे समझो और उसे जानो। तुम संसार की चीजों से सन्तुष्ट नहीं हो। संसार का यही एक तरीका है कि यहाँ पर कुछ भी अटल नहीं है, शाश्वत नहीं है। यहाँ तो सब कुछ परिवर्तनशील है, सब कुछ बदलता रहता है, सब कुछ खत्म होता रहता है। इस बात को हमेशा मान कर चलो और इस बात को मान कर ही संसार में रहो। तुम जो कुछ जानते ही नहीं हो उसके बारे में बात मत करो। यह मत सोचो कि अनजाना व्यक्ति आकर तुम्हें जागृत करेगा या खुशियाँ प्रदान करेगा। स्वयं को खुश करो, अपने अन्दर को जानो, अन्दर की रौशनी को जानो और अपनी आत्मा को पहचानो।

जो परमात्मा है, वह सर्व व्यापक है, सर्वज्ञ है, सर्व समर्थ है। यदि वह तुम्हारे अन्दर नहीं है तो फिर वह परमात्मा नहीं है। यदि वह सर्वज्ञ है, सर्वज्ञाता है, तो इसका तात्पर्य है कि परमात्मा का ज्ञान तुम्हारे अन्दर है। यदि वह सर्व समर्थ है तो फिर वह पूरी शानो-शौकत के साथ तुम्हारे अन्दर विद्यमान है। यह बात अलग है कि तुम उसके बारे में जानते ही नहीं हो। इस न जानने का मुख्य कारण यह है कि तुम तो शरीर में ही उलझे पड़े हो जो कि नाशवान है लेकिन वह भी कुछ है जो कि अजर है, अमर है, शरीर, मन व इन्द्रियों से परे है। वह प्रकाश है, एक जलती हुई लौ है, अनन्त है, तुम्हारे अन्दर है, अजर है, अमर है और वही परमात्मा है और वही तुम्हारे अन्दर है।

याद रखो कि तुम इतने दुखी नहीं हो, इतने सन्ताप में नहीं हो, जितना कि तुम स्वयं को समझते हो, तुम परमात्मा हो। इस सत्य को प्रत्येक समय अपने अन्दर बसाओ और इसके कारण तुम मोह से बचे रहोगे। यह जान लेने से तुम शरीर, मन व इन्द्रियों की पकड़ से दूर रहोगे। स्वयं को याद करवाते रहो कि शरीर, मन और इन्द्रियाँ मेरी हैं, लेकिन वह मैं नहीं हूँ। मैं वह आन्तरिक ज्योति हूँ जो कि नाशवान नहीं है और अजर व अमर है। यह ज्ञान सदैव ही तुम्हारे अन्दर बसता रहना चाहिए।

अतः तुम संसार में किस प्रकार से रहते हो? तुम्हारा अन्दर शान्त किस प्रकार से रहता है? तुम खुश किस प्रकार से रहते हो? इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए तुम अपने बाह्य व आन्तरिक संसार में एक सेतु बनाओ और अपने आन्तरिक सत्य के साथ जुड़े रहो तथा अपनी सोच, कथनी व करनी को करते रहो।

भावनाएं तथा उनका सकारात्मक प्रयोग

आज तक मानवता ने तीन स्तरों पर समझा है और ये तीन स्तर हैं - शक्ति, मन तथा भौतिक तत्व। इन तीनों पर ही बहुत अधिक खोज हुई है। मनोभावों की शक्ति पर बहुत ही कम कार्य हुआ है। मनोभाव क्या हैं? ये कहाँ से उत्पन्न होते हैं? इन पर बहुत कम कार्य हुआ है। हमें प्रत्येक समय संसार से संवेदना मिलती रहती है। यह संवेदना बिल्कुल इस प्रकार से है जिस प्रकार से कि पानी के अन्दर कोई रोड़ा फेंका गया हो। ये मन के अन्दर फेंके गए रोड़े हैं। ये सारे सन्देश हमारी आँखों के माध्यम से हमारे दिमाग में जाते हैं, फिर चेतन मन में, अचेतन मन में और अन्त में याददाश्त में से चले जाते हैं, यानि कि मन की सतह में जाकर बैठ जाते हैं। जब भी हम चाहते हैं तो हम इन्हें याद कर सकते हैं। यह इसी प्रकार से चलता रहता है और इसी प्रकार से हम याद करते हैं। हमारी शिक्षा, हमारे अन्दर के उत्तम व कोमल पक्षों को छू नहीं सकी है, इसीलिए हमें स्वयं को सिखाना पड़ता है। ठीक शिक्षा हमें उसी समय प्राप्त होती है जबकि हम स्कूलों, कालेजों की शिक्षा को पूरी कर चुके होते हैं जो कि संसार में विचरण करने के लिए तो बहुत आवश्यक है लेकिन आन्तरिक अवस्था के लिए उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

'चलता'

(पृष्ठ 47 का शेष)

सेई सुखीऐ चहु जुगी; जिना नामु अखुटु अपारु॥3॥

सेई = वे चहु जुगी = चारों युगों वाले संसार में सुखीऐ = सुखी हैं जिनको प्रभु जी के नाम का अपारु = असीम व अखुटु = कभी समाप्त न हो जाने वाला खजाना प्राप्त हुआ है।

गुर मिलिअै नामु पाईअै; चूकै मोह पिआस॥

हे भाई! सतगुरू जी को मिलिअै = मिलकर ही सच्चे नाम को पाईदै = प्राप्त किया जाता है, जिसके द्वारा शरीर का मोह तथा पदार्थों की प्यास = तृष्णा चूकै = समाप्त हो जाती है भावार्थ नाम सिमरन करके न तो शरीर व सगे सम्बन्धियों का मोह ही रहता है और न ही सांसारिक पदार्थों की तृष्णा ही रहती है।

हरि सेती मनु रवि रहिआ; घर ही माहि उदासु॥

उनका हरि = प्रभु जी के सेती = साथ प्रत्येक समय मनु = हृदय रवि = मिला रहिआ = रहता है भावार्थ नाम उच्चारण में जुड़ा रहता है और वे घर भावार्थ गृहस्थ माहि = में रहते हुए भी उदासु = उपराम भावार्थ निर्लिप्त रहते हैं जैसे कि कमल का फूल पानी में निर्लिप्त रहता है।

जिना हरि का सादु आइआ; हउ तिन बलिहारै जासु॥

हे भाई! जिन्हें हरि = प्रभु जी के नाम का सादु = स्वाद आया है, हउ = मैं भावार्थ हम लोग तिन = उनके ऊपर से बलिहार = कुर्बान जाते हैं।

नानक नदरी पाईअै; सचु नामु गुणतासु॥4॥34॥

सतगुरू जी फुरमान करते हैं कि जो सचु = सच्चे परमेश्वर का नाम गुणतासु = गुणों का खजाना है उसे पूरे गुरू की कृपा नदरी = दृष्टि के द्वारा पाईअै = प्राप्त किया जाता है।

रतवाड़ा साहिब में महापुरुषों के प्रवचनों का कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार रतवाड़ा साहिब - (12.00 बजे से 4.00 बजे तक)

पूर्णमाशी - 23 नवम्बर, दिन शुक्रवार।

(रात्रि 07.00 बजे से 10.00 बजे तक)

संक्रान्ति - आश्विन, 16 नवम्बर, दिन शुक्रवार (प्रातः 5.30 बजे से 8.00 बजे तक)

अमृत संचार - वार्षिक समागम के दौरान 1 और 2 नवम्बर को दिन के 11 बजे होगा।

INTERNET MEDIA AND LIVE TELECAST

Website : www.ratwarasahib.in
Website : www.ratwarasahib.org
Instagram : RATWARA SAHIB (https://instagram.com/ratwara.sahib/)
You Tube : https://www.youtube.com/user/babalakhbirsingh
Facebook : https://www.facebook.com/ratwarasahib1
Twitter : https://mobile.twitter.com/ratwarasahib13
Live Audio Link 1 - https://www.awdio.com/Ratwara Sahib
Live Audio Link 2 - https://mixlr.com/ratwara-sahib
E-mail :- sratwarasahib.in@gmail.com

Contact - 9569455861, 9417912900, 9814612900

आवश्यक निवेदन

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल या दसवंद पंजाब एंड सिंध बैंक की किसी भी शाखा द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में भेजी जा सकती है।

भारत (INDIA)

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल भेजने के लिए -

VGRMCT / Atam Marg Magazine
S/B A/C No. 12861000000003 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

दसवंद भेजने के लिए -

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
SB A/C No. 12861100000005 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

विदेश (ABROAD)

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
Punjab National Bank SB A/C No. 0779000100179603
RTGS/IFSC Code - PUNB0077900 Branch Code - 077900

यदि चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेजनी हो तो ऊपरलिखित खातों अनुसार **Gurdwara Ishar Parkash Ratwara Sahib, P.O. Mullanpur Garibdas. Distt S.A.S. Nagar (Mohali) - 140901** पर भेजने की कृपा करें। यदि **Online** राशि भेजनी हो तो राशि की जानकारी देते समय अपना नाम व पूरा पता मोबाइल नं. +91-98889-10777 पर **SMS** भेजें जी।

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि यदि आपने अभी तक आत्म मार्ग मासिक पत्रिका की सदस्यता ग्रहण नहीं की है तो आप कृप्या अधोलिखित प्रारूप पत्र को भरकर सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें। यदि आप पहले से ही सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं, तो पुनर्नवीनीकरण हेतु इस प्रारूप पत्र के साथ आवश्यक चैक/ड्राफ्ट "VGRMCT/ATAM MARG MAGAZINE" के नाम पर प्रेषित करने की कृपा करें।

Subscription form ✓ ☐ नई सदस्यता ☐ पुनर्नवीनीकरण ☐ आजीवन सदस्यता

within India

Subscription Period	By Ordinary Post/Cheque	By Registered Post/Cheque
1 Year	Rs. 300/320	
3 Year	Rs. 750/770	
5 Year	Rs. 1200/1220	
Life	Rs 3000/3020	

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 $
Europ	50 Euro	500 Euro
Australia	80 Aus $	800 Aus $

जनवरी ☐ फरवरी ☐ मार्च ☐ अप्रैल ☐ मई ☐ जून ☐ जुलाई ☐ अगस्त ☐ सितम्बर ☐ अक्तूबर ☐ नवम्बर ☐ दिसम्बर ☐

नाम/Name पता/Address.....

.....

.....Pin Code..... Phone ..... E-mail :.....

सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल, रतवाड़ा साहिब

समय - सुबह 9.30 बजे से 2.00 बजे तक (रविवार से शुक्रवार)

डाक्टरों का समय - सुबह 10.00 बजे से 12.00 बजे तक

दूरभाष नं. 98786-95178, 92176-93845

डा. का नाम	विशेषज्ञ	दिन
1. डा. जसबीर कौर	जनरल मैडिसन	सोमवार
2. डा. गुरिंदर कौर कंग	एम. डी. (गाइनी)	सोमवार
3. डा. कुलदीप सिंह कंग	एम. डी. (आँखों के विशेषज्ञ)	सोमवार
4. डा. हरबंस सिंह	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	मंगलवार
5. डा. तेजिंदर सिंह	जनरल मैडिसन	मंगलवार
6. जे.पी.आई. अस्पताल मोहाली के डाक्टर	आँखों के विशेषज्ञ	मंगलवार
7. डा. जतिन्दर सिंह तथा डा. कोमलप्रीत कौर	दाँतों के विशेषज्ञ	मंगलवार
8. श्री माइकल जी	एक्स-रे विशेषज्ञ	मंगलवार तथा वीरवार
9. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	बुद्धवार
10. डा. जे. एस. गुजराल	जनरल मैडिसन/शिशु रोग विशेषज्ञ	बुद्धवार
11. डा. आर. एस. संधू	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	वीरवार
12. डा. संतोष अनेजा	जनरल मैडिसन	वीरवार
13. डा. एस. के. बांसल	जनरल मैडिसन	शुक्रवार
14. डा. बरिन्दर सिंह	जनरल मैडिसन तथा त्वचा रोग विशेषज्ञ, एअरो स्पेस मैडिसन	शुक्रवार
15. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	रविवार
16. डा. जिंदल	जनरल मैडिसन	रविवार
17. डा. गुरप्रीत कौर गिल	होम्योपैथिक	बुद्धवार
18. बीबी हरनीत कौर	फिजियोथरैपिस्ट	सोमवार तथा शुक्रवार

-: लैबोरेटरी टैस्ट तथा अन्य सुविधाएँ :-

1. खून टैस्ट, 2. सारे खून सैल काउंट टैस्ट 3. ब्लड शुगर टैस्ट, 4, किडनी टैस्ट, 5. लीवर टैस्ट, 6. लिपिड परोफाइल टैस्ट, 7. थायराइड टैस्ट, 8. हिमोग्लोबिन टैस्ट, 9. पेशाब टैस्ट, 10. स्टूल टैस्ट, 11. ई.सी.जी., 12. एक्स-रे (क्ष-किरण)

सारे लैबोरेटरी टैस्ट आधे शुल्क पर किये जाते हैं तथा मरीज को दवाई मुफ्त दी जाती है।

प्रत्येक रविवार को अस्पताल खुला रहेगा। समय 11.00 से 1.00 बजे तक। प्रत्येक शनिवार को अस्पताल बन्द रहेगा।

जरूरी सूचना

आँखों का नि:शुल्क आप्रेशन शिविर - 27 और 31 अक्टूबर

नि:शुल्क कैंसर चैकअप शिविर - 30 और 31 अक्टूबर

नि:शुल्क मैडिकल शिविर - 30-31 अक्टूबर तथा 1-2 नवम्बर

विश्व गुरमत रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

के मुख्य संस्थापक प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी द्वारा लिखित व प्रकाशित पुस्तकें

यह पुस्तकें श्री गुरू ग्रन्थ साहब जी के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल रूप में स्पष्ट करके जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इनकी विषय वस्तु के रूप में नाम, सेवा व स्मरण की विधियों को प्रस्तुत करते हुए जन साधारण की भाषा का अत्यन्त सरल, मार्मिक व हृदयस्पर्शी प्रयोग किया गया है। यह दुर्लभ पुस्तकें, प्रत्येक जिज्ञासु व साधक के लिए एक अमूल्य निधि के रूप में हैं। अध्यात्मिक सुख व शान्ति प्राप्त करने हेतु आप इन्हें प्राप्त करके स्वयं पढ़ें तथा अन्य श्रद्धालुजनों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। यह सभी पुस्तकें गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहब में आपकी सेवार्थ उपलब्ध हैं -

हिन्दी	
1. सुरति शबद मार्ग	70/-
2. किव कुड़ै तुटै पालि	35/-
3. बात अगंम की - सात भागों में	400/-
4. किव सचिआरा होइए - भाग पहला	35/-
5. किव सचिआरा होइए - भाग दूसरा	65/-
6. किव सचिआरा होइए - भाग तीसरा	100/-
7. होवै आनन्द घणा	30/-
8. बाबाणियाँ कहानियाँ	50/-
9. सुरतिआं उपजै चाउ	40/-
10. सर्व प्रिय गुरू गोबिंद सिंह जी	10/-
11. भक्त प्रहलाद	10/-
12. अमृत फुहार	10/-
13. अगम अगोचर का मार्ग	70/-
14. जपुजी साहिब सटीक	15/-
15. अमर ज्योतियाँ	15/-
16. अमर गाथा	100/-
17. वैशाखी	10/-
18. साजन चले प्यारिआ	10/-
19. अविनाशी ज्योति - भाग 1	90/-
20. रूहानी गुलदस्ता	70/-
21. चउथै पहरि सबाह कै	60/-

English Version	Price
1. Baisakhi	Rs. 5/-
2. How Rend The Veil of Untruth	Rs. 70/-
C. Discourses on the Beyond -1	Rs 50/-
4. Discourses on the Beyond -2	Rs. 50/-
5. Discourses on the Beyond -3	Rs. 50/-
6. Discourses on the Beyond -4	Rs. 60/-
7. Discourses on the Beyond -5	Rs. 60/-
8. The way to the imperceptible	Rs. 80/-
9. The Lights Immortal	Rs. 20/-
10. Transcendental Bliss	Rs. 70/-
11. How to Know Thy Real Self-(Vol-1)	Rs. 80/-
12. How to Know Thy Real Self-(Vol-2)	Rs. 80/-
13. How to Know Thy Real Self-(Vol-3)	Rs. 110/-
14. The Dawn of Khalsa Ideals	Rs. 10/-
15. A Glimpse of His Holiness - Baba ji	Rs. 5/-
16. Divine Word Contemplation Path	Rs. 150/-
17. The Story of Immortality	Rs. 260/-
18. Why not Contemplate the Lord	Rs. 200/-

ऊपरलिखित पुस्तकें आप जी मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा रतवाड़ा साहिब से मंगवा सकते हैं या ट्रस्ट के अकाउंट में राशि जमां करवा कर मोबाइल नं. 9417214391, 9592009106, 9417214379 पर सूचित कर सकते हैं। **Bank Name : Pb & Sind Bank, A/c Name. VGRMCT/Atam Marg Magazine, S/B A/C No. 12861000000003, RTGS/IFSC Code - PSIB0021286, Branch Code - C1286**

रतवाड़ा साहिब में दिनाँक 30-31 अक्टूबर तथा 1-2 नवम्बर 2018 को हो रहे समागम के लिए सवारियों के रूट

मोहाली - महाँपुरषों के निवास स्थान, कोठी नं: 781, 3बी1 से, जिंमेदार - भाई जरनैल सिंह (89687-22855)

क्षेत्र : धनास/तोगाँ - रूट - तोगाँ, धनौड़ाँ, मसतगड़, मिलख, सारंगपुर, धनास, ड्डूमाजरा जिंमेदार - सुखविंदर सिंह तोगाँ (99151-47405)

क्षेत्र : सूंक, पड़छ - रूट 1. - बगींडी, करौंदेवाल, काहीवाला, खोलमोला, कसौली, गूड़ा, माजरी जिंमेदार - हरजिंदर सिंह सरपंच सूंक (94177-78973), रविंदर सिंह सूंक (94642-91318) रूट 2. - सूंक, छोटी, बड़ी पड़छ, सिंगारी वाला, नाडा, खुड्डा लहोरा जिंमेदार - भाई हरजिंदर सिंह लाडी (95928-97195), भाई नाइब सिंह (98726-93380) रूट 3. - ककोराँ छोटी बड़ी, नया गांव, खुड्डा अली शेर, काँसल, कैंबवाला जिंमेदार - बलविंदर सिंह काँसल (95929-13093), बलदेव सिंह बाजवा (98151-08168)

क्षेत्र : बलाक माजरी - रूट 1. - सलेमपुर, बरसालपुर द्परीआँ, लुबाणगड़ह, खिदराबाद, झंडेमाजरा, मरहोली, गुनोमाजरा, सिआलवा माजरी, बलाक तों मुलाँपुर जिंमेदार - गुरजीत सिंह सलेमपुर (99153-35344) लाल सिंह गुनोमाजरा (94175-54759) रूट 2. - मीयाँपुर, अभीपुर, कुबाहेड़ी, संगतपुरा, माणकपुर सरीफ, बूथगढ से मुलाँपुर जिंमेदार - गुरनाम सिंह कुबाहेड़ी, जरनैल सिंह कुबाहेड़ी (98725-82851) रूट 3. - करतारपुर, कंसाला, ढकोराँ खुरद, ढकोराँ कलाँ, बजीदपुर, फाँटवाँ, नगलीयाँ, खैरपुर, सेखपुरा, फतिहगड़ जिंमेदार - दिलबाग सिंह ढकोराँ (95017-01045) मेवा सिंह ढकोराँ, रूट 4. - अभीपुर, दुलवाँ खदरी, पलणपुर, माजरा, होशियारपुर, तकीपुर, पड़ोल जिंमेदार - महिंदर सिंह अभीपुर (98762-17525)

5. इलाका : तिउड़ और खरड़ - रूट 1. - माता गुजरी नगर, संनी इनकलेव, झुंगीआँ रूट 2. - जंडपुर, ठसका, चंदो, मनाणा, झामपुर रूट 3. - ब्स सटैंड खरड़, भुखड़ी, रडिआला, भजौली जिंमेवार- भाई सुखविंदर सिंघ झुंगीआँ तथा दिलबाग सिंघ जंडपुर (98151-66686) रूट 4.- बजहेड़ी, पीर सुहाणा, सिंमलमाजरा, भागोमाजरा, खानपुर जिंमेवार - भाई जसविंदर सिंघ तथा भाई सतनाम सिंघ पीर सोहाणा रूट 5. - सकरूलाँपुर, घड्डूआँ, मामूपुर। जिंमेवार - भाई बलविंदर सिंघ बजहेड़ी रूट 6. - पंनूआँ, चोलटा खुरद, मलकपुर, बड़ा पिंड, मदनहेड़ी, बड़ाला रोड, खरड़ जिंमेवार - भाई नाजर सिंघ पंनूआँ रूट 7. - पोपनिआँ, धड़ाँककला, खुरद, चोलटाकलाँ जिंमेवार - भाई रणजीत सिंघ पोपनिआँ रूट 8. - बडाली, बडाला, नवाँ शहर, खरड़। जिंमेवार - भाई अवतार सिंघ बडाली रूट 9. - मौजपुर, भागोमाजरा, बोरेपुर, लखनौर। जिंमेवार - भाई रतन सिंघ मौजपुर। रूट 10. - बलौंगी, बलौंगी कलोनी, दाउ। जिंमेवार - भाई त्रिलोचन सिंघ रूट 11. - देसूमाजरा, फरतूलापुर, मुंडीखरड़ जिंमेवार-भाई हरभाग सिंघ देसूमाजरा। रूट 12. - रसनहेड़ी, मगर, तोलेमाजरा, खूनीमाजरा, संतेमाजरा जिंमेवार - भाई बाबू सिंघ मगर रूट 13 - बडमाजरा असथान, जुझार नगर, राएपुर, बहिलोलपुर,

झाँमपुर, तीड़ा

6. इलाका : गुरद्वारा बाउली साहिब (जीरकपुर) - रूट 1. - कुंडी (सैक: 10), रैली, अभैपुर, बुढणपुर, सैकटर 15, सैकटर 7, सकेतड़ी, माड़ी वाला टाउन जिंमेवार - भाई सरवण सिंघ ठेकेदार पंचकुला (198151-00644) जगमोहन सिंघ रैली (94177-69178) रूट 2. - नाभा साहिब, सिंघपुरा, भूडा, जीरकपुर, भबात जिंमेवार - हरदीप सिंघ सि्धू जीरकपुर (98557-07279), मनमोहन सिंघ (99888-08211) रूट 3. - गु. बाउली साहिब, ढकोली, नगला, सनौली जिंमेवार - जगदेव सिंघ ढकोला (99155-21425), सोहण सिंघ रंधावा जीरकपुर (95018-04205)

7. इलाका : डेरा ब्सी - रूट 1. - जाँडली, अंब छपा, जौला, जौली, मीआँपुर, दंदराला, माहीवाला, डेरा ब्सी तों रतवाड़ा साहिब जिंमेवार - सुरजीत सिंघ जाँडली (99140-03114), धरमपाल माहीवाला (99156-73720) रूट 2. - चड़िआला, अमराला, बरौली, कारकौर, सेखपुर, फतिहपुर, महिमदपुर, धनौनी, ईसापुर, जगाधरी वाइआ भाँखरपुर जिंमेवार - अमरीक सिंघ महिमदपुर (98725-51816), ज्गा सिंघ कारकौर (94175-78817) रूट 3. - बहोड़ा, बहोड़ी, इबराहीमपुर, परागपुर, जगाधरी, ईसापुर, भाँखरपुर जिंमेवार - जगदीस सिंघ इबराहीमपुर (98724-50551), सुरमुख सिंघ परागपुर (99140-75996) रूट 4. - डेराब्सी शहिर जिंमेवार - सरूप सिंघ डेराब्सी रूट 5. - हसनपुर, लेहली, द्पर, जनेतपुर, जवाहरपुर जिंमेवार - राजा सिंघ द्पर (98140-34381), गुरमेल सिंघ जवाहर पुर (98152-31323)

8. इलाका : राजपुरा - रूट 1. - धमोली, गुरद्वारा सिंघ सभा राजपुरा, गुरदुआरा जाप साहिब, इसलामपुर जिंमेवार - बहादर सिंघ (99886-88953) रूट 2. - पुराणा राजपुरा, गुरद्वारा दूधा धारी, गुरद्वारा बाबा चूहड़ सिंघ, गगन चौंक जिंमेवार - भरपूर सिंघ (94633-27041) रूट 3. - सैदखेड़ी, खराजपुर, गुरू नानक मुह्ला, गुरू अरजन देव कलोनी जिंमेवार - वलाइत सिंघ (94638-91719) रूट 4. - ढींडसा, गंडिआ खेड़ी, खानपुर, रेलू, खंडोली जिंमेवार - बलकार सिंघ ढींडसा - 98550-71427 रूट 5. - हरपालपुर, कुथाखेड़ी, खानपुर, भोगला जिंमेवार - बंत सिंघ भोगलाँ (88725-91575) रूट 6. - अलूणा, धरमगड़, चंदूआँ जिंमेवार - जिंमेवार - अमीर सिंघ (94175-73580) रूट 7. - भेडवाल, खानपुर, झूंगीआँ, उकसी सैणीआँ, पिलखणी जिंमेवार - साधू सिंघ (98557-86482)

9. इलाका : घनौर - रूट 1. - बलहेड़ी, सलेमपुर ज्टाँ, रूड़की, रूड़का, बघौरा, माजरी फकीराँ जिंमेवार - रणजीत सिंघ रूड़का (93171-30523), गुरमीत सिंघ रूड़का (90235-81296) रूट 2. - घनौर, महिदूदाँ, कामी कलाँ, पि्पल मंघौली, फरीदपुर ज्टाँ, धंदारसी, मरदाँपुर जिंमेवार - हरचंद सिंघ घनौर (94175-91649), अमरजीत सिंघ मरदाँपुर (98883-63021) रूट 3. - लाछड़ूकलाँ, चमारू, कामी खुरद, जंड मंघोली, उंटसर, राएपुर, बैलोपुर जिंमेवार - अमरीक सिंघ कामी खुरद (98143-24886), दारा सिंघ लाछड़ू (98149-60360) रूट 4. - तेजा, मोहड़ी, भानोखेड़ी, लखनौर साहिब, माजरी, रवालों, सौंडाँ, मटेड़ी जिंमेवार - गुरमीत सिंघ भड़ी (93158-66990), जतिंदर सिंघ बलाणा (098123-13901) रूट 5. - टिवाणा, सरहाला खुरद, सरहाला कलाँ, कपूरी, सोंटा, रामपुर, मारीआँ, लोह सिंबली जिंमेवार - सुबा सिंघ टिवाणा (98554-69282), हरमेस सिंघ सरपंच सरहाला खुरद (98557-78864) रूट 6. - झाड़ूआँ, कुरबानपुर, महिमाँ, भड़ी, सूलर, बुलाणा जिंमेवार - जसमेर सिंघ कुरबानपुर (97292-15833), गुरमीत सिंघ भड़ही (93158-66990) रूट 7. - कोटला, ब्ता, ब्ती, करनपुर, मलकपुर ज्टाँ, मंझौली, हरीपुर झूंगीआँ, कतलाहर, च्पड़ जिंमेवार - नसीब सिंघ झूंगीआँ

(95925-61804), बलवीर सिंघ करनपुर (94179-22972) **रूट 8.** – भ्टमाजरा, सेखूपुर, लोदीपुर, बहादरगड़ह, भटेड़ी, रसूलपुर जिंमेवार – हरबंस सिंघ भटमाजरा, लखविंदर सिंघ भटेड़ी (99153-83689)

10. इलाका : मोरिंडा – रूट 1. – सिकंदर पुर, नानोवाल, बडवाला, जंवंदे, भटेड़ी, रतनगड़, दातारपुर जिंमेवार – रजिंदर सिंघ जवंदा (99149-22374) हरनेक सिंघ दातारपुर (81461-51925) **रूट 2.** – बडवाली, साहपुर, ताजपुर, बहिबलपुर, स्खो माजरा, चलाकी, मोरिंडा जिंमेवार – रणधीर सिंघ बहिलबलपुर (92179-52077) **रूट 3.** – माजरा, कोटली, मानपुर, कजौली, डुमछेड़ी, मोरिंडा जिंमेवार – अजमेर सिंघ कोटली (95924-62737) गुरप्रीत सिंघ मानपुर **रूट 4.** – बड़ा समाणा, ऐइंद, छोटा समाणा, मुंडीआँ, ढोलणमाजरा जिंमेवार – सुखविंदर सिंघ मुंडीआँ (99140-07236) जसविंदर सिंघ ढोलणमाजरा (94172-31983) **रूट 5.** – फतिहपुर, अरनौली, कोटला, बंगीआँ, सहेड़ी जिंमेवार – गुरमीत सिंघ बंगीआँ (94172-30673) रणधीर सिंघ अरनौली **रूट 6.** – काईनौर, गोपालपुर, नथलपुर, ढंगराली, रंगीआँ जिंमेवार – रणधीर सिंघ अरनौली **रूट 7.** – लठेड़ी, रामगड़, च्कलाँ, सराणा, कलाराँ, काँजला जिंमेवार – सुखविंदर सिंघ मुंडीआँ (94175-87877) मलकीत सिंघ च्कलाँ (97819-83761)

11. इलाका : चमकौर साहिब – रूट 1. – मनैली, र्तों, संधूआँ, सैदपुर, भुरड़े, प्पिल माजरा जिंमेवार – जसवंत सिंघ संधूआँ (98150-88236), केसर सिंघ संधूआँ **रूट 2.** – चमकौर साहिब, सूलोमाजरा, मुंडीआँ, डहिर, ग्गो गंधराव, दुगरी, गधराम, तालापुर, कोटली, साँतपुर, बूरमाजरा, मोरिंडा जिंमेवार – कंवलजीत सिंघ (84372-04845), जगीर सिंघ **रूट 3.** – बहिरामपुर बेट, ड्ला, खोखराँ, बजीदपुर, म्कोवाल, बेला जिंमेवार – जोगिंदर सिंघ, (94655-30155) सोहन सिंघ ड्ला (98781-51896) **रूट 4.** – फिरोजपुर, मुजाफत, भलिआण, भोजेमाजरा, भैरोंमाजरा, चमकौर साहिब जिंमेवार – मोहन सिंघ चमकौर साहिब – 98159-13790 **रूट 5.** – मकड़ौना कलाँ, मकड़ौना खुरद, सलेमपुर, रोलू माजरा, प्पिल माजरा, समरौली, रसूलपुर, मोरिंडा जिंमेवार – सुखविंदर सिंघ सलेमपुर (89684-61232) तरनजीत सिंघ सलेमपुर **रूट 6.** – बादेसाँ खुरद, बादेसाँ कलाँ, हवारा कलाँ, चूहड़माजरा, बरसालपुर, रूड़की हीराँ जिंमेवार – उजागर सिंघ, बलवीर सिंघ (94633-38107) **रूट 7.** – मकाराँपुर, खानपुर,, हाफिजाबाद, फतिहपुर, चमकौर साहिब जिंमेवार – गुरमुख सिंघ (98152-51856) केसर सिंघ, महिंदर सिंघ

12. इलाका : कुराली – रूट 1. – नथलपुर, ढंगराली, पपराली, बमनाड़ा, भागोवाल, ककराली, धिआनपुरा। जिंमेवार – भाई सम्ितर सिंघ पपराली (99144-72499), **रूट 2.**–भागोवाल, बंन माजरा, सोतल बाबा, झरहेड़ी, अंधरेड़ा, सिंबल, चटोली, निहोलका, चिंतगड़। जिंमेवार – भाई बलजिंदर सिंघ सिंबल (88724-85563) **रूट 3.** – हसनपुर, बरौली, कालेवाल, सिंघपुरा, कुराली जिंमेवार– करम सिंघ बरौली (97817-30554, 89685-26212)

13. इलाका : रोपड़ और परखाली – रूट 1.– कमालपुर, मनसूहा, माहलाँ झूलीआँ, भाउवाल, बूढा भोरा, खैराबाद, फूल खुरद, सामपुरा, छोटी हवेली, बेला चौंक, हवेली कलाँ, सरकारी कालज, नवाँ ब्स अ्डा, पुराणा ब्स अ्डा, गु: श्री भ्ठा साहिब चौंक, पावर कलौनी जिंमेवार – भाई जगजीत सिंघ कमालपुर (9478816530) गुरदीप सिंघ शामपुरा (94651-69982) **रूट 2.** – घनौली, थरमल पलाँट, नूंहो, रतनपुरा, लोहगड़ फिडे, गुनोमाजरा, लोदीमाजरा, मदोमाजरा, पतिआला, मिआणी,

बहादरपुर, चंदपुर, डकाला, आलमपुर, क्टली, खुआसपुर, पावर कलौनी, रंगीलपुर, व्डी गंधो, राजेमाजरा अते मीआँपुर जिंमेवार-भाई भुपिंदर सिंघ घनौली (94174-65785) रूट 3. - ढाँगाँ, बिको, घनौला, थली कलाँ, सिंघपुरा, थलीखुरद, अहिमदपुर, मलकपुर, खुआसपुरा, लाडल, हुसैनपुर, नानकपुरा, पावर कलौनी, पपराला, रैलो जिंमेवार- भाई संत सिंघ ढाँगा (94184-95417) भाई पूरन सिंघ हुसैनपुर (94170-92492) रूट 4. - कोटला निहंग, द्परीआँ, गरेवाल, माजरी ज्टाँ, मगरोड़, अकबरपुर, बागबाली, फतहिपुर, भगालाँ, पुरखाली, ककौट, बिंदरख, खिजराबाद तथा बलाक जिंमेवार - भाई बलवीर सिंघ कोटला निहंग (01881-226554, 99147-26554) भाई गुरदास सिंघ अते भाई सकंदर सिंघ फतहिपुर भंगाला (94171-57781) भाई पाल सिंघ फतहिपुरा भंगाला (94780-45864) रूट 5 - गोबिंदपुरा, बंदे माहलाँ, पथरेड़ीआँ, सलौरा, खाबड़े, रेही माजरा, भगवंतपुरा जिंमेवार - भाई बलबीर सिंघ गोबिंदपुरा-(81950-41372) रूट 6.- झ्लीआँ, बालसंडा, बूरमाजरा, सालापुर, दुलची माजरा, रोड़माजरा, सीहों माजरा जिंमेवार - भाई जसवंत सिंघ गोबिंदपुरा (99143-06431) भाई रणजीत सिंघ पथरेड़ीआँ-75892-07290 रूट 7 - हिरदापुर खेड़ी, हरीपुर, बामणवाल, बरदार, हरनामपुरा, मीआँपुर, चंगर जिंमेवार - हाकम सिंघ बामणवाल (95015-19946) भाई गुरमुख सिंघ बरदार (75083-59725) रूट 8. - छोटी गंधो, लखमीपुर, झ्लीआँ, माणकमाजरा, ठोणा, पड़ी, मादपुर, सैंफलपुर, रामगड़ द्परीआँ, संतोखगड़ द्परीआँ, सराड़ी, भ्दल जिंमेवार - भाई गुरबचन सिंघ सैंफलपुर (94783-84471) भाई गुरदेव सिंघ छोटी गंधो - (98557-08635) रूट 9 - बुरजवाल, डेकवाला, मंदवाड़ा, काकरो, किशनपुरा, भूपनगर, अकालगड़, खिजराबाद जिंमेवार - भाई बखशीस सिंघ काकरो (98721-15995) रूट 10. - काकरो, चैड़ीआ, सिंघ, खाबड़िआँ, च्कलाँ, लोहारी, बंन माजरा, झंजेड़ी जिंमेवार - भाई रजिंदर सिंघ काँकरो (98155-94315) रूट 11. आसरों, प्रेमनगर, रैल माजरा, माजरा जटाँ जिंमेवार - भाई हरभजन सिंघ, आसरो (78370-89858) भाई काला सिंघ प्रेम नगर - 78376-91955) रूट 12 - पनिआली कलाँ, पनिआली खुरद, जमीतगड़, भले फतिहपुर (ताजोवाल), रैपुर, नंगल जिंमेवार - भाई अमरीक सिंघ फतिहपुर (ताजोवाल) (94648-21423) भाई रणजीत सिंघ पिंड नंगल (98766-64976)

14. इलाका : खमाणो/रामगड़ - रूट 1. - चंडिआला, राएपुर राईआँ, नानोवाल कलाँ, नानोवाल खुरद, ककराला, मनसूरपुर, अमरगड़, मनैला, धनोला, समसपुर, सिंघाँ, रामगड़, लखनपुर, खमाणों (तिंने) जिंमेवार - भाई गुरप्रीत सिंघ मनैला 98782-40210 रूट 2. - सुहावी, बुरज, लुहार माजरा, उचा पिंड, पनैचाँ, पोहलोमाजरा जिंमेवार - भाई कुलविंदर सिंघ, लोहार माजरा (94172-64725)

15. इलाका : दुआबा - रूट 1. - दुसाँझ, सरहाल मंडी, सरहाल काजीआँ, खानपुर, रसूलपुर, बंगाँ जिंमेवार - भाई जगजीत सिंघ च्क रामू (88725-37407) गिआनी सुखविंदर सिंघ अनमोल (94170-78137) भाई किपाल सिंघ सरहाल मंडी (98150-62173) रणजीत कौर सरहाल काजीआँ - 94784-78013 रूट 2. - बहिराम, फराला, सूंढ, संधवाँ, च्करामू जिंमेवार - अैस.डी.ओ. अजैब सिंघ (01823-270300)

16. इलाका : अबरावाँ/सनेटा - रूट - अबरावाँ, तसौली, ढेलपुर, गडावाँ, सनेटा- जिंमेवार - भाई जोगिंदर सिंघ तसौली (98555-01571),

17. इलाका : धमोट - रूट 1. - जिमेवार जथेदार अमर सिंघ, धमोट, रूट - 2. - मदनीपुरा,

सिहौड़ा, अलूणा पूला, मिआना। रूट - 3. निजामपुर, भाडेवाल, पाइल, नवाँ पिंड, बीजा जिंमेवार - भाई हरदीप सिंघ

18. इलाका : बलाचौर - रूट 1. - औलीआपुर, कंगणा बेट, मलकपुर, जूटपुर, धैंगड़पुर, सुधा माजरा, सूजोवाल, निआणबेट, जानीवाल, लालपुर, दूपरीआँ, गादड़ीआँ, आकलिआवाँ, रूट 2. - कुलेवाल, महितपुर, गड़ी, राएपुर, घमौर, सिआणा, बलाचौर, मजारी, सिबल माजरा, हुसैनपुर, गरलेढाहा, रूकड़ा ढाहा, बछोड़ी, कोलगड़ रूट 3. - मुजफरपुर, रकासन, चलाण, महदीपुर, ताजोवाल, चूक, चूकली, मझूट, मीरपुर जूटाँ, बीरोवाल जिंमेवार - हरनाम सिंघ बलाचौर (94637-40419)

19. होर वूख-वूख शहिराँ तथा इलाकिआँ दे संपरक नंबर : - यू.पी. अते उतराखंड - खूबीआ नंगल असथान (96394-41313), भाई प्रीतम सिंघ, बिलासपुर (098371-31140) सालापुर असथान (99278-75036) हरभजन सिंघ, किछा, (98373-16924) जसवंत सिंघ पलीआ (94154-29624) बावा सिंघ मैगलगंज (97945-06751) बावा सिंघ पंछी फारम, (99184-46336) हरपाल सिंघ पंछी फारम (91987-15748) राजसथान - बाबा अमरीक सिंघ बूंदी राजसथान 99833-97841 हरिआणा - रणजीत सिंघ लाडवा (080531-000930) हरपाल सिंघ पाली अंबाला (92157-45482), अंम्रितपाल सिंघ बजाज यमुना नगर - (94181-16414) पाउंटा साहिब - बलविंदर सिंघ पाउंटा साहिब (97361-00043) माझा - प्रगट सिंघ पूटी - (94637-29915) बलजीत सिंघ भिखीविंड (98151-25093) प्रमजीत सिंघ, खडूर साहिब - (94652-52638) हरजिंदर सिंघ फौजी बटाला - (99157-308077) बनूड़ - बाबा गुरदेव सिंघ 98151-20373, सुखजीत सिंघ (98154-62204) लुधिआणा - बाग सिंघ (98143-21418) गुरबाज सिंघ (98142-68041) संगरूर - भाई सुखजीत सिंघ छाहड़ (98729-18506) पटिआला - सूचा सिंघ (97801-30180, 99151-66501) माछीवाड़ा साहिब - गुरनाम सिंघ (94645-00600) दिली - प्रमजीत सिंघ, (98730-11265) सतपाल सिंघ (98104-30517), जगजीत सिंघ (92664-03650), बलविंदर सिंघ (98991-05205) स्री अनंदपुर साहिब - हरभजन सिंघ, नूरपुर बेदी (98145-18602) राम सिंघ, नंगल (94178-76243) फरीदकोट - भाई मकखन सिंघ 98153-80902, मुंबई - गुरदेव सिंघ बाँसल, (98678-77056)

आवश्यक निवेदन

* समस्त जिम्मेदार प्रेमीजनों को निवेदन है कि वे अपने-अपने नगरों में गुरमति समागम से तीन दिन पहले घोषणा/सूचित करवाएं तथा संगत को नगर या गाँव में सवारी आने के बारे में बतलाया जाए। सम्बन्धित रूट का जिम्मेदार प्रेमीपुरुष दूध की सम्भाल हेतु एक ड्रम रख ले। * सम्बन्धित रूट का जिम्मेदार प्रेमी समागम वाले स्थान पर संगत को लाने के बाद ट्रान्सपोर्ट टेंट में प्रबन्धकों को रिपोर्ट करने की कृपा करे। * जिम्मेदार प्रेमी समागम से पहले सवारियों के लिए आवश्यक बैनर, प्रबन्धकों से प्राप्त कर ले। * क्षेत्रीय जिम्मेदार प्रेमीजन प्रबन्धकों के साथ मिलकर अपने क्षेत्र में गणमान्य व्यक्तियों को कार्ड (निमन्त्रण पत्र) देने की सेवा करें तथा 20 अक्टूबर के बाद किसी सवारी के द्वारा सूचित करने का प्रबन्ध करें।

समागम के दौरान सवारी सम्बन्धी किसी भी प्रकार की समस्या आने पर निम्नलिखित नम्बरों पर सम्पर्क करें -

भाई रजिन्दर सिंह प्रबन्धक - समागम ट्रान्सपोर्ट दफ्तर रतवाड़ा साहिब -

फोन नं. 98155-94315, 94635-86024

एक अविस्मरणीय याद

सन्त महाराज जी अमृतमयी कीर्तन द्वारा
संगत को कृतार्थ करते हुए

साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के गुरुगद्दी दिवस
श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी
सम्माननीया माता रणजीत कौर जी की
पावन स्मृति में
महान गुरमति रूहानी समागम
30-31 अक्टूबर तथा 1-2 नवम्बर 2018
रतवाड़ा साहिब